यों लगा हम अपने पागड़ मन को इस तरह समझाते हैं । मान लो ५० लाख मनुष्यों के पास ३) वाली घड़ी है जिस्का दाम डेढ़ करोड़ हुआ १० लाख के पास १०) वाली घड़ी है जिस्की क़ीमत एक करोड़ हुई । २० लाख के पास १५) की घड़ी है जिस्का मूल्य ३ करोड़ हुआ २५ लाख जेन्टिलमेनों के पास २५) वाली घड़ी है जिस्की न्यौछावर कुछ कम चार करोड़ हुई सब मिल १० करोड़ के लगभग होता है । यह रावण की चिता कब से जल रही है और कब तक जलैगी इस धुआं धार का हिसाब्ब हमारी गिनती के बाहर है हां इतना भविष्य कह सक्ते हैं कि आतश परस्तों की आग सी यह अब बुझने वाली नहीं वरन दिन प्रतिदिन अधिक २ दहकती जायगी । कुछ दिन उपरान्त इतने रुपयों की घड़ियों से यदि डेढ़ पाव बाजरी पकाने को तवा बनाओ तो उस काम की ये बिगड़ी घड़ियां नहीं रहतीं ॥

मे०—महाराज तो क्या घड़ी नहीं रखनी चाहिये ॥

वि०—अवश्य रखनी चाहिये पर किनको जो पुरुषार्थी हैं घड़ी की की कदर जानते हैं एक मिनट खो देना जिनको प्रण खोना है जिनके दिन भर के काम घड़ी की सुई से बंधे हैं क्या मजाल जो उस्में ज़रा भी फर्क पड़े । झूठ मानते हो तो रेल में जाकर देखो समय से एक मिनट भी चूक हो तो बादशाह भी हाथ मलता रह जाय—तारघरों में जाय देखो तो समय की आराधना—कल के कारख़ानों में देखो तो वहीं समय की भक्ति—कहां तक कहें जिस पुरुषार्थी विद्वान को देखो उसही ही को समय की उपासना में लिप्त पाओगे जिस भक्ति भाव से मुग्ध हो लक्ष्मी हाथ बांधे आठ पहर अपना नृत्य दिखाती हैं ऐसे लोग रुपयों की थैलियों को ठोकर से लुढ़काते हैं । लक्ष्मी कहती है मेरे प्रिय बाहन इसे भरपूर समझे रहो पुरुषार्थियों की और समय के पूर्ण भक्तों की मैं दासी हूं उनका चरण छोड़ मैं कहां जा सक्ती हूं । घड़ी ऐसोंही के लिये बनी है

न कि उनके लिये जिनका न सोने का समय है न जागने का उठना बैठना चलना फिरना खाना पीना कोई भी काम जिनका समय से सम्बन्ध नहीं रखता। इस मूर्खता जनित दरिद्रता की मार से जब तुम इच्छा करते हो कि लक्ष्मी तुम्हारा घर छोड़ कहीं न जाय और इस आशा से दिवाली के दिनों में घर पुतवाते हो फल फूल मिठाई पकवान आदि समर्पण कर बड़ी भक्ति से लक्ष्मी को पूजते हो तब तुम्हारी यह बालक्रीड़ा और मूढ़ भक्ति को देख लक्ष्मी कहती हैं कि अरे कर्म चाण्डालों तुम्हारा तो मैं मुख न देखोगी मेरे मुख्य सहायक समय से तो तुम शत्रुता कर रहे हो तब मैं कैसे तुम्हारा मुख देख सक्ती हूं। रुपये की पूजा मात्र से मैं कभी प्रसन्न न हूंगी जिस रुपये को तुम पूजते हो वह समय के सद् व्यय का फल है। फूटे तुम्हारे करम जो बाल क्रीड़ा से भाग्य जगाना चाहते हो। भाग्योदय चाहते हो तो समय के भक्तों से जा मिलो पुरुषार्थ करो आपस के बैर भाव से मुख मोड़ कंपनियां स्थापित करो देश देशान्तरों में जा बड़े २ बाणिज्य करो तो मैं तुम से भी प्रसन्न हो कभी तुम्हें न छोड़ूं। सुना बाबू भेड़ियाधसान जी आया कुछ मन में समय की बे परवाही इस बिनाश का भी कभी अन्त करोगे कि ऐसे ही सत्यानाश होते रहोगे॥

स्वामी विश्वेश्वरानन्द।

॥ बीज जो बोया जाय निष्फल नहीं होता ॥

कुछ दिन हुये यहां के स्कूल तथा कालेजों के कुछ विद्यार्थियों ने सनातन धर्म जिज्ञासा के लिये इस नगर में एक सभा स्थापित की थी महीने में दो बार सब लोग एकत्रित होते थे और पण्डित जैगोविन्द को सभापति कर उन से धर्म का तत्व सुनते थे बहुत दिनों तक नियम से इस सभा का अधिवेशन होता रहा बीच में प्लेग के उपद्रव से सभा छिन्न भिन्न हो गई किन्तु पारसाल चौबे द्वारिका प्रसाद शर्मा के प्रयत्न से

जो इस सभा के सेक्रटरी हैं इसका अधिवेशन तीन दिन तक बहुत उत्तम हुआ और पण्डितदीन दयालु के सरस हृदयग्राही वक्तृता से दूसरा से दूसरा वार्षिक अधिवेशन बड़ी धूम धाम के साथ किया गया ५ दिन तक यह समारोह बड़ी उत्तम रीति पर किया गया बरावांधिपति ठाकुर महाबीर प्रसाद नारायण सिंह तथा राज्य वैद्य पण्डित जगन्नाथ शर्म्मा के प्रयत्न से पण्डाल रचना भी बहुत अद्भुत की गई। पण्डित राम मिश्र शास्त्री जी सभापति थे। पण्डित दीन दयालु शर्मा पण्डित माधो प्रसाद मिश्र तथा अन्यान्य महोदय गण दूर २ से बहुत से डेलि-गेट होकर आये थे। यहां के लोगों को ५ दिन बड़े उत्सव के बीते इधर पण्डित दीन दयालु भिन्न २ संप्रदायों के अनुकूल कर्म के प्रतिपादन के व्याख्यान से श्रोताओं को हर्षित करते थे उधर स्वामी राम तीर्थ भेद बुद्धि को हटाते असली वेदान्त को काम में लाने के लिये कर्म के निराकरण से लोगों को प्रोत्साहित करते थे पंडाल के भीतर मानो दो बीर क़िले में बैठे हुये दांव पेच खेल रहे थे। सनातन धर्म क्या है इसके उसूल क्या हैं इसका बहुत अच्छा प्रतिपादन इन ५ दिन के व्याख्यानों में किया गया। सनातन धर्म के पुनरुज्जीवन से फायदा उठाने वाले ब्राह्मण 'जो सनातन धर्मावलम्बियों से पुजवाते हैं यदि अब भी चेतैं और आत्म त्याग के उसूल पर लालच और लोभ को कम कर अपने पूर्वज ऋषियों का खोया हुआ धन स्वाध्याय और तपस्या पर आरूढ़ हो जांय तो अवश्यमेव इन व्याख्यानों की सफलता कही जा सकी है? साथ ही स्वामी राम तीर्थ का यह कहना कि अब कलियुग का अन्त आ लगा है सच माना जा सक्ता है। नहीं तो हम यही कहैंगे जैसे और बहुत से खेल तमाशे थियेटर आदि हुआ करते हैं वैसाही ५ दिन का यह भी एक मेला था। अन्त में इसका धन्यवाद राघवेन्द्र के सम्पादक चौबे द्वारिका प्रसाद को है जो इसकी बुनियाद डालने वाले हैं और बरावांधिपति को है जिनका बहुत सा धन इस सत्कार्य के अनुष्ठान में लगाया गया है॥

प्राचीन ग्रन्थकार।

प्रती हारेन्दुराज।

भट्ट वामनाचार्य झलकीकर ने जो काव्य प्रकाश पर बाल बोधिनी नामक टीका लिखा हैं उसकी प्रस्तावना में उक्त महाशय ने संक्षेप से अलङ्कार शास्त्र के इतिहास वर्णन करने की चेष्टा की है! जहां पर आलङ्कारिक पंडितों की सूची लिखी है वहां पर प्रतीहारेन्दुराज का नाम दिया है! इनके गुरू का नाम मुकुलथा। प्रतीहारेन्दुराज ने लघुवृत्ति बनाई है उसे वामना चार्य ने देखा है। उस में दण्डी, बामन आदि के नाम मिलते हैं और अमरू शतक के कई एक श्लोक उठाये गये हैं। ग्रन्थ समाप्त में प्रती हारेन्दुराज यों लिखते हैं॥

"महा श्री प्रतीहारेन्दुराज विरचितायामुद्भटालङ्कार सार संग्रह लघुवृत्तौ षष्ठोऽध्यायः। मीमांसासार मेघात्पद जलधि विधोस्तर्कमाणिक्य कोशात् साहित्य श्री मुरारे र्बुधकुसुममधोः सौरिपादाब्जभृङ्गात्। श्रुत्वा सौजन्य सिन्धोः द्विजवर मुकुलात्कीर्त्ति वल्ल्यालवालोत्काव्यालंकार सारे लघु विवृतिमधात्कौङ्कणः श्रीन्दुराजः"॥

ये महाशय कश्मीर देश के निवासी थे।

यद्यपि भट्ट वामना चार्य ने प्रतीहारेन्दुराज का कुछ समय स्पष्ट निर्दिष्ट नहीं किया है तौ भी उनकी सूची में बामन (सन् ७७९ ई०—८१३ ई०) के अनन्तर मुकुल और प्रतीहारेन्दुराज का नाम मिलता है। जिससे कि स्पष्ट प्रतीत होता है कि ये सन् ८१३ ई० के पीछे हुए होंगे। उसी सूची में प्रतीहारेन्दुराजके अनन्तर आनन्द वर्धन (सन् ८५५ ई० ८८४ ई०) का नाम मिलता है जिससे असंभव नहीं जान पड़ता कि प्रति हारेन्दुराज

सन् ८५५ ई० से पूर्व समय में रहे होंगे। यदि इनका समय सन् ८१३ ई० से ८५५ ई० के बीच माना जाय तो कदाचित लोगों को उसमें कुछ भी आपत्ति न होगी।

प्रतीहारेन्दुराज ने एक श्लोक जो अपने रचित ग्रन्थ में लिखा है वह काव्य प्रकाश के नवम उल्लास में देखने में आता है। वह श्लोक यथा—

स्वयं च पल्लवाताम्र भास्वत्कर विराजिता।
प्रभात सन्ध्येस्वाय फल लुब्धेहितप्रदा॥

जिससे अनुमित होता है कि मम्मट भट्ट (सन् ११०८ ई०] के समय तक प्रतीहारेन्दुराज का ग्रन्थ कश्मीर में प्रचलित हो गया था॥

काव्य प्रकाश के दशम उल्लास में 'आदाय वारि परितः सरितां मुखेभ्यः' इत्यादि श्लोक उठाया गया है उसके रचयिता का नाम भट्टेन्दुराज है। नही जान पड़ता कि वे यही प्रतिहारेन्दुराज हैं वा कोई और। इन्दु भट्ट नाम किसी कवि के श्लोक वल्लभ देव के सुभाषितावलि में भी मिलते हैं।

प्रभाकर भट्ट।

प्राचीन मीमांसकों में से केवल दो के नाम बहुत सुनने में आते हैं एक प्रभाकर और दूसरे कुमारिल इनमें से कुमारिल (सन् ६५०-७७० ई०) का उल्लेख तो पहिले हो चुका है और उनके ग्रन्थ का नाम तन्त्र वार्तिक है सो भी जानते हैं। पर प्रभाकर का कुछ विशेष वर्णन वा उनके रचित ग्रन्थों का नाम विदित नहीं हो सका। पर प्राचीन ग्रन्थों में जैसे सर्व दर्शन संग्रह आदि में उन्हें 'प्रभाकर गुरुणां' लिखा है। जिससे विदित होता है कि इनकी विद्वत्ता का लोगों के बीच कितना आदर था इन्हें प्रायः कुमारिल के समसामयिक वा उनसे कुछ पूर्व व्यक्ति मान सकते हैं।

प्रवरसेन ।

बाण ने हर्ष चरित के आरम्भ में लिखा है-

कीर्त्तिः प्रवर सेनस्य प्रयाता कुमुदोज्ज्वला ।
सागरस्य परं पारं कपिसेनेव सेतुना ॥

जिससे लक्षित होता है कि सेतु बन्ध नामक एक प्राकृत काव्य के द्वारा प्रवरसेन की कीर्ति संसार में फैली । लोगों का अनुमान हैं कि सेतुबन्ध काव्य के रचयिता कालिदास ही हैं पर यदि ऐसा होता तो बाण कवि कालिदास का उल्लेख प्रवर सेन के साथ न कर के पृथक् क्यों करते । पीटर्सन साहिब कहते हैं कि प्रवरसेन कश्मीर के राजा और कालिदास के अभिभावक प्रभु रहे होंगे और जैसे रत्नावली धावक विरचित होके भी श्री हर्ष के नाम से प्रचलित है वैसे सेतुबन्ध कालिदास का होके भी प्रवर सेन के नाम से प्रसिद्ध किया गया होगा संभव है कि बाण को यह बात विदित न रही हो. अतएव उनने दोनों का पृथक् उल्लेख किया हो । पीटर्सन साहिब के अनुमान से प्रवरसेन का समय सन् ४३२ ई० है ॥

प्राज्ञ भट्ट ।

कल्हण कृत राजतरङ्गिणी का दूसरा भाग जोनराज और तीसरा भाग उनके शिष्य श्रीवर पण्डित ने रचा था । श्रीवर पण्डित के अनन्तर चौथी राजतरङ्गिणी इन्हीं प्राज्ञ भट्ट की विरचित है । भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने निज काश्मीर कुसुम में इनका नाम प्राज्य भट्ट लिखा है और इन्हें अकबर शाह (सन् १५५६ ई० सन् १६०५ ई०) का समकालीन बताया है । प्राज्ञ भट्ट अपने रचित ग्रन्थ में लिखते ॥

गंगा भगवतीं तीर्थ स्नान धन्य स्व भूषितः ।
कविः श्री प्राज्ञभट्टाख्यः समग्र गुण भूषितः ॥
राजावलि पताकां स्वां राज्ये फतिह भूपतेः ।
एकोननवतिं यावत् व्यक्तीचक्रे ततः परम् ॥

बाबू हरिमोहन प्रामाणिक के मत से ये पण्डित शाके १४८२ अर्थात् १५६८ ई० में वर्तमान थे। निदान इनका समय ख्रीष्टीय १६वीं शताब्दी का पिछला भाग समझना चाहिये ॥

बाण भट्ट।

ये अत्यन्त प्रसिद्ध गद्य काव्य के लिखने वाले सन् इस्वी की सातवीं शताब्दी के पूर्व भाग में हुए हैं। इनके रचित ग्रन्थों के नाम शताब्दी के पूर्व भाग हुए हैं। इनके रचित ग्रन्थों के नाम कादाम्बरी, हर्षचरित और चण्डी शतक हैं। हर्ष चरित के प्रारम्भ में बाण ने अपने पूर्व के प्रसिद्ध कवियों का जो उल्लेख किया है उससे उनके समय का पता भली भांति लग सकता है। उन उल्लिखित कवियों के विषय में जो श्लोक लिखे हैं उनका भावार्थ नीचे के दोहों से स्पष्ट होवेगा ॥

वासव दत्ता ग्रन्थ लखि घटयो कविन को मान।
कर्ण समीप मनो पहुंच पाण्डव बल परिमान ॥
विमल हार सम वाक्य धरि क्रमते अक्षर साज।
गद्य भट्ट हरिचन्द को है कविता सिर ताज ॥
कियो सात बाहन सुभग काव्य अमर की भांति।
शुद्ध सुभाषित रत्न की मनहुं बटोरी पांति ॥
प्रवरसेन यश जगमगत शशिअंजोर अनुहार।
कपि बल सम जो सेतु चढ़ि उतरी सागर पार ॥
सूत्र धार आरम्भ कियो प्रस्तावना समेतु।
देव वृन्द इव भास कीं फहराने जस केतु ॥
कालिदास मुखतें कढ़ी कविता मधुर सुभाय।
जनो पुहुप की मंजरी जनमन लेत लुभाय ॥
पारवती परितोष कृत काम जगावत हार।
वृहत कथा शिव चरित सम अद्भुत किय विस्तार ॥

आढ्य राज के चरित सब पैठे हृदय मंझार ।
लिखत जीभ तलते मनहुं रुचिर काव्य की धार ॥

जिससे स्पष्ट है कि सुबन्धु, हरिचन्द, सात बाहन [वा शालि बाहन] प्रवरसेन, भास; कालिदास, गुणाढ्य और आढ्य राज ये कवि बाण के पूर्व प्रसिद्ध हो चुके थे। पता लगाने से जान पड़ता है कि ये सब कवि छठीं शताब्दी से पूर्व के हैं अतएव बाण छठीं शताब्दी में वा उससे भी पिछले हैं। मयूर भट्ट बाण कवि के समकालीन हैं। मयूर और बाण के सम्बध में दो कथानक सुनने में आते हैं। यथा—

[१] मयूर भट्ट बाण कवि के श्वसुर थे। लोग कहते हैं कि ये उज्जैन के वृद्ध भोजराज की सभा में उपस्थित थे।

[३। विक्रमीय संबत १०७८ अर्थात् सन् १०२२ ई० में श्री भोजराज की सभा के रत्न मयूर नाम कवि धारा नगरी में रहते थे। कादम्बरी नाम गद्य ग्रन्थ के रचयिता उनके बहनोई और बड़े मित्र थे।

किसी दिन मयूर कवि रात के पिछले पहर जाग उठे और कई एक श्लोक बना डाले उन्हें बहुत रसीले और मनोहर समझ मारे उत्सुकता के अपने मित्र बाण कवि को सुनाने के लिये उनके गृह द्वार पर पहुंचे। बाण कवि ठीक उसी समय अपनी प्यारी पत्नी मयूर कवि की बहिन को जो मान कर बैठी थी प्रसन्न करते हुए यह श्लोक रच कर सुना रहे थे ॥

गतप्राया रात्रिः शशिमुखि शशी शीर्यत इव
प्रदीपोऽयं निद्राबशमुपगतो घूर्णत इव।
प्रणामान्तोमान स्तदपि न जहासि क्रुध महो

इतना तीन चरण सुना कर जब लो वे चतुर्थ चरण के शब्द सोच रहे थे तब से मयूर कवि वहां जा पहुंचे और स्वयम् चतुर्थ चरण की पूर्ति करते हुए यों बोले कुच प्रत्यासत्त्या हृदयमपि ते चण्डि कठिनम् ॥

यह सुनते ही बाण कवि प्रसन्नता से भर बाहर निकल आये और मयूर से भेंट की। बाण की स्त्री ने अपनी क्रीड़ा में ऐसा रंग भंग देख भाई को शाप दिया कि कोढ़ी हो जा। मयूर कोढ़ी होगये और सूर्य शतक बनाने पर उस रोग से छुटकारा पाया॥

कथानक की सत्यता के विषय में चाहे सन्देह किया जावे पर इतना अवश्य मानना पड़ेगा कि मयूर और बाण समकालीन हैं। सूर्य शतक रच के मयूर ने अपना कोढ़ दूर किया ऐसा काव्य प्रकाश में भी लिखा मिलता है।

लोग बताते हैं कि बाण कवि का बनाया एक ग्रन्थ पार्बती परिणय नाम का है जिसकी कथा कुमार संभव से बहुत मिलती है। हर्ष चरित देखने से बाण कवि के विषय में बहुत सी बातें विदित होती हैं। उनके पिता का नाम चित्र भानु और माता का नाम राज्य देवी था। ये वात्स्यायन बंश में उत्पन्न मगध देश के ब्राह्मण थे। बाण के बचपन ही में उनकी माता का देहान्त हुआ और जब वे १४ वर्ष के हुए तो उनके पिता भी स्वर्ग सिधारे। बाण कन्नौज के राजा हर्षबर्द्धन (सन् ६८० ई०) के आश्रित रहे और उन्हीं के वर्णन में हर्ष चरित नाम ग्रन्थ लिखा गया है। यद्यपि हूनूथसैंग के वर्णन अनुसार कन्नौज का राजा हर्ष वर्द्धन बौद्ध मत का पक्षपाती जान पड़ता है पर उसके आश्रित रहने पर भी बाण कवि बौद्ध न थे ऐसा कादम्बरी आदि ग्रन्थों के देखने से विदित होता है॥

आध्यात्मिक जीवन।

११ मई से १३ मई तक स्वामी राम तीर्थ ने प्रयाग कायस्थ पाठशाला में ३ व्याख्यान दिये जिस्में से पहिले दिन के व्याख्यान का सारांश नीचे देते हैं—

स्वामी जी ने स्कूल बोर्ड पर निम्न लिखित एक सूरत तथा अनुक्रमणिका बनाया जो इस प्रकार थीं ॥
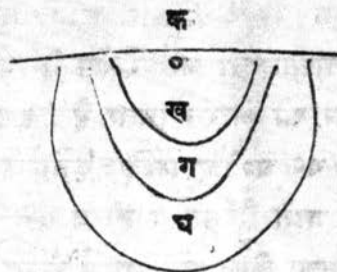
क० लट्टू	पत्थर	पेट पालू
ख०बैल	घासपात	गृहस्थ
ग० व्यापारिक वायु	पशु	सम्प्रदायी
घ० चन्द्रमा	मनुष्य	देशहितैषी
ङ० सूर्य्य	ईश्वर	ज्ञानी

"इससे पहिले कि राम आध्यात्मिक जीवन पर व्याख्यान आरम्भ करै लोगों को यह जानना आवश्यक है कि सामान्य जीवन किसे कहते हैं जहां जीवन होता है वहां गति वा चेष्टा आवश्य होती है और जहां गति वा चेष्टा होती है वहां जीवन अवश्य होता है। बिना जीव के संसार की किसी वस्तु में किसी प्रकार की गति वा चेष्टा वा परिवर्तन नहीं हो सकता। पत्थर का टुकड़ा बढ़ते २ चट्टान हो जाता है। जो आज छोटा पौधा है वह बढ़ कर बड़ा भारी वृक्ष हो छाया देने लगता है। यह उत्थान इन वस्तुओं में केवल जीव होने के कारण से है। जब किसी वस्तु से जीव निकल जाता है तो उसमें से दुर्गन्धि आने लगती है। जब तक कि नदी की प्रबल धारा बहती चली जा रही है अर्थात् जब तक कि उसमें गति है तब तक उसका स्वच्छ और निर्मल जल सब मनुष्यों को सुख देता है। परन्तु ज्योंही उसकी गति रुकी उसमें से दुर्गन्धि निकलने लगती है और फिर जल पीने के योग्य नहीं रहता। इसी प्रकार सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ में जीव तभी तक रहता है

जब तक उसमें गति रहती है । गति ही मानो जीव का स्वरूप है ! यह बात पत्थर, सागपात, पशु, मनुष्य और ईश्वर तक के भी विषय में ठीक घटती है ॥

अब इतना राम प्रस्तावना की रीति से कह के आप लोगों के चित्त को पहले आकार की ओर खींचता है । इस आकार में आप लोग यह देखियेगा कि ख० ग० घ० इत्यादि वृत्तों के केन्द्र स्पर्श रेखा से जितनी ही दूर होते जाते हैं उतना ही वे वृत्त बढ़ते जाते हैं । यहां तक कि वह वृत्त जिसका केन्द्र इस स्पर्श रेखा से असीम दुरी पर है स्वयं स्पर्श रेखा हो जाता है । इसी कारण से सीधी रेखा की यह परिभाषा कही जाती है कि सीधी रेखा वह वृत्त है जिसका केन्द्र अनन्त दूरी पर हो ॥

पहले आकार के यह गुण बतला कर अब राम यह कहता है कि जितने वृत्त खींचे हैं जुदा २ मनुष्यों के गति के वृत्त हैं । जितने प्रकार की वस्तु संसार में पाई जाती है प्रायः सबों की गति का नमूना भांति २ के मनुष्यों में पाया जाता है । प्रथम आकार में जो बिन्दु क है वह अनुक्रमणिका (Table) में पेट पालू की गति का नमूना है ।

इस कारण से कि वह मनुष्य जो पेट पालू है मनुष्य जाति में सब से नीच है उसकी तुलना सृष्टि के सब से छोटे पदार्थ पत्थर से करते हैं । यह मनुष्य उस विन्दु के समान जिस से उसकी तुलना की गई है अपने ही स्वार्थ में रत रहता है । उस मनुष्य को सिवा अपने स्वार्थ के और किसी से कुछ मतलब नहीं—अपने ही शरीर के साढ़े तीन हांथ के टापू को वह सारा संसार माने हुये है और उसी की चिन्ता में मग्न रहता है। रोम का राजा नीरो ऐसा ही मनुष्य था जिसके हृदय की गति मनुष्य रूप में होते हुये भी पत्थर के सदृश थी । उसको एक बार आग लगने का तमाशा देखने की इच्छा हुई—तब अपने चक्षु इन्द्रिय को तृप्त करने के लिये समस्त नगर में आंग लगाने की आज्ञा दे दी और जब आग लग गई

एक तम्बूरा ले पहाड़ की चोटी पर बैठ आनन्दित होने लगा-रोम का एक दूसरा सम्राट् भी ऐसा ही था। उसकी जिह्वा इन्द्रिय ऐसी प्रबल थी कि रात दिन उसको यही इच्छा बनी रहती कि नये स्वाद चक्खें। इसलिये उसके यहां रातो दिन डेग चढ़ा रहता था और भांति २ के भोज्य पदार्थ बना करते थे। जब उसका पेट खाते २ ख़ूब भर जाता तब वह ऐसी दवायें खाता जिससे पेट में का गया सब पदार्थ मुह के द्वारा निकल जाता और फिर वह और भांति २ के भोजन खाने के लिये बैठ जाता। इस प्रकार के मनुष्यों की गति लट्टू के गति की भांति है जो अपने ही में चक्कर लगाया करता है॥

इस प्रकार के मनुष्यों से बढ़ कर गृहस्थ की श्रेणी है जो कि प्रथम आकार के वृत्त ख से तुलना रखती है। वृत्त ख बिन्दु क से बहुत बड़ा है। इसी प्रकार गृहस्थ पेट पालू मनुष्य से कहीं बढ़ कर है-वह केवल अपने ही स्वार्थ की चिन्ता में नहीं रहता किन्तु कुल कुटुम्बियों के पोषण का भार लिये हुए है-धन्य है ऐसा मनुष्य जिसने अपनी आत्मा तथा कुटुम्बियों की आत्मा को एक समझा, जो ख वृत्त के उत्तान पार्श्व (Concave side) के समान अपनी आत्मा में और थोड़े मनुष्यों की आत्मा को समेटे है। परन्तु उसमें एक दोष है। उसी वृत्त के न्युब्ज पार्श्व (Convex side) के समान इसकी पीठ कूर्मवत् उन मनुष्यों की ओर से जो उसके कुटुम्ब में नहीं है मुड़ी है। डांकू दूसरों को दुख पहुंचाता है और अन्य परिवारों के माल को लूट कर अपने परिवार की रक्षा करता है-ज़मीदार भूख से मरते हुये किसान से पाई २ तक निचोड़ लेता है, किसान के स्त्री के कान की बाली को बिकवा लेता है और अपनी स्त्री को पहनाता है। धनी निर्धन मनुष्यों के बालकों को दुःख और सन्ताप में पड़े देखता है परन्तु यदि स्वयं उसका बालक आनन्द की निद्रा में सो रहा है उसको कुछ चिन्ता नहीं होती-ऐसा गृहस्थ अवश्य दोषी है उसकी तुलना घास पात से की जा

सकती है। उसकी गति कोल्हू के बैल के समान है जो एक ही छोटे से घेरे में चक्कर दिया करता है और घण्टों के परिश्रम के बाद वह यही देखता है कि हम वहीं खड़े हैं जहां से चले थे॥

इन दोनों प्रकार के मनुष्यों से बढ़ कर वह मनुष्य है जो अनुक्रमणिका (Table) में सम्प्रदायिक (Sectarian) कहा गया है सम्प्रदायिक का आत्मज्ञान पेट पालू और गृहस्थ से बहुत ऊंचा है वह न केवल अपनी आत्मा और न अपने कुटुम्ब के लिये परिश्रम करता है वरन सारे अपने सम्प्रदाय को अपना भाई समझ उनके हित के लिये उद्योग करता है-ऐसे मनुष्य की तुलना प्रकृति की श्रेणी में पशु से की जा सकती है और उसके जीवन की गति व्यापारिक वायु (Trade winds) के समान है जो पृथ्वी के जिस भाग में चलती है सुखदायक होती है। पहले आकार में ऐसा मनुष्य वृत्त ग के समान है जो अपने भीतर वृत्त ख से कहीं अधिक स्थान घेरे है परन्तु दोष ऐसे मनुष्यों में भी है-जैसे वृत्त ग की पीठ और वृत्तों से मुड़ी है वैसे ही ऐसे मनुष्य की भी सहानुभूति उन मनुष्यों के साथ नहीं है जो इसके सम्प्रदाय के नहीं है या जो इसके सम्प्रदाय के बाहर हैं आर्य समाजी और सनातनधर्मावलम्बी एक दूसरे द्वेष से रखते हैं। रामानुजी सम्प्रदाय के मनुष्य शंकर के सम्प्रदाय से बैर मानते हैं। हिन्दू मुसल्मान को और मुसलमान हिन्दू को अपना शत्रु समझता है। इस कारण से यद्यपि सम्प्रद्राय वाले ने गृहस्थ वालों पर बहुत कुछ उन्नति की है फिर भी से उनकी सहानुभूति एक चक्कर में बन्द है और वे अवश्य दोषी ठहराये जायंगे-

इन सबों से बढ़कर दर्जा सच्चे देश हितैषी का है। उसके जीवन की गति की तुलना पहले आकार में वृत्त घ से की जा सकती है। यह वृत्त सब छोटे वृत्तों को अपने घेरे में समेटे है और इनके अतिरिक्त और बहुत सी जगह अपने घेरे में रखता है। देश हितैषी अपने आत्मा और एक देश के देश की आत्मा के ऐक्य को जान जाता है। उसके

आंखों के तीव्र ज्योति के सामने जाति, पांति और रंग की भिन्नता सब दूर हो जाती है। वह देश के प्रत्येक जन के साथ वैसाही स्नेह रखता है जैसा अपनी आत्मा या अपनी भाई के साथ अपने जन्मभूमि माता से जितने जीव उत्पन्न हुए हैं उन सभों के लिये अपने को अर्पण किये रहता है। जापान में गुरू शिष्य से पूंछता है "तुमने अपने जीवन को कहां से पाया है" वह कहता है "पिता से" "पिता क्या खाके पला" "अन्न, जल इत्यादि से" गुरू पूंछता है "अन्न जल कहां से आये" शिष्य उत्तर देता है "जापान की भूमि से" तब गुरू कहता है "तुम्हारा जीवन जापान की भूमि से है और जापान को अधिकार है कि जब चाहे वह तुम्हारा शरीर लेले"—यही तत्व सच्चे देश हितैषिता का है। देश हितैषी को प्रकृति की श्रेणी में मनुष्य कहा है-उसके जीवनकी गति चन्द्रमा के समान है। चन्द्र ही के समान वह मनुष्यों के चित्त के और देश के अन्धकार को अपने सहानुभूति और देश हितैषिता की ठण्ढी किरणों से एकदम दूर हटा देता है।

परन्तु देश हितैषी को भी प्रकृति की सीढ़ी पर और अधिक चढ़ना है। यह कह चुके हैं कि गति अथवा उन्नति जीवन का मूल है-ज्यों ही सृष्टि के किसी पदार्थ की उन्नति बन्द हो जाती है रुके हुये जल के समान मैला हो जाता है और उसमें से दुर्गन्धि निकलने लगती है। जब एक छोटा पदार्थ जैसे मूसा मर कर सड़ता है उसमें से थोड़ी ही दुर्गन्धि निकलती है परन्तु जब सृष्टि का कोई भारी पदार्थ जैसे हाथी मर कर सड़ता है तो उसमें से कहीं अधिक दुर्गन्धि निकलती है और आस पास के स्थानों में फैल कर रोग उत्पन्न करती है। इसी प्रकार यदि पेट पालू या गृहस्थ उन्नति नहीं करता तो उससे थोड़ी ही हानि होती है परन्तु यदि एक देशहितैषी नष्ट हो जाय और उन्नति करना छोड़ दे तो उससे पृथ्वी भर को बहुत बड़ी हानि पहुंचती है-एक देश से दूसरा देश लड़ जाता है और लाखों मनुष्यों के लोहू की नदियां बह निकलती हैं॥

देश हितैषिता की सीढ़ी बिना चढ़े हुए मनुष्य को सच्चा आत्मज्ञान कभी नहीं प्राप्त हो सकता परन्तु यदि इस दर्जे पर आकर मनुष्य रुक जाय और आगे उन्नति न करै तो वह भी दोष भागी होगा सच्चे ज्ञानी की श्रेणी इससे कहीं ऊपर है। सच्चा ज्ञान वही है जब अपनी आत्मा न केवल देश की आत्मा होजाय वरन सृष्टि भर की अर्थात् सृष्टि भर में एक ही आत्मा देख पड़े और यही वेदान्त का सार है-आत्मत्याग कोई वस्तु नहीं है क्योंकि आत्मा त्यागी नहीं जा सकती ! मनुष्य का सच्चा कर्त्तव्य यही है कि अपनी तथा संसार की आत्मा के ऐक्य को पहचाने- उस ज्ञानी को जिसको ऐसा ज्ञान हो गया ईश्वर कह सकते हैं और उसके जीवन के गति की तुलना सूर्य से दी जा सकती है जो सारे सृष्टि को प्रकाशित कर रहा है। वृत्त का केन्द्र स्पर्श रेखा से हटते २ अनन्त दूरी पर हो गया और वृत्त और सीधी रेखा में कोई भिन्नता न रह गई ॥

A. S.

पंडित बैठे छात्र बटोर
तिलक लगाये "नम्बर फोर" (No 4)
बिद्यार्थी सब सत्तर आठ
बोली बोलैं एकहि ठाठ;
चुप्प चाप सब सीधे खड़े
एक एक अक्षर सब कोई पढ़े
छब्बिस गोरे छब्बिस काले
करहिं काम छब्बीस निराले
चपत पड़े तब जीभ निकालहिं
जो कुछ पढ़े सो तुरंत बतावहिं

यह एक पहेली है जो महाशय इसको हल कर २० जून तक भेजेंगे उन्हें उपहार में एक मनोरञ्जक उपन्यास भेंट दिया जायगा ॥

यु-मो-कूल प्रयाग

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै बिबेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २७ } प्रयाग { जुलाई
सं० ७ } { सन् १९०५ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०*०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

——:००:——

जि० २७ सं० ७ | प्रयाग | जुलाई १९०५ ई०

पुरातन तथा आधुनिक सभ्यता में अन्तर।

पुरानी सभ्यता का उद्देश्य Simple living and high thinking साधारण जीवन और उच्च विचार था-हमारे पुराने लोग शून्य एकान्त स्थान में जन समाज से बड़ी दूर किसी पर्वत स्थली या पवित्र नदी के तट पर स्वच्छ जल वायु में नीवार साग पात या कन्द मूल फल खा कर रहते थे वेश कीमत दस्तर खान उन के लिये नहीं सजाया जाता था पर विचार उनके कैसे ऊंचे होते थे कि संसार की कोई ऐसी बात न बच रही जिसपर उन्हों ने खयाल नहीं दौड़ाया और जिस्को अपने मस्तिष्क में नहीं रख लिया-इस समय की सभ्यता का जो चलन है

उस्के साथ मुकाबिला करने से वे लोग रूड जंगली और असभ्य कहे जा सक्के हैं-तब के लोगों को शान्ति बहुत प्रिय थी जो जितना ही मन को बश में किये हुए दमनशील और शान्त रहता था वह उतनाही अधिक सभ्य समझा जाता था-इस समय शान्त शील बोदा समझा जाता है मन को बश में करना कैसा बलिक मन को चलायमान और इन्द्रियों को अतिशय लालन की कितनी तदबीर और सामग्री चल पड़ी हैं-फ्रान्स में दिन में ३ बार लेडियों के फेशन बदले जाते हैं फेशन जो इस समय अन्तिम सीमा को पहुंच रहा है यह सब सभ्यता ही का प्रसाद है। सिवाय इस्के लोभ ईर्ष्या ममता इत्यादि दोष जो इन्द्रियों को दमन न करने से पैदा होते हैं सब इस समय की शोभा और गुण हो रहे हैं। सारांश यह कि उस समय की सभ्यता का लक्ष्य केवल बाहिरी उन्नति पर इतना न था वरन भीतर की उन्नति पर जिसे आध्यात्मिक उन्नति कहते हैं-हमारी आध्यात्मिक उन्नति में बिना बाधा पड़े Matterial वाहृय भौतिक उन्नति उस समय स्वीकृत थी-इस समय "मेटीरियल" भौतिक उन्नति पर ज़ोर दिया जाता है जिस्का परिणाम देखने में आ रहा है कि हम आध्यात्मिक विषय में दिन २ गिरते जाते हैं। हमारी आधुनिक सभ्यता बिल्कुल रुपये पर निर्भर है रुपया पास न होतो आप सकल गुण बरिष्ट शिष्ट समाज के सिर मौर होकर भी श्रद्धास्पद नहीं हो सक्के। सर्व साधारण को जब यह निश्चय हो गया कि केवल रुपया सब इज़्ज़त और प्रतिष्ठा का द्वार है तब जैसे बनै रुपया इकट्ठा करने में चूक न हो हमारी आध्यात्मिक शक्ति का ह्रास हो बला से रुपया मिलने में त्रुटि न हो-तब के लोगों में ऐसा न था आभ्यन्तरिक शक्तियों को विमल रख रुपया मिलता हो तो वह लाभ उन्हे ग्राहृय था। दूसरा कारण इस्का यह भी कहा जा सक्ता है कि तब देश सब ओर से रंजा पुजा था धन की कमी न थी अब इस समय मुल्क में ग़रीबी बढ़ जाने से लोगों को रुपया कमाने में

Struggle यत्न विशेष करना पड़ता है। यूरोप और अमरिका के आढ्य तम देशों में इस आधुनिक सभ्यता की पोल नही खुलने पाती इसलिये कि वहां Struggle कोशिश इतनी अधिक नहीं है। यहां सब भांत अभाव और क्षीणता है तो इस वर्तमान सभ्यता की भरपूर पोल खुल रही है खून लगाय शहीदों में मिलने की कितनी ही चेष्टा लोग कर रहे हैं पर देश में सच्ची सभ्यता का लोप ऐसा पातक हम लोगों पर सवार है कि हमें सभ्यता की श्रेणी से अलग कर रहा है। यहां पर एक बात और हमारे मन में आती है कि सभ्यता का देश के जल वायु के साथ बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है प्राकृतिक नियमानुसार जो बात या जो बर्ताव जल वायु के अनुकूल पड़ता है वही वहां की सभ्यता समझी जाती है जैसा हमारा देश कृषि प्रधान है तो जो कुछ यहां की खेती के अनुकूल या पृथ्वी की उपज को बढ़ाने वाला है उसकी वृद्धि या उसका पोषण इस देश की सभ्यता का एक अंग है जैसा गोरक्षा या गोपालन यहां की सभ्यता का श्रेष्ठ अंग है। सामयिक सभ्यता में गो धन की क्षीणता महापातक सा देश भर को आक्रमण किये है हमारे पूर्वज प्रकृति को छेड़ना नहीं पसन्द करते थे वरन प्रकृति में विकृति भाव बिना लाये सहज में जो काम हो जाता था उसी पर चित्त देते थे। आधुनिक सभ्यता विदेश से यहां आई है वह हमारी किसी बात के अनुकून नहीं है किन्तु इस्से प्रतिदिन हमारी क्षीणता होती जायगी। भोग विलास आधुनिक सयभ्ता का प्रधान अंग है दरिद्र का विलासी होना वैसा ही जैसा "उपर्युपरि पश्यन्तः हर्व एव दरिद्रति"—अपने से अधिक वाले का अनुकरण करते कौन नहीं दरिद्र हो जाता—तस्मात् अन्त को यही सिद्ध होता है कि साधारण जीवन और ऊंचा बिचार पुष्ट सभ्यता है—जिन दिन देखे वे कुसुम गई सो बीत बहार—अब अलि रही गुलाब की अपत कटीली डाल—

बिल्व मंगल।

दक्षिण देश में कृष्णा वेणा नदी के तीर किसी स्थान में ये रहते थे। पिता ने लड़कपन में इन्हें बहुत दुलार में रक्खा था इस कारण इनने विद्याभ्यास में कुछ यत्न न किया। होते २ कृष्णा वेणा नदी के दूसरे पार रहने वाली किसी वेश्या पर आसक्त हुए यहां तक कि एक बार पिता के श्राद्ध के दिन काम काज में फंस के जब वेश्या से न मिल सके तो रात्रि में पानी बरसते समय नदी पार करने का साहस किया किसी लोथ के सहारे नदी पार पहुंचे और दीवार पर से लटकते हुए किसी सर्प को रस्सी समझ उसे थांभ कोठे पर चढ़ कर अपनी प्यारी से मिले। उनका ऐसा साहस देख वेश्या ने उन्हें बहुत झिड़का और कहा कि तुम हम से जितना प्रेम रखते हो उतना कहीं भगवान् से रखते तो बड़ा कल्याण होता। निदान यह झिड़की ने बिल्व मङ्गल के चित्त में खटक पैदा कर दिया झट उठ खड़े हुए और वहां से चल दिये। किसी ब्राह्मण के कहने से ये सोमगिरि के पास जा पहुंचे और सोमगिरि ने उन्हें नीचे के लिखे दो श्लोक सुनाये॥

कृष्णेति मङ्गलं नाम यस्य वाचि प्रवर्तते।
भस्मीभूतस्तु तस्याशु महापातक कोटयः॥
दरिद्रो वा रूजार्त्तो वा ग्रहार्त्तोवापि यो नरः।
श्री कृष्णेति जपन्नाम सुखीभवति निश्चितम्॥

उपरान्त कृष्णा के तीर पर ले जाके इन्हें मन्त्र दिया निदान विरक्त बिल्व मङ्गल मथुरा को चले लोग कहते हैं कि मार्ग में इनने अपनी दोनों आंखों को भी फोड़ डाला कि संसार के पदार्थों से विशेष प्रीति न रहे। ये महाशय पीछे से अच्छे कवि हुए हैं और श्री कृष्ण कर्णामृत नाम ग्रन्थ रचा। लोग कहते हैं कि श्री कृष्ण स्वयं प्रकट होकर उनके इस काव्य को सुनते और प्रसन्न होते थे। इन्हों ने अपना तखल्लुस

लीला शुक अर्थात् राधिका जी को अपनी मीठी बोल से लुभाने या उनका जी बहलाने वाले राधिका जी के हाथ के सुग्गा अपने को कहते थे कृष्ण कर्णामृत के एक २ श्लोक भक्ति रस से पूर्ण और बड़ी चमत्कार कविता के हैं=

बिल्व मङ्गल पहिले अद्वैत वादी थे पर पीछे से रामानुज के सम्प्रदाय में मिलके विशिष्टाद्वैत वादी हो गये। इनके रचित श्लोक को महा प्रभु श्री कृष्ण चैतन्य बड़े प्रेम से गाया करते थे। अतएव बिल्वमङ्गल का समय रामानुज और कृष्ण चैतन्य इन दोनों के बीच का माना जा सकता है। रामानुज स्वामी का समय ख्रीष्टीय १२ वीं शताब्दी का पिछला और १२ वीं शताब्दी का पूर्व भाग है। श्री कृष्ण चैतन्य का जन्म सन् १३८५ ई० में हुआ। इससे संभव है कि बिल्व मङ्गल तेरहवीं वा चौदहवीं शताब्दी ख्रीष्टीय वा उसके तनिक पूर्व रहे हों।

बल्लालसेन।

बंगाल के सेन बंशी राजाओं की नामावली में इनका नाम दिखने में आता है। बाबू रमेश चन्द्र दत्त के कथनानुसार बल्लालसेन के राज्य सिंहासन पर बैठने का समय सन् १०६६ ई० है. इनके पिता का नाम बिष्वक् सेन वा सुख सेन जान पड़ता है। बंगाल के प्रसिद्ध राजा लक्ष्मण सेन इन्हीं के पुत्र थे ऐसा अनुमान होता है। बंगालियों के निर्देशानुसार इनके रचित ग्रन्थ का नाम दान सागर है। इस ग्रन्थ के रचे जाने की मिती 'शशिनव दशमिते शकाब्दे' लिखा है। बंगाली लोग इसका अर्थ शाके १०१९ कहते हैं पर वास्तव में यह १०९१ शाके होता है। यदि १०१९ शाके में दान सागर रचा गया हो तो सन् १०९७ ई० उसका समय रमेशचन्द्र के निर्णय से मेल खाता है। अन्यथा १०९१ शाके मानने से बल्लाल सेन का उस समय में होना असंभव अनुमित होता है। भोज प्रबन्ध नाम ग्रन्थ इन्हीं बल्लाल सेन का बनाया है ऐसा लोग बहुधा बतलाते हैं॥

पं-सुधाकर दूबे ने निज रचित गणक तरङ्गिणी में बल्लाल सेन को मिथिला या सिरहुत प्रान्त का राजा और लक्ष्मण सेन का पुत्र लिखा है और कहते हैं कि उसने १०९० शाके में अद्भुत सागर नाम ग्रन्थ बनाया। क्या आश्चर्य बंगाल और तिरहुत के राजा और अद्भुत सागर वा दानसागर के रचयिता एक ही बल्लाल सेन होंगे? पर लक्ष्मण सेन उनका पुत्र था वा पिता किसी प्रकार निर्णय नहीं होता। यदि भिन्न२जन हों तो संभव है दान सागर वा अद्भुत सागर एक ही ग्रन्थ हो क्योंकि दोनों के रचे जाने का समय १०९० वा १०९१ शाके मिलता है। सो दान सागर के रचियिता मिथिला के राजा बल्लाल सेन हों और बंगाल के राजा बल्लाल सेन कोई और हों तो असंभव नहीं है। अबुल फ़ज़ल ने भी बंगाल के सेन बंशी राजाओं की नामावली में सुख सेन का पुत्र बेलाल सेन और उसका पुत्र लखमन सेन लिखा है।

कहते हैं कि जब बल्लाल सेन ने किसी एक नीच कुल संभवा कन्या से प्रेम किया तो उनके पुत्र लक्ष्मण सेन ने पद्यों द्वारा उन्हे उलाहना दिया बल्लाल सेन ने उसका उत्तर जिन श्लोकों में दिया वे नीचे लिखे जाते हैं॥

तापो नापगतस्तृषा न च कृशा धौता न धूली तनोर्न स्वच्छन्दमकारिकन्दकवलः का नाम केली कथा। दूरोत्क्षिप्तकरेण हन्त करिणस्पृष्टा नवा पद्मिनी प्रारब्धोमधुपैरकारण महो झांकार कोलाहलः॥ सुधांशो जातियं कथमपि कलंकस्यकणिका विधातुर्दोषोय न च गुणनिधेस्तस्य किमपि। सकिं नात्रेः पुत्रो न किमु हर चूड़ार्चनमणि र्न वाहन्ति ध्वान्तं जगदुपरि किं वा न बसति॥

ऊपर के दोनों श्लोकों से बल्लाल सेन की कविता शक्ति भली भांति झलकती है।

ब्रह्म गुप्त।

महमहोपाध्याय पं० सुधाकर दुबे जी ने गणक तरङ्गिणी में इनके विषय में लिखा है कि ये महाशय बिष्णु गुप्त के पुत्र थे शाके ५२० अर्थात सन् ५९८ ई० में उत्पन्न हुए। व्याघ्र मुख नाम राजा के समय में अपनी तीस वर्ष की बय में इनने ६२८ ई० में 'ब्राह्म स्फुटित' नाम ग्रन्थ रचा। और सन् ६६५ ई० में खण्डन खाद्य नाम करण भी रचा। बहुतों की राय है कि ये विष्णु गुप्त के पोते थे और रीवां के राजा व्याघ्र भट के आश्रित थे।

ब्रह्म गुप्त प्रसिद्ध ज्योतिषी थे इन ने आर्य भट्ट के मत का खण्डन भी किया है।

नई रोशनी का जौहर।

आज नई रोशनी का एक ऐसा जौहर हमारे हाथ लगा है कि जिस्के देखने से हमारी आंखें खुल गई और यह निश्चय कर लिया कि अब तो नई रोशनी वालों का कदम चूबैंगे बरन उनकी सात परिक्रमा कर चरणामृत लेंगे और आगे से उनकी शान के खिलाफ कलम को कष्ट न देंगे। प्रिय पाठक यह जौहर ऐसा नहीं है कि हम आप लोगों को उसे बिना दिखलाये या अपने से अधिक उस्का आनन्द आप को बिना पहुंचाये चुप रह सकें। उस जौहर के आनन्द को हम आप के सामने ज्यों का त्यों रक्खे देते हैं आप उसे अपना ही जान जितना चाहें उस्के सुख का अनुभव करें और अपने दोस्तों को भी उसका हिस्से दार बनावें। परन्तु यह जौहर जैसा कदाचित् आपने अनुमान किया होगा न हीरा है न लाल न नीलम है न पुखराज यह तो धनाढ्य के नौ जवान नई रोशनी के मारे हुए पुत्र की (डयरी) रोज़नामचे या दिनचर्या के फटे हुये ६ पन्ने हैं। यह मुझे एक कूड़े के ढेर के पास पड़े

मिले मैंने उन्हें लालच बश नोट समझ उठा लिया परन्तु बाहरे किस्मत नोट नहीं तो नोट कर लेने योग्य बस्तु निकली। जिस्के अव-लोकन से हम तथा आप वह लाभ उठा सकेंगे कि एक हज़ार का नोट के मिलने से भी न उठा सक्ते। पहले तो ऐसे पाये हुये नोट को हम आप से बतलाते ही क्यों चुपचाप अपने जेब में रख लेते और बतलाते भी तो आप पुलिस के हाथ भर के सोटे के भय से कब हिस्सा लेने को मुस्तैद होते। अस्तु ईश्वर की कृपा से ऐसी वस्तु हाथ लगी कि हम और आप सब उस्में अपनी श्रद्धा और रुचि के अनुसार लाखों रुपये के बख़ की बचत कर अन गिनत रुपये पैदा करने योग्य हो जायगे।

डयरी के उन छहो पन्नों की नकल हम ज्यों की त्यों आप के सामने रक्खे देते हैं॥

पहला पन्ना।

रविवार ६ मार्च १९०४।

सुबह ९ बजे सो के उठे ११ बजे नहाये। आज शाम को एक बक्स पियर्स सोप और एक जोड़ा जनेऊ खरीदना है। जनेऊ आज बिलकुल टूट गया गही देकर भी पहनने लायक न रहा। न इस्में अब ताली ही बंध सक्ती है। दोपहर को ३ घंटे सोये शाम को चौक गये ३) तंबोली को ५ दिन के हिसाब के दिये। बी मुन्ना जान ने कलुआ के हाथ ४ बीड़े पान के भेजे और यह कहलाया कि "कल दरजी के यहां से अगर कुर्तियां लेकर दोपहर को न आओगे तो ज़िन्दगी भर मेरी ड्योढ़ी पर कदम रखने की हिम्मत न करना"॥

रिमार्क—खैर आज बी साहबा कुछ नाराज़ हैं कल भोरही यह काम कर तब नहाऊंगा।

दूसरा पन्ना।

सोमबार ७ मार्च १९०४।

आज सुबह सब के पहले उठे लाला जी के सिरहाने से उनकी तालियों का गुच्छा चुराकर उनके बक्स से २५) उड़ा लिये बी साहबा की कुर्तियां मंगाई मगर दरजी ने अभी तक नहीं बनाई नौकर के वापिस आने पर मैं खुद हंटर ले कर गया दर्जी से कहा सुनी हुई उस बदमाश ने दो आदमियों को उसका दिया जिन्हों ने हंटर मुझ से छीन लिया और न जानिये कितने जड़े—

(Very confedencial remark) दर्जी की मार का तो कुछ रंज नहीं मगर कुर्तियां न मिलीं आज दो पहर को उन्हें क्या मुंह दिखावेंगे—

बी मुन्ना जान के यहां कहला भेजा मुझे आज कई दस्त और कै आ गये इस वजह से शायद न आ सकूंगा कुर्तियां आप की तैयार हैं तबियत ठहरने पर हाज़िर करूंगा

———

तीसरा पन्ना।

मंगलबार ८ मार्च १९०४।

दो बिलों का पेम्यंट आज ज़रूर करना है पर रुपया पास नहीं खैर घर गया Wife [वइफ] को बुला कर १०५)) मांगा इनकार करने पर मुझ से रहा न गया उस की खूब ही मरम्मत की और एक हाथ का ठोस सोने का कड़ा उतार लिया। वइफ का चिल्लाना सुन मा दौड़ आईं मैं गुस्से में आ उन्हें पीछे को ढकेला पर वह सीढ़ियों पर गिरीं खूब चोट आई उन्हें वैसा ही छोड़ अपने कमरे में आया शराब वाले की बिल अदा की दूसरे को Next संडे को आने बोला—

आज सिर्फ दोही बोतल ह्विसकी मंगाई नशा कम रहा—

चौथा पन्ना ।

बुधवार ९ मार्च १९०४ ।

धोबी का हिसाब

१ कोट सिल्क-धोलाई आना ४-वापिस तह ठीक नहीं है-

१ कोट हालेन्ड=ब्राउन धोलाई आना ४-

२ वेस्ट कोट-धोलाई २ आना-

६ शर्ट-धोलाई ६ आना-वापिस-कफ और कालर की तह ठीक नहीं-

२ पैंट-धोलाई २ आना-वापिस-तह ठीक नहीं-

२ कालर धोलाई २ आना-

२ नकटाई धोलाई आना ४

२ बी साहबा की साड़ी धोलाई १-रुपया-

रिमार्क--कुल टोटल धोबी के धोलाई का हिसाब सिर्फ १ हफ्ता का ३) याने १२) महीना-

---

पन्नाा ५ ।

वृहस्पतिवार १० मार्च १९०४ ।

७ बजे से ९ बजे तक जूतों में ब्रांको लगा जूता साफ करते रहे-कल दोनों नौकरों को हंटर से खूब पीटा और तनख़ाह ज़ब्त कर निकाल दिया-

आज १ बोतल ब्रांडी हज़्म हो गई-

लैडलाएंड को कलकत्ता को इन चीज़ों का आर्डर भेजा-

सिलकेन शर्टस १ दर्जन-

रेशमी रुमाल २ दर्जन-

धारीदार मोज़े २ दरजन-

कालर ६ नेकटाई ६ तीन जोड़े जूते इङ्गलिश मेड-

रिमार्क हम उनकी वे अकली की कहां तक पछतांय न जानिये उन्हें क्या शामत सवार है जिन्हों ने देशी कपड़े पहिनने का प्रण कर छोड़ा है हमें तो देश के बने भद्दे मोटे कपड़े देख घिन होती है-

---

छटा पन्ना ।

शुक्रबार ११ मार्च १९०४ ।

आज ५००) इस शर्त पर क़र्ज़ लिया कि जब बाप मरैंगे तब १०००) देंगे-उन्हीं रुपयों से आज रामनौमी का जलसा हुआ-शहर की खूबसूरत और नौ जवान तवायफें आईं-उनकी दावत बड़ी धूम धाम के साथ की गई मैं ने भी वी साइबा के साथ उनके दस्तर खान का शरीक हुआ वल्कि पिता जी इसी वजह से घर से निकल गये-रिमार्क बुड्ढा बहाने बाज़ी करता है पीछे पछताय आप ही घर आ जायगा-

प्रिय पाठक इन पत्नो के अवलोकन से मालूम हुआ होगा कि ये कितने बहु मूल्य हैं-बड़े दाम के जवाहर भी इन पर न्यौछावर हैं-यदि आप अपनी बुद्धि की नुकीली सलाई से इन्में छेद कर सोने के तार में गूंज इन्हें पहन लें तो क्या ही अच्छा हो-.

अ-मो-कूल

काशी मे सोशल कानफैरेन्स ।

हम कई बार इसका प्रतिबाद कर चुके हैं कि कानग्रेस के पण्डाल में सोशल कानफेरेन्स ऐसे नष्ट समाज का जलसा सर्वथा अनुचित है इसे हम अपनी आर्यता का मूलोच्छेदी कुठार कहें तो सब भांत सुसंगत है। पारसाल बाम्बे में गइकवाड़ की वक्तृता से हमारा यह निश्चय और भी दृढ़ होगया कि यह हमारे हिन्दू धर्म वर्ण विवेक आदि को जड़ पेड़ से उखाड़ दिया चाहता है। हम लोग हिन्दू धर्म में संशोधन

चाहते हैं किन्तु ऐसा संशोधन नहीं कि हमारा रूपान्तर हो जाय हम सर्वथा अंगरेज़ या यवन बन बैठें हिन्दुआनी की कहीं गन्धि भी न बाकी रहे। काशी ऐसे तीर्थ स्थान में जहां हिन्दू धर्म का अटल साम्राज्य है और कुल हिन्दुस्तान में पंजाब से ले बंगाल तक धर्म सम्बन्धी विषय की कोई पेचीली गांठ के सुरझाने को काशी का हवाला दिया जाता है वहां सोशल कानफेरेन्स ऐसे धर्म को दूषित करने वाले समाज का अधिवेशन नितान्त अनुचित है—काशी के लोग इस्का प्रतिबाद ही न करैं वरन इस्के न होने में अपनी प्रसन्नता प्रगट करैं और कानफेरेन्स के मन्तव्यों का अनुमोदन करैं तो इस्से बढ़ कर हिन्दू धर्म का घाटा और क्या होगा। इस कानफेरेन्स के मुखिया वे ही हैं जो हमारी समाज से निकासे हुए हैं जिन्हों ने अपनी नाक कटा डाला है तो वे अब चाहते हैं कि किसी के नाक रही न जाय ऐसों के कथन का समाज पर क्या असर पड़ सक्ता है। संशोधन का भार उठाने वाले को बहुत सुचेत और बड़े विमल चरित्र का होना चाहिये जिस्में सब लोग उस्के चलन का अनुकरण करैं तथा उस्की नियत की हुई प्रणाली या लीक पर चलैं। कानफेरेन्स के दल में जो लोग हैं उन्में हम एक को भी ऐसा नहीं पाते जिसने देश या समाज के लिये ज़रा भी अपनी हानि गंवारा किया हो—नितान्त स्वच्छन्द समाज की कैद से मुक्त हो जाना ही उनके मत में तरक्की है इस तरक्की से हमारा तथा हमारे देश का क्या उपकार है। कानग्रेस में सबों का धन लगता है तब इस पंडाल में कानफेरेन्स क्यों किया जाता है हम लोगों के धन से कानग्रेस किया जाय पण्डाल रचना हो और हमारी ही जड़ उखाड़ी जाय क्या अच्छा न्याय है। हम अन्त की घड़ी तक चिल्लाते जांयगे मानना न मानना कानग्रेस के मुखियाओं के हाथ में है।

———

जब आंख खुली तो क्या देखा।

कल सांझ को दो चार यार दोस्तों की राय ठहरी कि आज भंग घुटै-फिर क्या देर सिल बट्टा मौजूद हो गया कहने भर की देर थी बात की बात में बूटी के सब मसाले मुहैया हो गये। एक ब्राह्मण देवता लगे घोटने यारों ने भी गप्पैं मारना शुरू कर दिया। थोड़ी देर में एक २ कुल्हड़ सबों के हाथ में नज़र आने लगा इधर हम भी दो तीन कुल्हड़ उड़ा गये और हवाई घोड़े पर उढ़ने लगे। जब ज़रा सरूर आने लगा तो सोचा चलैं अब सो रहैं घर पहुंचे ब्यालू में देर थी कौन ठहरता है घट खाट की शरण ली। थोड़ी देर तक तो सांप बीछू दिखाई देते रहे उपरान्त देखा कि एक बड़ा भारी मैदान है और बहुत लोग नाक की सोझ एक ओर को जा रहे हैं। हमारे मन में भी यही समाई कि चल कर देखैं वहां क्या है। थोड़ी देर बाद मालूम हुआ कि कोइ परम सुन्दरी अठखेली चाल से चलती छम २ करती इधर से उधर को ठुमुक रही है। वहां के सब मनुष्यों की यही लालसा है कि वह हम से बोले या हमारे पास आ जाय। वह सोने की चिड़िया जिधर घूमती है उधर ही लोग उसे हाथों हाथ लिया चाहते हैं पर वह भी एक बिचित्र स्त्री है किसी के पास ठहरना तो जानती ही नहीं। अभी यहां तो दुमिनी सी दमकती फिर कहीं और ठौर यह नहीं मालूम होता था कि वह कहीं स्थिर होकर रहैगी-मैं भी बड़े असमंजस में पड़ा कि अब क्या करूं किन्तु जब यह पूर्ण रीति से निश्चय हो गया कि यह कहीं ठहरेगी नहीं तो मन में आया कि मैं भी चल कर लोगों का तमाशा देखूं। आगे बढ़ा जो मण्डली हम को पहले मिली उसी में जा मिल बजे--देखा तो उन मनुष्यों के अंग अंग में सिवाय धोती और अंगोछा के और कुछ न था। वहां हमारे एक मित्र भी थे उन से पूछा कि ये लोग कौन हैं और क्या कर रहे हैं। उन्हों ने कहा ये ब्राह्मण लोग हैं और जो सुन्दरी आप ने देखा है उसी के फेर में ये लोग यहां इकट्ठे हैं-इनके पुरखों ने तो कभी इस स्त्री के ओर

चितया भी नहीं वरन सदा उस्की अवज्ञा करते रहे किन्तु समय के हेर फेर से विद्या और वृत्त से हीन हो अब सब यही चाहते हैं कि हम किसी तरह उसे फंसा लें। ये लोग जो इधर खड़े हैं ये पुजेरी या पंडे तथा पाधा और पुरोहित हैं उसी चंचला के फेर में ये भी व्यग्र हैं। ये यजमानों के फासना खूब जानते हैं जन्म पत्र के ग्रह कैसे ही कड़े हों सब मिला देंगे जिस बात की जैसी व्यवस्था लेनी हो लै लीजिये–तात्पर्य यह कि इन्हें विश्वास करा दीजिये कि तुम्हें उस सुन्दरी का दर्शन मिलैगा जो चाहिये सो करा लीजिये। आओ मित्र आगे चलैं। आगे बढ़े बहुत से सुफेद पोश नज़र आने लगे किसी के हाथ में खारुये से मिढ़ी बही थी किसी के हाथ में बोतल। इन्में दो चार महाशय आपस में झगड़ रहे थे हम जब वहां पहुंचे तो देखा कि ये लोग बही वालों को पकड़े खड़े हैं उन्हें गालिया दे रहे हैं और कहते हैं देखिये आप ने बही के पन्ने फाड़ डाले,क्या इतनी रकम सब डकार जाओगे। इसी बीच दो चार बोतल वाले दौड़ आये और कहने लगे बस २ झगड़ा मत करो इधर आओ हम सब झगड़ा तै किये देते हैं बस फिर क्या बोतल का काग खटा खट खुलने लगा। इन्ही से थोड़ी दूर बगल में कुछ हुस्न परस्त खूबसूरत लोग खड़े थे एक ओर रईस जादों का मजमा था एक ओर दल्लालों का। इन्में कई एक बूढ़े आपस में कुछ बात चीत कर रहे थे मन में आई इनका भी तमाशा देखैं बस चल पड़े और वहां पहुंचे तो यह सुना॥

पहिला बूढ़ा–कहो भाई आज कल क्या रंग ढंग हैं

दूसरा–भाई साहब क्या कहैं हम अपने बबुआ जी से बहुत ही दुखी हैं न मालूम उनके मन में क्या भाई है न तो मा की कुछ सुनते हैं न हमारा कुछ बश चलता है और हमें तो बुड्ढा बेवकूफ मानते हैं बात २ में यह कह देना कि आप हमारे कामों में मत दखल दीजिये आप इसे नहीं समझते तो कोई बात ही नहीं है।

हां भाई ज़माने की खूबी है एक हो तो कहैं किस के २ लिये रोवैं यहां तो मार पीट किसी तरह से दिन भर दौड़ धूप कर कुछ पैदा किया और घर पहुंचे तो कुछ न कुछ उनकी लीला सुनते ही बनता है कहिये आप के बबुआ जी का इन दिनों क्या शग़ल रहता है।

दूसरा-हम उनका रोज़ नामचा बतलाये देते हैं उसी से समझ लीजिये-सबेरे जब सूर्य निकलने का समय आया तो नौकर चद्दरे के भीतर हुक्के की सटक उनके मुह में लगा देता है थोड़ी देर तक गुड़ २ करते रहे बाद गरमी से परेशान पाखाने गये पाखाना हुआ ही नहीं अरे साहब कहिये वह रात भर की गरमी जाय कहां-आये खाट पर पड़ गये नौकर से कहा वास्कोट के जेब से पैसा लै जा निम्बू ला। नौकर गया नीबू लाया चीनी डाल कर शरबत बना पिया तो कुछ तरी पहुंची रात की गरमी कुछ कम हुई तो इतने में दो चार दोस्त आगये झट कपड़ा पहिना और घर के बाहर हुये। किसी दोस्त के यहां जाके मज़ें में पड़ गये ११ बजा १२ बजा तब आप घर को तशरीफ लाये दरवाज़े ही से कुड़बुड़ाते नौकरों को डांटते रसोई में पहुंचे खांय क्या नशे की गरमी में तो परेशान खटाई अचार वगैरह कुछ चाटा एक आध फुलका कुछ भात खा उठ खड़े हुये। कमरे में पहुंचे दो एक चिलम उड़ी कपड़ा पहिना धूप का भी कुछ रूयाल नहीं चल खड़े हुये। फिर कहीं जा-पड़ रहे जब सात बजा तो घर आये ब्यालू किया और चंपत हुए अब क्या ग्यारह बजे १२, बजे रात को घर के दरवाज़े पर लात मार रहे हैं खोलो २ ठड़े तो रहा जाता नहीं धड़ा धड़ कवाड़ा पीटना शुरू किया। आखिर को क्या करें खाट से उठ के आये किवाड़ा खोला बबुआ जी घुनघुनाते अंदर दाखिल हुये कमरे में पहुंचे ज्यों ही खाट पर लेटे तो तन बदन की खबर नहीं बस यही करीना है-रुपया मंगा भेजा न मिले तो मुनीमों के सिर बीती डांट डपट हुई कहां तक कहैं साहब बड़ा फ़जीता है॥

पहिला-हां साहब क्या कीजियेगा हम लोग भी तो जवानी देख चुके हैं पर आज कल के लौडों का अजब हाल है हमारे सपूत भी तो ऐसे ही हैं एक दिन हमने पूछा क्यों भाई यह कैसा हाल है? ये सब हरकत बुरी हैं क्यों आप दादों के नाम को बदनाम करते हो। छोड़ दो बस बिगड़ गये कहने लगे आप तो चाहते हैं कि हम मर जांय। डाक्टर ने साबित कर दिया है कि जो लोग ऐसा करेंगे उन्हें प्लेग नहीं होगा आप कुछ जानते भी हैं बस मैं चुप हो रहा कहिये क्या करता ॥

हम बूढ़ों को योंही छोड़ के आगे बढ़े अब आगे पगिया और मिरज़ई वाले नज़र आये पूरे सखी भाव में देख पड़े। कमर में कर-धनी हाथ में अनन्त गले में गोप सकड़ी पहिने इधर उधर फिरते हैं। किन्तु इनमें एक भी आदमी बात करता हुआ न दिखाई दिया सब अपने २ कामों में लगे रहते हैं कोई किसी को नहीं पूछता-रुपया ही इन लोगों का सब कुछ है पर भाई बड़े काम काजी और रुजगारी हैं। सिवाय धनोपार्जन के और कुछ जानते ही नहीं-इतना लक्ष्मी के पीछे हैरान कि घर की लक्ष्मी को भूल जाते हैं। रुपये के पीछे सब कुछ सहते हैं आज रुपया बढ़ गया कल सुबह दुकान का टाट उलटा पड़ा है भाई क्या हुआ? काम बिगड़ गया और चार दिन बाद फिर बैठ गये ॥

इन लोगों का तमाशा देख रहे थे कि कान में कुछ गाने की आवाज़ आई बस उधर ही चल पड़े कुछ दूर जब आगे बढ़े तो एक बाग़ के दरवाज़े पर पहुंचे अब शब्द अच्छी तरह सुनाई देने लगे बाग के भीतर झांकी देखा कि थोड़े से नवयुवक कोट वास्कट पहिने नकटाई गले में डाले बीच सहन में बैठे गा रहे हैं और काग फट २ खुल रहा है यह देख के मैं एक वृक्ष की आड़ में खड़ा हो गया तो सुना कि यह गान हो रहा था ॥

शराब पीओ मज़ें उड़ाओ दिलबर बगल बिठाओ।
नाच रङ्ग में उम्र बिताओ क्या नाहक पछताओ ॥

एक के ऊपर एक गिरे पड़ते हैं एक साहब बोले कि भाई तुम्हारे घर में तुम्हारा हाल कैसे खुलगया। कल आपके Father बड़े बिगड़ रहे थे इसी से तो हम रोज़ सौंफ चबा लेते हैं कि मुंह से कुछ बदबू न आवे। अमें हटाओ यह क्या रंग में भंग कर रहे हो हुआ होगा कुछ बकने दो। क्या पहिले के ऋषि मुनि नहीं पीते थे आज तो साहब क्लास में कहते थे कि हिन्दुओं के मुनिओं ने भी सुरापान किया था इन सब झगड़ों को लेके क्या मरना है जो जिस को भावे वह करे। इस में कोई दोष नहीं है खाने पीने में कहां दोष लिखा है जब तक ये पुराने लोग रहेंगें India का Regeneration नहीं हो सक्ता जब तक Conservatism छोड़ के Liberals नहीं होगे कुछ नहीं होगा। भला साहब आप ही कहिये जो जन्म पत्र शादियों में मिलाये जाते हैं इस से क्या हासिल है? इस में कोई शक नहीं कि पुराने ज़माने के लोग पल्ले दर्जे के बेवकूफ़ थे नहीं तो साहब इसके क्या माने कि हम दूसरों के साथ न खांय General Brotherhood भला फिर कैसे होगा। Theosophy अब India में introduce हो गई है अब बहुत जल्द Regeneration होगा ये बूढ़े मुंह मुंहासे बैठे ही रहेंगे। हम लोग तो Reformer हैं पुरानी बेहूदगी को हटा के New western light लावेंगे हम लोग progress तो कर ही रहें हैं देखिये कितने Conferences होने लगे सभी जात में Conference यहां तक कि Congress के साथ काशी में भी Conference होगी इतनी Progress कुछ कम है। इतना सुन के आगे बढ़े तो बड़ा भारी Pandal देखाई देने लगा वहां बहुत से लोग एकत्रित थे लेकचर हो रहा है और बड़ी तालियां बज रही हैं देखा कि कुछ दूर पर आपस में दो आदमी बात कर रहे हैं

एक-क्यों भाई आज बोलोगे?

दूसरा-हांहां क्यों नहीं?

एक-किस पर बोलोगे?

दू Widow marriage बिधिवा विवाह पर-

पं-क्यों भाई यदि तुम ठीक समझते हो तो क्यों नहीं अपनी लड़की की दूसरी शादी कर देते ॥

दू-अरे भाई बोलने के लिये हैं कि करने के लिये बोलते हैं नाम करते हैं रुपया कमाते हैं-अमल में लावें तो आप ही आज हमें जाति बाहर कर दें।

करो Reform देहु बहु लेकचर बातैं बहुत बनाओ; करो वही जो निज स्वारथ हो औरन को सिखलाओ।

अरे भाई हम लोग तो कहने वाले होते हैं अमल में तो दूसरे लोग लाते हैं यह होही रहाथा कि झन२ की आवाज़ कान में आई आंख खुली तो देखा कि सूर्य्य देवता तमतमा रहे हैं बिछौना भी नहीं है निखरहरी खाट पर पड़े हैं ॥

R. A.

हमारा सब गड़बड़ है ।

भाग्य हीन सुख मय जीवन कैसा होता है जानते ही नहीं हमरी जितनी बात कोई ऐसी नहीं जो अस्तव्यस्त तथा गड़बड़ न हो प्लेग अकाल भूकंप तो था ही ग्रीष्म के सूर्य का खरतर ताप ऐसी पीड़ा दे रहा है कि लूके लगने से लोग यमलोक की यात्रा के लिये प्रस्तुत हो रहे हैं इस जून मास में न जानिये कितने मनुष्य इसी बहाने सिधार गये कितने पड़े २ कलहर रहें हैं-"सेवा विक्रीत कायानां स्वेच्छा विहरणं कुतः-"दूसरे की सेवा में जिन्हों ने अपने शरीर को बेचडाला उन्हें फिर स्वेच्छा विहार कहां"-इसका कुछ ख़याल न कर नौकरी को सुखमय जीवन जान उस ओर झुके तो वहां भी हमारा हिन्दुस्तानी होना आड़े आया-हम चाहो जैसी लियाकत का बोझ लादे हों किन्तु गौर वर्ण न होने से हमारी सब लियाकत फीकी। ऊंचा अधिकार गौराङ्गों के लिये "रिज़र्वड"; पिसौनी के काम में कृष्णकाय-

चार वर्णों की प्रथा जैसी अब तक चली आई उसी लीक पर चले जाने को सुखमय जीवन मानते थे सो वहां भी सब गड़बड़ होगया कलवार और कुनबी तक ब्राह्मण क्षत्री बनने के यत्न में हैं ब्राह्मण सो कर्म से शूद्र होते जाते हैं। ऐसा ही चार आश्रम की प्रथा भी अस्तव्यस्त हो गई ब्रह्मचर्य का तो लोप ही हो गया बानप्रस्थ आश्रम हिमालय की कन्दरा में जा छिपा। कलि राज की कृपा से चार के अब दो ही आश्रम बच रहे गृहस्थ और सन्यास बाल्य विवाह की कुप्रथा हमें १८ वर्ष के वय तक पहुंचते पूरा गृहस्थ बना देती है नोन तेल लकड़ी की फिकिर में चूर चूर बीस बाईस वर्ष तक में कई एक कच्चे बच्चे हो गये दाने २ को मुहताज गुन ढंग कुछ सीखा नहीं क्या आप खांय क्या उन्हें खिलावें। इन्हीं गृहस्थों में कितने ऐसे निकलते हैं जो निरे ओवारा खाने को न मिला चुटिया कटाय गेरूआ रंगाय सन्यासी हो गये। यह सब गड़बड़ी ब्रह्मचर्य न पालन करने और विवाह की कुप्रथा का परिणाम है। ऐसा ही धर्म में गड़बड़ी। एक ओर सनातन धर्म दूसरी ओर ब्रह्म समाज आर्य समाज राधास्वामी नेचरिये आज़ाद आदि प्रति वर्ष जो अपना धर्म बदला चाहें तो बचपन से बुढ़ापे तक आठ दस धर्म में आकर भी हिन्दू के हिन्दू बने रह सक्ते हैं। एक ही कुनबे में कई एक भिन्न २ धर्मावलम्बी देखने में आते हैं। बाप जप होम वेद पाठ करता हुआ त्रिकाल सन्ध्या साधता है उनके चिरंजीव हैटबूट जमाय नेकटाई कसे पवित्र होटल का टोटल चुकाने में अपना जीवन सफल समझते हैं। इसी गड़बड़ी में हमारी मातृ भाषा फ़ज़ीहत में पड़ी है। जिन्हें कई जन्म मोलवी साहब की सनहकी धोते बीता वे काहे को मानेगें कि हिन्दी हमारी मातृ भाषा है श्लोक या तुलसीदास के दोहे सुनते कान फटते हैं और या ग़ज़ल बाज़ी में ज़िन्दगी का लुत्फ़ टपका पड़ता है। इत्यादि इस हताश भारत की कोई बात इस समय ऐसी नहीं है जो गड़बड़ी

से खाली है इसकी पुरानी और अब की नई सभ्यता पर खयाल दौड़ाने से रोमांच होता है। बाचक वृन्द हमने तो इस्के सम्बन्ध में जो विचारा था कह सुनाया अब आप लोग

ज़रा गौर करो इस हालत पर तब कैसी थी अब कैसी है॥

गो-द-तिवारी-

हिन्दी में नये ग्रन्थ बनने का पारितोषिक।

"श्रम या उद्यम तथा कला सम्बन्धी Industry and arts शिक्षा का प्रचार भारत में किस प्रकार हो सक्ता है" इस विषय पर जो महाशय ३१ दिसम्बर १९०५ तक हिन्दी में लेख भेजेंगे उन्में जिस्का लेख सर्वोत्तम होगा उसे काशी नागरी प्रचारणी सभा ५० परतोषिक देगी। लेख १५० पेज फुलिस्केप से कम न हो और प्रतिपृष्ठ में कम से कम ३० पंक्ति हों॥

मंत्री नागरी प्रचारिणी सभा-काशी॥

ज़िलह छत्तीस गढ़ में बालपुर पोस्ट आफिस चन्द्रपुर निवासी पाण्डेय लोचन प्रसाद नें पत्र के सहायार्थ १) भेजा हैं जिसे हम धन्यबाद पुरस्सर स्वीकार करते हैं और यह पत्र भेजा है उसे भी प्रकाशित किये देते हैं—"भाइयो आप जानते हो बून्द बून्द घड़ा भरता है विशेष कहने की कोई आवश्यकता नहीं। देखिये विचारिये कि बूढ़ेभट्ट कितने दिनो से अनेक कष्ट झेल इस पत्र को चला रहे हैं समय से पत्र न निकलने का कलङ्क भी अब न रहा तो अब आओ हम सब ग्राहक गण वित्त अनुसार इनकी सहायता का उत्साह बढ़ाय प्रदीप को चिरस्थायी करें। प्रदीप से अपना स्नेह (तैल) छोड़ने की भांति अपनी शक्ति अनुसार १) इसी लिये अर्पण किया है कि हमारे साथी इसके पढ़ने वालों को एक उदाहरण हो और वे भी हमारा अनुकरण करें"—

अङ्गुलीभिरिव केशसंचयं संनिगृह्य तिमिरं मरीचिभिः
कुड्मलीकृतसरोजलोचनं चुम्बतीव रजनीमुखं शशिः ॥५९॥

कालिदास

इस श्लोक का भाव अति गम्भीर है अनुवाद में कवि की चातुरी का पूरा आशय नही आसक्ता यह संस्कृत के साहित्य का बहुत उत्तम उदाहरण है ॥

किरिन अंगुलियों से अन्धकार केश संचय को बटोरता हुआ मुंदी हुई कुइं जिस्में नेत्र के स्थान में हैं ऐसे निशा नायिका के मुख को चन्द्रमा मानो चूम रहा है । चन्द्रोदय के वर्णन में उर्दू शायरों को ऐसा अनूठा ख़याल नहीं सूझा ॥

अंगुल्यग्रेण.यज्जप्तं यज्जप्तंमेरुलंघने ।
व्यग्रचित्तेन यज्जप्तंतत्सर्वंनिष्फलं भवेत् ॥ ६० ॥

अंगुरियों से जो जप किया गया टीला नांघते जो जपा गया चित्त की घबड़ाहट में जो जपा सो सब निष्फल है ॥

अंगुल्या कः कंपाटं प्रहंरति कुटिलो माधवः किं वसन्तो नो चक्री किं कुलालो नहि धरणिधरः किं द्विजिह्वः फणीन्द्रः । नाहं घोराहिमर्दी किमुत् खगपतिर्नोहरिः किं कपीश इत्थं राधावचोभिः प्रहरतिनवदनः पातुवश्च-क्रपाणिः ॥ ६१ ॥

कौन कुटिल केवाड़ खट खटा रहा है? हम माधव हैं । तो क्या तुम बसन्त हो? नहीं हम चक्री हैं । तो क्या कुलाल हो? नहीं धरणी धर हैं । धरणी धर तो शेष नाग हैं क्या तुम सर्प हो? नहीं हम कालिय ऐसे विषैले सर्पों के मर्दन करने वाले हैं । तब क्या पक्षिराट गरुड़ हो?

नहीं हम हरि हैं। हरि तो बानर को कहते हैं इस भांत राधा के वचन से प्रसन्न मुख कथोपकथन करते चक्रपाणि विष्णु तुम्हारी रक्षा करें॥

अंगुष्ठोदक मात्रेण भेको मकमकायते॥

मेढक अंगुष्ट मात्र जल में रह कर भी टर २ करता है। तात्पर्य यह कि छोटे लोग थोड़ी ही सी संपत्ति पाय घमण्ड में फूल उठते हैं।

अचिन्तितानि दुःखानि यथैवापान्ति देहिनाम्।
सुखान्यपि तथा मन्ये दैवमेवात्र कारणम्॥ ६२॥

पहले से कुछ नहीं सोचते ये अकस्मात् दुःख आ पड़ता है वैसा ही सुख भी तो मालूम होता है कि दैव (भाग्य) ही सुखदुःख का कारण है।

अचिन्त्यं शीलगुप्तानां चरितं कुलयोषिताम्। क-स-सा

शील से सुरक्षित कुलवन्तियों के चरित्र को कौन जान सक्ता है।

अचिन्त्यं हि फलं सूते सद्यः सुकृतपादपः। क-स-सा

सुकृत वृक्ष में जल्दी ऐसा फल फलता है जिस्का कभी खयाल भी नहीं होता।

अचिन्त्यो वत दैवेनाप्यापातः सुख दुःखयोः। क-स-सा

सुख या दुःख कब आ पड़ता सो दैव भी नहीं जान सक्ते।

अचिराधिष्ठितराज्यः शत्रु प्रकृतिष्वरूढमूलत्वात्।
नवसंरोहणशिथिलस्तरूरिव सुकरः समुद्धर्तुम्॥ ६३॥

शत्रु जिसे देश को अपने अधिकार में लाये थोड़े दिन हुये हैं प्रजा में उसकी ओर प्रेम अभी वैसा बद्ध मूल नहीं हुआ उसे उखाड़ डालना वैसा ही सहज है जैसा नया पौधा जो एक जगह से उखाड़

दूसरे ठौर लगाया जाता है तब वह शिथिल रहता है मिट्टी को उसकी जड़ नहीं पकड़ती इस दशा में उसको जड़ से निर्मूल कर देना सहज है।

अचेष्टमपि चासीनं श्रीः कंचिदुपतिष्ठति।
कश्चित् कर्माणि कुर्वन् हि नाप्राप्यमधिगच्छति ॥ ६४॥

बिना किसी तरह की चेष्टा किये भी किसी को धन आप से आप मिल जाता है। कोई बड़ा श्रम करे तौ भी जो वस्तु उस के पास नहीं है वह उनसे नहीं मिलती।

अचोद्यमानानि यथा पुष्पाणि च फलानिच।
स्वंकालं नातिवर्तन्ते तथा कर्म पुराकृतम्। ६५॥

जैसा समय पर आप से आप फूल फल पेड़ में आ जाते हैं वैसा ही पहले का किया कर्म भी फल रूप में आ उपस्थित होता है।

अच्छाच्छचन्दनरसार्द्रकरा मृगाक्ष्यो धारागृहाणि कुसुमानि चकौमुदी च। मन्दोमरुत्सुमनसः शुचिहर्म्य पृष्ठं ग्रीष्मे मदं च मदनं च विबर्द्धयन्ति ॥ ६६ ।

स्वच्छ चन्दन रस हाथों में पोते हुए मृग नयनी स्त्रियां; फौहारे; तरह २ के फूल; चान्दनी सब ओर छिटकी हो; फूलों की मीठी महक से सनी वायु मन्द २ बहती हो; साफ और सुथरे महलदुमहले ये सब गरमीं के महीनो में कामदेव को बढ़ाते हैं।

अच्छिन्नं नयनाम्बु वन्धुषु कृतं तापः सखीष्वाहितो। न्यस्तं दैन्य मशेषतः परिजने चिन्तागुरुभ्योर्पिता। अद्यः श्वः किल निर्वृतिं ब्रजति सा श्वासैः परं खिद्यते विस्रब्धो भव विप्रयोगजनितं दुःखंविभक्तं तया ॥ अमरूशतक

किसी खण्डिता नायिका वियोगिनी का सन्देसा नायक से कहता है। मरण के उपरान्त रोने के कारण निरन्तर आंसू की धारा का बहाना उसने अपने बन्धुओं को सौंप दिया; संताप सखियों को सौंपा; दीनता का भाव दासदासियों को; शोक और चिन्ता घर के बड़े लोगोंको अर्पण किया, आज या कल तक में वह परम निर्वृत्ति पाय अर्थात् मर कर सब दुःख से छूट जायगी केवल अन्त समय की स्वांस ले रही है अर्थात् जाकन्दनी का दुःख उठा रही है। विश्वास रक्खो तुम्हारे वियोग का दुःख उसने पूरी तरह पर बांट रक्खा है। श्लोक बड़ा उत्तम है। अनुवाद में कवि का भाव जैसा चाहिये नहीं आ सक्ता।

अजन्मा पुरुषस्तावद्गतासुस्तृणमेव वा।
यावन्नेषुभिरादत्ते विलुप्तमरिभिर्यशः ॥ ६८ ॥ माघ

जिस्के वीरता का यश शत्रु ने पराभव दे लोप कर दिया है वह जब तक बाण वृष्टि के द्वारा बदला चुकाने की भांति उस्से लौटा न न लिया जाय तब तक वह पुरुष मानो नहीं जन्मा जन्मा भी तो गत प्राण सा है या तृण तुल्य है।

अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत्।
गृहीतइव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥ ६९ ॥

मैं कभी बूढ़ा न हूंगा न मरूंगा यह सोच विद्या और धन का संचय करै। मौत बालों को पकड़े पटका चाहती है यह समझ धर्म करै॥

अजातमृतमूर्खाणां वरमाद्यो न चान्तिमः।
सकृद्दुःखकरावाद्यावन्तिमस्तु पदे पदे ॥ ७० ॥

नहीं होता हो के मर जाता है जिया तो मूर्ख रहा इन तीनों में पहले वाले दो भले इसलिये कि वे एक ही बार दुःख देते हैं पर मूर्ख तो पग पग में दुखदायी होता है।

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट है आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २७ } प्रयाग { अगस्त
सं० ८ } { सन् १९०५ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥≡)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०*०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

——:००:——

जि० २७
सं० ८

प्रयाग

अगस्त,
सन् १९०५ ई०

सम्पादकीय टिप्पणी ।

गण्डस्योपरि पिण्डम् बृटिश इण्डिया के इतिहास में लार्ड कर्ज़न का समय कभी न भूलेगा। भारत के भविष्य सन्तान को सदा याद रखने लायक होगा। शासन की कड़ाई में महोदय लार्ड लिटन का शासन अब तक नहीं भूला पर लार्ड कर्ज़न ने लिटन के शासन को भुला दिया। जिनकी शासन की प्रणाली किसी अंश में देश को उपकार पहुंचाने वाली नहीं हुई अस्तु वर्ष दो वर्ष के लिये हमारा इनका सरोकार रह गया था। भलाई या बुराई जो कुछ हुई थी प्रजा ने उन सबों को झेल झाल पार किया था। लोग आशा कर रहे थे कि इन के उपरान्त इनके

इन के रंधानापन्न जो कोई हों कदाचित् भाग्य बशात् कुछ अच्छे निकलैं सो सब आशा दूर हुई। लार्ड कर्ज़न और लार्ड किचनर दोनों में आपस का विरोध और भारत सेक्रेटरी मि० ब्राडरिक का किचनर की तरफ हो जाना देश के लिये अत्यन्त हानिकारक हुआ। अब किचनर मन माना फौज का खर्च हिन्दुस्तान पर लादते जायेंगे इसी से हम ने (गण्डस्योपरि पिण्डम्) कहा-जैसा किसी के बतौड़ी फूल आई हो उस्में फोड़ा निकल आवे। अच्छा तो भारत का दुर्दिन जो २ करेगा सो लाचार सब सहना ही पड़ेगा॥

लगन की भरमार—एक ओर प्लेग समेटता रहे दूसरी ओर लगन की भरमार प्रजा को काल के मुख में झोंकती जाय। अफसोस बुद्धि के दरिद्र कभी इस बात को नहीं सोचते कि इस भयानक प्लेग के उपद्रव में हम लोग काल के मुख में बैठे हुए हैं दो चार वर्ष जब तक इस महामारी का ज़ोर है ब्याह करना बन्द किये रहें। हम कई वर्ष से इस बात को देख रहे हैं कि न जानिये कितनी कोमल बालिकाएं ६ महीने भी सोहागिन न रह रंडापे का दुःख सहने को प्रस्तुत हो गईं। बहुधा लोग कहते हैं कि क्या लड़कियों का बिवाह न करें। उनको बैठा रक्खेंगे और रजो धर्म हो गया तो धर्म ही चला जायगा। पहले तो यह कि ऐसी छोटी २ बातों से धर्म भागता है तो हम ऐसे भगोड़े धर्म को कब तक पकड़ते रहेंगे। वाह रे पुराने खूसटों की अकिल। दूसरे यह कि इस में क्या कोई धर्म की हानि नहीं है कि कुलीन कन्याएं बेचारी या तो जन्म भर बालरण्डा का दुःख झेलें या चुन २ कर गुप्त व्यभिचार दूषित हो कर कुल बधू से जारिणी बनें॥

ब्राडरिक साहेब की एक नई सूझ—यह तो हमारे पाठक जानते ही होंगे कि आज कल हिन्दुस्तान के विलायत में सेक्रेटरी जिन

को (Secretary of States for India) कहते हैं मि० ब्राडरिक हैं। यों कहना चाहिये कि हिन्दुस्तान की चोटी इस समय आप ही के हाथ है और लार्ड कर्ज़न तो एक उन के चेलों में हैं। यद्यपि प्रायः गुरू गुड़ ही रह जाते हैं और चेला चीनी हो जाते हैं। जैसे कि किसी का बाप रोज़ एक कबर पर जाकर बैठता था। उस के मरने के बाद लड़के ने कब्र ही खोदना शुरू कर दिया। किसी ने पूछा क्यों भाई यह क्या करते हो? उस ने जवाब दिया कि लड़के और चेले का यही धर्म है कि जो पिता और गुरू करे उस से दो अंगुल अवश्य बढ़ कर करना चाहिये। बस यही गुरू चेले का रिश्ता ब्राडरिक और कर्ज़न में समझना चाहिये। परन्तु इस बार तो ब्राडरिक साहेब ने इस बात का पूरा सबूत दे दिया कि अभी दो एक गुर हमने ऐसे रख छोड़े हैं जो चेले को नहीं सिखाये। जैसे एक मसल मशहूर है कि एक बार एक चेले ने गुरू से लड़ने का दावा बांधा। गुरू डेढ़ सौ दांव जानता था उस में से उसने १४९ चेले को सिखला दिया था परन्तु एक बाकी रख छोड़ा था। जब गुरू चेले की कुस्ती अखाड़े में हुई तो उस ने उसी एक दांव से चेले को पछाड़ा। मि० ब्राडरिक ने तो एक नहीं वरन कई एक दांव ऐसे बचा रक्खे हैं जिन से अपने चेले को जीत सकते हैं! अब कि बार किचनर कर्ज़न के झगड़े में कर्ज़न साहब को इस बात का पूरा प्रमाण मिल गया कि अभी बूढ़े गुरू में बहुत कुछ मसाला बाकी है। दूसरी बात जिसमें ब्राडरिक साहेब ने अपनी गुरवई का नमूना दिखलाया वह अफीम के मुहकमे के सम्बन्ध का यह हुकुम है कि आगे से इस मुहकमे में फी सदी दस से अधिक नेटिव न रक्खें जांय। वाह गुरू क्यों न हो चेले ने तो यही कहा था कि सरकार हिन्दुस्तानी और अंगरेज़ों में कुछ भेद नहीं करती किन्तु हिन्दुस्तानियों को बड़े २ ओहदों पर हुकूमत करने को लियाकत ही नहीं है। गुरू ने यह गुर निकाला कि बहाना क्यों किया जाय साफ ही न कह दो कि ज़बरदस्त का ठेंगा सिर पर।

विकटोरिया महाराणी ने जिस समय हिन्दुस्तान का भार अपने ऊपर लिया था उस समय प्रोक्लेमेशन में जो हिन्दुस्तान के हर एक बड़े २ शहरों में सुनाया गया था साफ़ २ अक्षरों में यह कहा था कि हमारे नज़रों में हमारी सब प्रजा बराबर है और हमारे राज्य में ऊंची पदवी देने में रंग और जाति का कोई भेद नहीं रहेगा। परन्तु हमिलटन साहेब ने और उन के जानशीन मि० ब्राडरिक ने तथा उन के चेलों ने तो उस पुराने कागज़ में एकबारगी दियासलाई ही लगा दिया ॥

कुलीनता कौमीयत का कलंक।

हमारे में कौमीयत न आने के लिये ऊंचे कुल का जन्म भी बड़ा विघ्न है। किसी दुराचरण के समय कुलीनता का खयाल रहै तो मनुष्य बहुत से पाप अधर्म और हेयकर्मों से अपने को बचा सक्ता है। किन्तु हमारी बिगड़ी समाज में कुछ ऐसी चाल चल पड़ी है कि कुलीन को किसी निषिद्ध काम के करने में कुलीनता बहुत अच्छा आड़ मिल जाता है। हाड़ की उत्तमता का घमण्ड कभी को हमे घिनौने से घिनौना काम कर डालने का भरपूर साहस दिलाता है। दधीचि ऋषि के हाड़ का बज्र बनाय इन्द्र ने समस्त दैत्य समूह का दलन किया था इन कुलीनों के हाड़ का जो कोई औज़ार या शस्त्र बनाया जाय तो हम समझते हैं बड़े काम का हो। सम भाव आपस का एका और सहानुभूति का मूलोच्छेदी कुठार यह कुलाभिमान ही हुआ। जितने तरह के अभिमान हैं उन्में कुल का अभिमान हमें बड़ा छूछा मालूम होता है। अस्तु गुण की गरिमा हो या अधिक धन पास हो तो उसे कुल का अभिमान भी सोहता है। कितने मुफलिश कल्लांच फाके मस्त जब अपने हाड़ के उत्तमता की शेखी में ऐंठे जाते हैं तो देखते ही बनता है। जिसे "आर्थोडाक्स" या "आर्थोडाग्मा" कौलीन्य कहेंगे सो हमारी. उन्नति में

बड़ी बाधा डाल रहा है और हमें स्वच्छन्द नहीं होने देता। एक २ कदम पर ऐसी भारी २ कैद इसके साथ लग रही हैं जिस्से समाज जर्जरित और छिन्न भिन्न हो रही है। कुलीनता महानदी की कूलङ्कषा स्त्रियों के होते कुल का अभिमान नितान्त ओछापन है। क्षेमेन्द्र ने बहुत अच्छा कहा है॥

कुलाभिमानः कस्तेषां जघन्यस्थान जन्मनाम् ।
कुलकूलंकषा येषां जनन्यो निम्नगा स्त्रियः" ॥

सच है कुल की रक्षा सर्वथा स्त्रियों के आधीन है इस लिये स्त्रियों का चरित्रवती होना कुलीनता की पहिली सीढ़ी है। एक हमारे मित्र का यह सिद्धान्त हमें बहुत पसन्द आया कि जिस घराने में लड़की दे उस की बहुत कुछ जांच करने की इतनी ज़रूरत नहीं है जितनी उसकी जिस घर की लड़की हमारे यहां आवे क्योंकि हमारे भविष्य सन्तान का भला या बुरा होना इसी पर निर्भर है। "कुविवाहैः क्रियालोपैर्वेदानध्ययनेन च"। इत्यादि कई बात कुल की परख में कुविबवाह को मनु ने सब के पहले ठहराया है जिस्का यही मतलब हो सक्ता है कि शुद्ध रजवीर्य की औलाद विपत्ति की कसौटी में कसने पर कभी नहीं डगमगायगी। बाल्य विवाह से यह भी बड़ी हानि है कि "अष्टवर्षा भवेद्गौरी" के नियमानुसार केवल हाड़ मात्र देख लड़का या लड़की के लिये लोग भरे मुह गिरते हैं जैसा मुरगी खकार पर टूटै। जिस्का परिणाम देखने में आता है कि दाम्पत्य सुख हम लोगों में दुर्लभ सा हो रहा है। जब दाम्पत्य सुख न रहा तब जो औलाद होगी सो भी वही जैसा कहावत है "मा पिलंगनी बाप पिलंग तिन के लड़के रंग बरंग"। हम गर्द खोर हो गये रोज़ २ गिरते ही जाते हैं विदेशियों के मुकाबिले बद्धांजलि हो अपनी गुलामी स्वीकार करने को बड़ी प्रतिष्ठा समझते हैं किन्तु अपने देश बान्धव और बराबर के भाई के साथ जब कोई सरोकार आ पड़ेगा तब हाड़ की उत्तमता में ऐसा

ऐठेंगे कि उस बेचारे की छाया तक बरकावेंगे। भूल से उसकी छाया पड़ जाय तो प्रायश्चित करने पर भी उन के हाड़ की वह चमक फिर नहीं आने वाली। कुलीनता का सच्चा घमंड रखने वाले विदेशियों के मुकाबिले प्राण पण के साथ अपनी हेठी न सहेंगे और अपने छोटे से छोटे किसी देशी भाई को निज अंग मान उसके सेवक बनने में अपना सौभाग्य समझेंगे। बिनय अथवा शालीनता या अनौद्धत्य से मनुष्य आप से आप उचाई पर चढ़ जाता है गुरु नान्हिक देव का कथन है। नान्हिक नान्हा हूं रहै जैसी नन्हीं दूब। और घास जल जांयगी दूब खूब की खूब। कनौजियों में बाला के शुक्ल का किस्सा कौन नहीं जानता केवल दीनता ही से बाला के शुक्लों का घराना षट् कुल में दाखिल कर लिया गया Self respect आत्म गौरवरक्षा निमित्त सत्कुलाभिमान अवश्यमेव प्रशंसनीय है इस लिये कि इस तरह का अभिमान हमे नीचा काम कर से रोकता है जो अब इस समय किसी विरले सत्पुरुष में पाया जाता है ऐसे लोग वास्तव में कुलीन की पदवी के अधिकारी हैं और कुलीनों में परिगणनीय हैं। ऐसों को कुलाभिमान भी सोहता है कुल की लाज या कुल की मर्याद भी ऐसे ही सत्पुत्र के निवाहे निभती है। जिस जाति या देश में अधिकांश ऐसे लोग होते हैं वहां कौमीयत आप से आप आ जाती है। कौमीयत की गरम जोशी जिन्में या जहां पर है वहां अकुलीन भी बड़े ऊंचे कुल वाले हैं। वहां यह कभी न कहा जायगा कि कुलीनता कौमीयत का कलंक है। और यह तभी सम्भव है जब हाड़ से कुलीनता निकल जायगी। "धनेनकुलम्" धन से कुलीमता पर जैसा आज दिन ज़ोर दिया जाता है ऐसा शायद पहले न था जिन विदेशियों के संपर्क से हमारे में यह बात आ समाई कि धन होने से आदमी कुलीन हो जाता है वहां ऐसा नहीं है। वहां काम से कुलीन होने वाले जितने अधिक हैं उतने धन से कुलीन बनने वाले

नहीं! दूसरे यूरोप वाले कुछ ऐसे चलते पुरज़े व्यवसाय और उद्यम शील हैं कि वहां काम से कुलीन बनने वालों के पास धन की कमी रही नहीं जाती। कुलीनता बुद्धि और सौन्दर्य ये तीन वस्तु अपने साथ लिये २ लक्ष्मी जी डोलती फिरती हैं इस्का प्रत्यक्ष उदाहरण यूरोप ही के देशों में पाया जाता है। भारत में इस्के विपरीत है पहले तो भारत की भूमि और यहां के जल वायु से लक्ष्मी देवी को ईर्षा और घिन है कदाचित् किसी महा मोहनतंत्रोक्त किसी आकर्षण मंत्र के जपने से अपनी जेठी बहन दरिद्रता पर छोह दिखाने को लक्ष्मी आईं भी तो यूरोप के विपरीत यहां कुमति कुढंग झूठा कुलाभिमान और अन्त को नाश अपने साथ लिये आती हैं। पाठक मैं ने कुलीनता के गुण दोष सब कह सुनाये अब आप तै करलें कैसी कुलीनता कौमीयत का कलंक है॥

कवित्व संग्रह।

मैं ने अपने पुराने संग्रह में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के निज कर कमल का लिखा यह लेख पाया है। यह उन के स्फुट काव्य का संग्रह है मैं समझता हूं यह अब तक कहीं नहीं छपा इस लिये इसे प्रकाशित कर देना उचित मानता हूं॥

लै मन फेरिवो सीखे नहीं बलि नेह निबाह कियो नहि आवत॥
हेरि कै फेरि मुखै हरिचंद जू देखन हूं को हमें तरसावत॥
प्रीति पपीहन को घन सांवरे पानिय रूप कबौं न पियावत॥
जानो न नेक पिया परकी बलिहारी तऊ हौ सुजान कहावत॥१॥

तूतो मेरी प्रान प्यारी नैन में निवास करे तूही जो करैगी मान कौन को मनाइ हैं॥ तूही तो जीवन प्रान तोहि देखि जीव राखैं तूही जो रहैगी रूसि हम कहां जाइ हैं॥ कियो मान राधे महारानी आजु

पीतम सों ऐसी जो खबर कहुं सौति सुन पाइ हैं ॥ हरीचंद देखि लीजो सुनत ही दौरि दौरि निज निज द्वार बैठि बधाई बजवाई हैं ॥२॥

प्यारे जू तिहारी प्यारी अति ही गरब भरी हठ की हठीली ताहि आपु ही मनाइए ॥ नेक हूं न मानै सब भांति हौं मनाइ हारी आपु हि चलि ताहि बात बहराइए ॥ रिस भरि बैठि रही नेक हूं न बोलै ऐसी ताहि तुम प्यारे लाल काहे को रिसाइए ॥ हरीचंद जामें मानै करिए उपाय सोई जैसे बने तैसे ताहि पग पर लैआईए ॥३॥

तजि कै सब काम को तेरी गलीन में रोज ही रोज लो फेरो करै ॥
तुव बाटि विलोकत ही हरिचंद जू बैठि के सांझ सबेरो करै ॥
पै सही नहि जात भई बहुतै सो कहां कहं लौ जिय छोटो करै ॥
पिय प्यारे तिहारे लिये कबलौं अब दूतिन को मुख हेरो करै ॥४॥
लै बदनामी कलंकिन होइ चवाइन को कबलौं मुख चाहिए ॥
सास जिठानिन की इनकी उनकी कबलौं सहि के जिय दाहिये ॥
ताहू पै एती रुखाई पिया हरिचंद की हाय न क्यौं हूं सराहिये ॥
का करिए मरिए केहि भांतिन नेह को नातो कहां लौं निबाहिये ॥५॥
सांची जू झूठ कहा कहैं मोहन गोकुल की कब लौं सुधि चाहिये ॥
नासि अनेक अघादिक राख्यौ ब्रजै गिरि लैकर बेअग्र पै नाहिये ॥
त्यौं हरिचंद जू आजु लौ वेदन गोपी गनेस ब्रजेस कहाहिये ॥
प्रीति गवार की थोड़ी अली बुरी नेह को नातो कहां लौ निबाहिये ॥६॥
को करि है सरि रावरी मोहन नाम दया निधि आपु ही चाहिये ॥
धारा खुले पद ग्राह ग्रसे द्रुपदी तन लागहि ताहि उबारिये ॥
त्यों अब की हरि चंद जू को लखि डूबत बांह गही का सराहिये ॥
वाह जू वाह कहा कहिए बलि नेह को नातो कहां लौं निबाहिये ॥७॥

लोक वेद लाज करि कीजे न रुखाई एती द्रवियै पियारे नेकु दया उपजाइकै ॥ विरह बिपत्ति दुख सहि नहिं जाय कहि जाय न कछुक रहौं

रहौं मन बिलखाइकै॥ हरीचंद अब तो सहा री नहि जाय हाय भुजन बढ़ाय वेग मेरी ओर आइकै॥ विरुद निवाहि लीजे मरत जिवाइ लीजै हाहा प्रान प्यारे धाइ लीजै गर लाइकै॥ ८॥

सदा चार चवाइन के डरसे नहि नैनहूं साम्हे नचायो करै॥
हरिचंदजू वा बदनामिन के डर तेरी गलीन न आयो करै॥
निरलज्ज भई हम तोपै डरै तुमरी न चवाब चलायो करै॥
अपनी कुल कानिहूं सो बढ़ि कै तुम्हरी कुल कानि बचायो करै॥ ९॥

कोऊ कलंकिनि भाखत है कहि कामिनी हूं कोऊ नाम धरैगो॥
त्रासत हैं घर के सिगरे अब बाहरीहूं तो चवाब करैगो॥
दूतिन की इनकी उनकी हरिचंद सबै सहते ही सरैगो॥
तेरेई हेत सुन्यौ न कहा कहा औरहू का सुनिवो न परैगो॥ १०॥

मन लागत जाको जबै जिहिसों करि सोऊ दया निबहावत है॥
यह रीति अनोखि तिहारी नई अपुनो जहां दूनो दुखावत है॥
हरिचंद जू बान न राखत आपुनो दासहु ह्वै दुख पावत है॥
तुम्हरो जन होइ कै भोगै दुखै तुम्हें लाजहु हाइ न आवत है॥ ११॥

प्रेरित।

एडिटर महाशय,

कल सायंकाल के समय मैं एक प्रतिष्ठित पुस्तकालय [Library] में बैठा था जहां कम से कम ३० या ४० पत्र हिन्दी, उर्दू, और अंग्रेज़ी के टेबुल पर रक्खे थे और बहुत से महाशय कोई चश्मा लगाये, कोई अपनी टोपी छाते के हैण्डिल पर अटका के कोने में रक्खे; कोई अचकन कुरता बनियाइन के बटन खोले बदहवास हाथ में कापी लिये पंखे का काम ले रहे थे; कोई एक गीला अंगोछा कंधे पर धरे; कोई अपने सिर में चान्द के बाल मुड़ाये अनेक प्रकार से अपने २ आराम के

साथ अख़बारों की सैर कर रहे थे। मै भी एक कोने में जाकर एक तीन पाये के कुर्सी पर जिस पर बुनावट टूटने के कारण एक तखता रक्खा था जा कर बैठ गया। दैव योग से बड़े २ News papers के नीचे दवा हुआ आपका 'प्रदीप' मेरे सामने टिमटिमाता दिखाई पड़ा; मै ने उठा लिया और इधर उधर पन्ने पलटने लगा; इतने ही में तीन महाशय जो मेरी बांई ओर बैठे हुए थे मुझ पर ठट्ठा मार कर हंसने लगे। एक उन में से जिन का पाल के पके आम का सा रंग, सूर्य मुखी के वृक्ष का सा लम्बा दुबला अंग; हजामत बढ़ी हुई; आंखे गढ़हे में घुसी हुई; सिर के बाल उड़े हुए, शकल पर कुछ अजब वहशत बरस रही थी, मेरी ओर मुसकराए और आप ही आप बोले "बन्दर क्या जाने अद्रक का सबाद" यह सुन कर दूसरे साहब जिनका पेट कुरसी से डेढ़ फुट नीचे तक लटक रहा था, सब अंग से पसीना सोते फोड़ कर यहां तक बह रहा था कि कुरता बिलकुल तर हो पीठ पेट और बाहों से चिपटा हुआ था, बोले "अभी ऊंट पहाड़ के नीचे नहीं आया है" यह सुन कर मैं बड़े आश्चर्य में हुआ कि ये कौन लोग हैं जो मुझ से अपरिचित हो कर भी दिल्लगी करते हैं। मैं इसी सोच विचार में उलझा हुआ था कि उन्न में से तीसरे महाशय जिन के मुंह से पान की पीक बह रही थी मेरी ओर निहार कर बोले "क्यों जी तुमने यह अखबार [हिन्दीप्रदीप] क्यों उठाया! मैं घबड़ाया कि शायद यह यहां के कोई प्रधान कर्मचारी होंगे, तब मैंने धीरे से पूछा कि क्या इस पत्र को पढ़ने की आज्ञा नहीं है। तब वे तीनों हंसे और बोले कि "अजी यह अखबार बड़ा ही निकम्मा है न इस में कोई दवा की नोटिस, न इसमें Wanted का खाना, न घड़ियों की तसवीरें, न नये २ तैलों की तारीफें; फिर इस में हो ही क्या सकता है, गीता ईता के चुराए हुए दस पांच कवित्त या शैरें होंगी, उन में क्या रक्खा है। इसी ख्याल से हम लोग आप की भोंड़ी पसन्द पर हंस रहे थे और फ़िकरे बाज़ी कर रहे थे॥

जी ठीक है अब मै समझा, बहुत अच्छा, आप जिस कागज़ को कहिये मैं वही पढूंगा। तब वे कुछ सन्तुष्ट से हुए और मेरे हाथ में कई अखबार देके उतना ही पढ़ने को कहा जितने में दवाइयों की झूठी २ नोटिसें और तारीफें लिखी थीं। बाज़े अखबार तो ऐसे हांथ में आये कि जिन में सिवाय दवाओं की तारीफ़ के और एक बात तक पढ़ने योग्य न मिली अब मुझे यह बात मालूम करने की इच्छा हुई कि ये लोग क्यों इन दवाओं का हाल पढ़ने में ऐसे उत्सुक हैं। मैंने तब बड़ी बिनती के साथ उन से पूछा कि आप दवाओं ही के नोटिस क्यों पढ़ावते हो ! आज कल रूस जापान की लड़ाई की खबरें देखने लायक होती हैं देखिये जापान ने कैसी उन्नति......मैं इतना ही कहने पाया कि उन्हों ने मुझे चुप करा दिया और कहा इस व्यर्थ की टांय टांय में क्या रक्खा है। मैंने उन में से जिनकी उपमा सूर्य मुखी के पेड़ से की है पूछा कि आप जब तक मुझ से अपना मतलब न बतायेंगे मैं कुछ न पढूंगा। तब वह बोले हमारा हाल सुनने को तुम्हें बहुत वक़्त चाहिये। मैंने कहा आज शनिवार की रात्रि है आज से अधिक सुबीता हमें कब मिलेगा। तब वह बोले कि आप जानते हैं कि 'अंधा चाहे आंख' मेरी तबियत कुछ दिनों से बीमार रहती है दवा इलाज डाक्टरी, यूनानी. मिसरानी सब कर हारा किसी से कुछ फायदा न हुआ बलकि 'मरज़ बढ़ता गया ज्यों २ दवा की'। मैं ने पूछा आखिर बताइये आप को क्या शिकायत रहती है। वह बोले अच्छा जब आप नहीं मानते हैं तो मेरा हाल सुनिये मैं तरतीब बार कह चलता हूं ॥

पहिले मुझे कुछ दिन तक कब्ज़ की शिकायत थी उसके बाद खांसी आने लगी। मगर मैं ने उस की कुछ परवाह न की। सोहबत थी मेरी खराब पिया करता था खूब शराब, उसी की ज़्यादती से गठिया का आरज़ा हो गया, दवाएं गर्म खाई उस से जिस्म में घाव पड़ गये।

कुछ दिन बाद सब बदन की चमड़ी उखड़ने लगी। लोगों ने कहा छाजन है। ज़बान में छाले पड़ गये, चेहरे पर झाइँ सी छा गई, खैर दवा करता रहा और कुछ फायदा भी नज़र आने लगा था कि इसी दरमियान में टाईफोड बुखार (Typhoid fever) बड़े ज़ोर से आने लगा डाक्टर साहेब ने पेट में कसाफत समझ दस्त की दवा दी। (Costitution) मेरा बहुत खराब था बस डायरिया (Diarrhoea) का (attack) हो गया जिस से मैं और भी कमज़ोर होगया। कमज़ोरी पाकर तापतिल्ली ऐसी बढ़ी कि तमाम पेट उसी से घिर गया, एक फकीर ने एक जड़ी बताई जिससे कुछ फुरसत हुई थी कि थाईसिस के आसार शुरू होगये उस्के वास्ते सैकड़ों अखबार देखे मगर किसी में दवा का नोटिस न पाकर समझ लिया कि मरने के दिन करीब आगये लेकिन कुछ मर्ज़ और इस जिस्म में पैदा होने वाले थे इस वजह से एक नुसखा बड़ा मुजर्रब मिल गया जिस से करीब एक हफ़्ते तबियत अच्छी रही। मगर अफसोस बद नसीबी ने अच्छा न रहने दिया; यकायक दमा पैदा हो गया और आंखों में धुन्ध सा छा गया। बरसात. पाकर नासूर भी हरा हो गया। अब मेरा जी बहुत दुखी रहने लगा और मैं ने झुंझला कर परहेज़ करना छोड़ दिया। आम खूब खाने लगा और उसने ऐसी गरमी की कि पैरों में पिरकियां निकल आईं और एक फोड़ा पीठ में निकल आया इधर बवासीर भी खून देने लगी और उसी के पास एक ज़ख्म और होगया जिस से मुझे बहुत फिक्र हुआ। वैद्य ने उसे भगन्दर बताया और कहा कि इसका इलाज ही नहीं। यह सुन मुझे मिर्गी आ गई और यह जी में आया कि यहां से हवा बदलने को पहाड़ पर चले जांय लेकिन रतौंधी के डर के मारे मकान से अकेला नहीं जा सकता था। दूसरे पारसाल पहाड़ को जाते हुए रास्ते में लू लग गई थी और वहां जाकर भी पहाड़ी पानी मुआफिक न आया इसी से अपान वायु भी बिगड़ गई और पहाड़ी चढ़ाई के कारण सांस भी फूलने लगी

इसी से पहाड़ी देश का आना छोड़ दिया। अब जब से प्रयाग जी आये तब से कुछ हाइड्रोसील के आसार मालूम होते हैं। उनका यह आत्म वृत्तान्त सुन मेरा जी ऊब गया। तब मैं ने कहा कि वाह रे बहादुर हिन्दी भाषा के वर्ण माला का कोई ही अभागा अक्षर बचा होगा जिस के नाम की बीमारी इन में न होगी। इन्हें आदमी कहें या अस्पताल। तब मैं ने उन से कहा कि महाशय छई रोग अभी बाकी है। यह सुन वे कुछ मुसकराए और बोले कि आप दिल्लगी मत कीजिये, बल्कि कोई ऐसी तरकीब निकालिये जिस में तबियत अच्छी हो और कुछ रुपया भी पैदा करें क्योंकि घर में चूहे तक फाका करते हैं। मैं ने उन से यही कहा कि आप 'हिन्दीप्रदीप' के एडिटर महाशय की शरण लीजिये वे आप का अति उत्तम जीवन चरित्र लिख कर लाहौर, कलकत्ता आगरा, इत्यादि शहरों के Medical Callege को Standard करा के आप को लाभ पहुंचा सकेंगे॥

वृ-मो कूल-

पढ़ने वालों के समझ की परख।

एक समय की बात है कि एक बुढ़िया के घर दो भाई मेहमान आकर रहे वे बड़े बलवान् थे। दोनों कुछ न कुछ सदा काम किया ही करते थे और समय को कभी व्यर्थ न गवांते। बुढ़िया मेहनत कर उन दोनों के खाने पीने के लिये सामान इकट्ठा कर लाती थी। और इन लोगों को भी सदा यही शिक्षा दिया करती थी कि बेटा व्यर्थ समय न गवाना चाहिये कुछ न कुछ काम में लगे रहना उचित है। इसी नसीहत पर ये दोनों कुछ न कुछ सदा करते ही थे और यदि कुछ काम न मिला तो आपस ही में लड़ाई करते थे जिस में यह कोई न कहे

कि खाली बैठे हैं। एक दिन की बात है कि उन्हें कुछ काम न मिला तब छोटा बड़े से बोला "भाई! खाली मवाश कुछ किया कर बतलावो आज क्या करें"। बड़ा बोला "आज तो कोई ऐसी बात भी नहीं सूझती कि जिसके लिये हमी तुम लड़ें। बड़ी देर तक दोनों भाई इसी सोच में रहे कि क्या किया जाय आखिर छोटा बोल उठा भाई! हम ने एक तरकीब निकाली है कि हम तुम दोनों चल कर इस बुढ़िया के दो टुकड़े करैं और एक २ टुकड़ा लाद कर गङ्गा में प्रवाह कर आवैं। बस आज भर के लिये इतना काम काफ़ी है"। बड़ा भाई भी इस बात पर सहमत हुआ और दोनों मिल बुढ़िया के पास गये और बोले "माता आज हमें कुछ काम करने को नहीं है और खाली बैठना बड़ा पाप है इस से आज हम तुम्हें दो टुकड़े करेंगे और एक २ टुकड़ा लेकर बहा आवेंगे"। बुढ़िया डर गई और कहने लगी "तुम्हें मेहमान रखने का क्या यही फल है? और क्या काम करना इसी को कहते हैं?" परन्तु उन दोनों ने एक न सुना बुढ़िया चिल्लाती रह गई और उन्हों ने उसे काट डाला॥

A. S.

बंबई की बीसवीं कानग्रेस की रिपोर्ट।

बंबई की बीसवीं कानग्रेस की रिपोर्ट हमारे पास आई है। इस ३०० पृष्ठ की छपी पुस्तक में बम्बई के कानग्रेस का कुल हाल और जो स्पीचें उसमें दी गईं उनका उल्लेख है। ऐसा कौन कायर होगा जो भारत भूमि में जन्म ले देशोपकार का कुछ भी हौसिला रखता हुआ इस रिपोर्ट को पढ़ देश की दीन दशा पर खेद न करे। परन्तु इस खेद के साथ ही साथ इस बात का भी दृढ़ विश्वास हो जाता है कि ऐसी गिरी दशा में भी इस प्राचीन भूमि के ऐसे बीर पुत्र जीवित हैं जो

तन मन धन से और लाखों कष्ट सह कर भी अपनी मातृ भूमि की सेवा में प्रस्तुत हैं। बहुत लोग ऐसे हैं जो स्वयं तो कुछ काम नहीं करते किन्तु जब दूसरों को काम करते देखते हैं तो ज़ीट उड़ाते हैं। इसी खिलकत के कुछ विदेशी और कुछ हां हुज़ूर करने वाले स्वदेशी भाइयों ने भी कानग्रेस को निरा तमाशा मान रक्खा है। उनका कथन है कि कानग्रेस में जो खर्च होता है सब व्यर्थ है। इस आक्षेप का पूरा जवाब सर फ़ीरोज़ शाह मेहता ने अपनी गंभीर और वावदूक वक्तृता में जिस्के एक २ शब्दों में देशानुराग की चोट और जोश टपक रहा है अच्छी तरह प्रतिपक्षियों का मुंह सदा के लिये बन्द कर दिया है। फ़ीरोज़ शाह के कहने के अनुसार विपक्षियों का यह आक्षेप कि कानग्रेस के तमाशे में व्यर्थ रुपया खर्च होता है ऐसा ही पोच है जैसा सर्कारी कर्मचारियों का यह कहना कि खेतिहर हमारे देश के इस कारण निर्द्धन हो जाते हैं कि अपना धन शादियों के जलूश में उड़ा देते हैं। किन्तु बात असिल में यह है कि ऐसे अवसरों में खेतिहरों का अपव्यय केवल इतना ही कहा जा सक्ता है कि वे दो चार चान्दी के गहने बनवा लेते हैं; दो चार पसेरी गुड़ खर्च कर डालते हैं और हुडुक और डफले बजाय दो एक दिन भड़ २ मचाते रहते हैं। यही हाल कानग्रेस का है पंडाल शंगमरमर का कोई महल नहीं तैयार किया जाता जिस्में लाखों रुपये फूक दिये जांय कानग्रेस का पंडाल लम्बे २ बांस और कनातों का बना रहता है; सजावट उसकी केवल इतनी ही रहती है कि रंगीन कपड़ों के टुकड़े इधर उधर लटका दिये जाते हैं। डेलिगेट भी इस तरह ठहराये जाते हैं मानो फौज के खेमों में टिके हों। कोई २ ऐसा भी कहते हैं कि डेलिगेटों के आने जाने में हज़ारों रुपये विलट जाते हैं किन्तु प्रतिपक्षियों का यह कथन भी सयुक्तिक नहीं है। कानग्रेस में शरीक होने वाले वहां न भी आते तो बड़े दिनकी तातील का सुख उठाने और जी बहलाने को कहीं न कहीं अवश्य जाते। मान लिया जाय कि उनके सब रुपये कानग्रेस ही के लिये

खर्च हुए तौ इतना क्या यदि इससे बहुत अधिक ऐसे भले काम के लिये खर्च हो जो कानग्रेस कर रहा है तो वह भी थोड़ा होगा। देश के उद्धार के लिये रुपया क्या प्राण तक दे डालने में हम लोगों को प्रस्तुत रहना चाहिये। खेद है कि इस प्रकार का जोश इस देश के लोगों में नहीं हैं। जिन्में है उनका नम्बर अभी बहुत थोड़ा है। सच तो यों है कि देश का उद्धार तभी होगा जब देश के सच्चे भक्त अपनी जान हाथ में रख देश के उद्धार और भलाई के लिये उठ खड़े होंगे॥

कानग्रेस के लाभ गिनाने का अवसर यहां नहीं है। ऐसा ही कोई देश का द्रोही होगा जो इस्के लाभ को मुक्त कण्ठ स्वीकार न करे। सड़क के किनारे वृक्ष की एक टेहनी में लगे गुलाब को देख ग्रामीण उसे एक साधारण फूल समझेगा परन्तु उसकी कदर समझने वाले के चित्त में उसे देख न जानिये क्या २ भाव उठते हैं। यही हाल इस कानग्रेस का भी है। इस्में सन्देह नहीं लोगों को यह दृढ़ निश्चय होगया है कि इस्के द्वारा हिन्दुस्तान का सुधार अवश्य हो सक्ता है, एक दिन ऐसा आवेगा कि देश का देश उत्तेजित हो अपने उद्धार में उठ खड़ा होगा। ५ महीने बाद इस्का इक्कीसवां अधिवेशन बनारस में होने वाला है। आशा है इस प्रान्त के लोग यह रिपोर्ट पढ़ ऐसा ही यत्न करैंगे जिस्में इस शुभ काम में पूरी सफलता प्राप्त हो। यद्यपि प्रत्यक्ष में गवर्नमेंट के कर्मचारियों पर इसका कुछ भी असर नहीं पड़ते देखा जाता तौ भी इस्के पक्षपातियों को हिम्मत न हारना चाहिये किन्तु यह विचार कर कि कोई बड़ी इमारत एक ही दिन में नहीं बन कर तैयार हो जाती उस्के तैयार करने का उद्योग हम करते रहें तो एक दिन अवश्य कृतकार्य होंगे। पोलिटिकल बातों के समझने का यह वह द्वार है जिस्से नव युवकों की नस २ में ऐसा जोश पैदा हो कि वे भारत का उद्धार कर ही के छोड़ैं॥

बन्दर सभा महा काव्य ।

(तीन चुटकिन मां)

पहिल चुटकी ।

एक बात अद्भुत हम कहहीं । यारो सुनियो कान लगाय ॥
इतने दिन वहिका भे बीते । अता पता कोउ सकै न पाय ॥१॥
कलियुग द्वापर त्रेता सतयुग । इन सब से पहिले की बात ।
भये न ईश पयम्बर देवा । और रही नहि जात अरु पांत ॥२॥
लाख २ जोजन कै बसती । बने बहुत बड़वार मकान ।
बड़े २ ऊंचे तरु जामे । टीले बिकट पहाड़ महान ॥३॥
यही पेड़ टीलन कै चोटी । बसत रहे बन्दर बलवान ।
नाम देस कै गढ़ बन्दर औ । मल्लूसा राजा कै नाम ॥ ४ ॥
सारा देस उजाड़ पड़ा रह । दीखत कछू न कहूं निसान ।
ऊंची चोटी थलन माहि बस । बनी इमारत आलीसान ॥ ५ ॥
इनहि घरन के बीच बीच महं । लम्बे लम्बे बांस दिखांय ।
वाही ऊपर हवा खान को । घूमन सिगरे बन्दर जांय ॥ ६॥
घर में टेबुल, मेज सजे हैं । उन पै चुने अनेक गिलास ।
तामें टूटे फूट बहुत हैं । और धरी बोतल हैं पास ॥ ७ ॥
भांत भांत सज धज के कमरे । तितिर वितिर पै सबै समान ।
यहि ते एक निमिख में जानो । यहां बसैं बन्दर बलवान ॥ ८ ॥
चिलमन परदे रंग ढंग के । खिंचे द्वार द्वार के बीच ।
फठे चिथे पै बहुत ठौर वे । देत गवाही आदत नीच ॥ ९ ॥
यक मैदान म भारी तखता । वापै चुनी रकाबी पास ।
कुर्सिन पै बहु बानर बैठे । कलछिन लै लै खावैं मास ॥१०॥
यह कौतुक अचरज हम देखा । पूछा एक बानर से जाय ।
बोला बानर सुनो विदेसी । यह सब केवल मांसै खांय ॥११॥

घासौ पत्ती खाय लेत हैं। कबहूं लोहू करैं अहार।
बानर मिलै वहू का खावैं। खान पान को नहीं विचार।
यह बातैं कोउ बिरला समझै। यहं की लीला अपरम्पार॥ १२॥

दूसर चुटकी।

हियां की बातैं हियनै रह गईं। अब आगे कै सुनो हवाल।
गढ़ बन्दर के देस बीच मां। पड़ा रहा एक खेत बिसाल॥१३॥
सौ जोजन लम्बा अरु चौड़ा। अरबन बानर जांय समाय।
तामे बानर भये इकट्ठा। जौन बचे वे आवैं धाय॥ १४॥
जब सगरा मैदनवां भरिगा। पूंछै टोपी लगीं दिखाय।
सब के सब कुरसिन से उछले। हांथ पांव से ताल बजाय॥ १५॥
इतने में मल्लूसा आये। बंदरी और मुसाहब साथ।
बंदरी बड़ी चमक चटकीली। थामे मल्लूसा को हांथ॥ १६॥
ओढ़े गउन लगाये टोपी। हीरे जड़े पांत के पांत।
मटकत आवत भाव दिखावत। आखिर मेहरारू की जात॥ १७॥
मल्लूसा झट कुर्सी चढ़िगे। धरी एक ऊंचे मस्तूल।
रानी भी दुम झाड़ बगल भई। तब बोले बातें निरमूल॥ १८॥

तीसर चुटकी।

"सुनो मुसाहब सबै सभ्यगन। अरु राजे फौजी कपतान।
न्याय धर्म उद्यम कौंसिल के। शस्त्र बिदेस कार मेंबरान॥१९॥
हम राजा इस गढ़ बन्दर के। कैसर किङ्ग ज़ार सुलतान।
हमरै हुकम हियन पर चालै। जानो हमै ईस रहिमान॥२०॥
आज बरस दिन फेर मिले हम। तुम्है सुनावैं निज करतूत।
कठपुतरी सम प्रजा नचावैं। फैलावैं स्वारथ के दूत॥ २१॥
यह तुम सब तो जानत हइहौ। आपन एकै यही उसूल।
जौन भांत से रुपया आवे। वही धर्म न्याय को मूल॥ २२॥

येहू बात बिदित संसारै । एक जात रहती यहि ठौर ।
जिन के दुम उम तनिकौ नाहीं । हमरा लाल रंग उन और ॥२३॥
ग्रेही ते दुइ न्याय धर्म दुइ । दुहरी सगरी बात हमार ।
मुह कुछ धरे पेट कुछ धारैं । दगा झूठ को करैं अहार ।
येहू से जो काम न निकलै । तो फिर कैद मार फिटकार ॥२४॥
पांच बड्डु बड्डु भागन मां । देस भार की भई तकसीम ।
पहिले न्याय—बनाया अचरज । पी अफीम सब नीम हकीम ॥२५॥
गणाना करौं कहा यह कलकी । रुपया असकै खींचे पास ।
धनी दीन पण्डित अरु मूरख । सबही फंस गये याके फांस ॥२६॥
तेहि पर वेदुम के जे बानर । उन का अस कै जकड़ा जाय ।
तनिकौ हांथ पांव फटकारैं । हन कै थप्पड़ दिया लगाय ॥२७॥
यह तो बन्दर न्याय बखाना । एक और कुञ्जी है हांथ ।
न्याय वाय सब ही के ऊपर । सबहि घुमावे अपने साथ ॥२८॥
ओकर नाम गुपुत राखैंगे । वह तो भीतर मन की बात ।
ऊपर हमरी खुली कचहरी । रुपया देत न्याय लै जात ॥ २९ ॥
दूसर धर्म बड़ा—फन्दा यह । जो जो हम से करैं विरोध ।
जहां ग्लास एक हम से लेवैं । आवै तुरतहि उन कहं बोध ॥३०॥
सबहि लड़ाई छूट जात है । लेकचर देन जांय सब भूल ।
झूठी दुमहु लगाय लेत हैं । औरहु बातैं करैं फजूल ॥ ३१ ॥
जूठहु खाय नहीं सकुचावैं । पूजहिं खर जो हमरा देव ।
खरही खर चिल्लात फिरत हैं । लेव स्वर्ग मुफतै लै लेव ॥ ३२ ॥
बिना कसाले का बिहिस्त है । ऐसन अवसर फिर नहिं आय ।
हमरो खर जो चढ़ा अकासा । सब कोउ पूंछ थाम चढ़ि जाय॥३३॥
जो नहि माने बात हमारी । ऊ बस सीधा नरकहि धाय ।
चार पांव से चलन न पइहै । दुहयै से घिसलावत जाय ॥ ३४ ॥
हुआं न कूदन को तरु मिलि है । और न मिलिहै बंदरी संग ।
कपड़ी चीथे का नहि मिलि है । नहीं घास भास कै रंग ॥ ३५ ॥

मरन बाद इन सुख कहं चाहौ। हमरी बात करौ बिस्वास।
पढ़नौ लिखनौ पूजन छांड़ौ। हमरे खर की धारौ आस ॥३६॥
यही भांत हम धरम चलावा। दूसर के सिखवन के काज।
धन स्त्री अरु मान लोभ दे। फांसा जेहि नहिं सकता भाज।
आपन देव एक रुपया पै। जासे बाढ़ै हमरा साज ॥ ३७ ॥
तीसर उद्यम भाग गिनाऊं। एकर केवल मनसा येह।
जितना धन अन पैदा होवै। सब ढोइ आवै हमरे गेह ॥३८॥
जितने बेदुम के हैं बानर। उन का हरी हरी दिखलाय।
चूनी भूसी उन्हें फेंक दें। बढ़िया माल लेंय गठियाय ॥३९॥
यही भाग उद्यम का ऐसा। जेहि मा रचैं किताबी जाल"।
और देस के बानर जेहि से। नहिं जाने हमरा अहवाल ॥४०॥
ऊपर से यह परगट करहीं। सगरी परजा बड़ी अमीर।
लीन लंगोटी छीन दीन कै। हम जानहिं वे फिरैं फकीर ॥४१॥
मरैं भूख से जाड़े से वा। हम से यहि से कुछ नहिं काम।
हम का खाली मिलै रुपैया। हम घर बैठ करैं आराम ॥ ४२ ॥
चौथा बड़ा डिपार्टमेंट है। करैं विदेसन को व्यवहार।
रीछ स्यार सूकर बसते जहं। हम तन जिनके हैं सरदार ॥४३॥
कबहु आंख दाँत दिखलावैं। लैं डराय बस काम निकाल।
कबहु नम्र होय सीख सुनावैं। रचैं बात कै जाल कराल ॥४४॥
ऐसे वैसे तो डर जावैं। वा फंस जावैं हमरे जाल।
जो भे तनकु अकड़ने वाले। तिन के लिये अनेकन चाल ॥४५॥
जासूसी में निपुण सिपाही। तब लूटैं साधन को कार।
दगा झूठ विष मद मेहरारू। और छिपी तीखी तलवार ॥४६॥
एते सरंजाम हैं पूरे। पै येहू जो खाली जांय।
पंचवा भाग करै तब हलचल। नये शस्त्र तबही दिखलांय ॥४७॥
सब से बड़ी शस्त्र की कौंसिल। यहै राज्य को हमरे मूल।

यहिके बिगड़े सबै चातुरी। एकै छन में जावै भूल ॥ ४८ ॥
याही ते जे लड़ने वाले। उन कै हम बहु करते मान।
सब से घूस रुपैया लावैं। इनही को बस देते दान ॥ ४९ ॥
बड़े वीर हमरे यह सैनिक। पहिले दुम से करैं प्रहार।
दुम जो कटै भाज फिर जावैं। गढ़ में घुस करवैं ललकार ॥५०॥
पत्थर की तलवार बनी है। मट्टी की गोली बारूद।
जहां चलै यह सैन्य हमारी। और लगावै पैंकी कूद ॥ ५१ ॥
बिरवन पेड़न तुरतहि नासैं। धूम मचावैं लूटैं माल।
सीधे जीवन मारैं काटैं। हमहूं सुन २ होंय निहाल॥ ५२ ॥
अब हम लेकचर खतम करत हैं। बैठैं अपनी कुर्सी जाय।
तबही ताली ऐसी बाजी। कानौ की चमड़ी उड़िजाय ॥५३॥
फिर एक मोटा बानर बोला। धन्यबाद हम दैंय पुकार।
मल्लूसा को जिन की परजा। जो धन राखैं औरन मार।
जेहि में हम कहं पालैं पोखैं। और बढ़ै हम कुल परिवार ॥५४॥
इतना कह वह बानर बैठा। सभा उठी भागी चहुं ओर।
मैं हूं आल्हा गावत भाग्यों। जे जे सुनिन कीन्ह संग मोर॥५५॥

प्रयाग २४ जुलाई १९०५. A. S.

भ्रातृ शिक्षा।

आवहु यहां सुनहु मन दैके। शिक्षा हमरी हे प्रिय भ्रात ॥
प्रातः उठि सुठि निर्मल जल से। धोवहु अपने मुख अरु गात ॥१॥
पीछे बैठि ध्यान तुम करहू। जग पालक घालक करतार ॥
जाकी कृपा पंगु गिरि नांघे। अन्ध जात है राह अपार ॥२॥
बिना कृपा उसकी हे भाई। छोटहु काम होत है नांहि ॥
कृपा समुन्दर हाथी नांघै। बंध चीटी कै पैरन मांहि ॥३॥

यहि कारण हे मेरे प्यारो । सुमिर रात दिन उसका नाम ॥
कार्य सबहि में उसका डर रखि । करहु भरोसा केवल राम ॥४॥
पीछे करहु नमन माता पितु । जो हैं तन के सिरजन हार ॥
एहो भाई उनकी आसिस । संकट से करती निस्तार ॥५॥
आज्ञा उनकी कभी न टारो । कीधों उलट जांय संसार ॥
देखहु दशरथ पितु अज्ञा से । पुत्र राम सहे दुःख अपार ॥६॥
तब तुम जावहु चटशाला को । श्री गुरु चरण नवावहु माथ ॥
हेल मेल से विद्या पढ़ कर । आवहु सब मिलि एकहि साथ ॥७॥
कभी नहीं आपस में लरिये । जो लड़ता सो बुरा कहात ॥
प्रेम परस्पर राखो ऐसे । जैसे राम लखन से भ्रात ॥८॥
स्नान ध्यान करि श्री शिव पूजहु । औ रामायण के कर पाठ ॥
जाके पाठ मात्र से भाई । श्री हनुमत देते दुख काट ॥९॥
मीठी बोल सदा ही बोलो । कडुई बोलिन में बड़ हान ॥
कोयल सब की मान पात्र है । कौआ नहि कोइ करता मान ॥१०॥
जब घर नोन साग को नहि है । तदपि न मांगहु हाथ पसार ॥
मांगब अति हलकाई भाई । मांगत वामन भय करतार ॥११॥
पर धन के लेने की इच्छा । करहु नहीं तुम मेरे भाय ॥
पर धन ढेला· माटी सम है । तासों कछू न काम सराय ॥१२॥
यदि तुम चाहत हौ धन भाई । आलस त्यागहु दुष्ट समान ॥
आलस महा शत्रु मानुष का । पाय न नर आलसि धन धाम ॥१३॥
करहु परिश्रम आलस त्याग । मन बांछित फल लागै हांथ ॥
जग नहि मित्र परिश्रम के सम । वाहि सदा राखो निज साथ ॥१४॥
नहीं क्रोध सम रिपु जग दूसर । पीछे क्रोधी पावत ताप ॥
क्रोधी पुरुष क्रोध के मारे । होके पागल करता पाप ॥१५॥
पालन ब्रह्मचर्य का करहू । बिन जिसके सबही नसजाय ॥
मन को जीत इन्द्रियन जीतहु । मन जीते सब ही बन जाय ॥१६॥
काम क्रोध अरु स्वाद लोभ अति । निद्रा सेवा छाड़ो · भाय ॥

पांचो अयगुण दूर करैं जे। वेही सांचे छात्र कहांय ॥१७॥
दुःख किसी को कभी न देवहु। दया मया रख सब के साथ॥
निज २ देह सबहि को प्यारी। हत्या जीव न कर निज हाथ ॥१८॥
दुष्टन की संगति जिन करहू। वे हैं विष के कुम्भ समान॥
दूध भरा जाके मुखड़े पर। अन्तर हालाहलहि महान ॥१९॥
सत्य बचन तुम प्रण करि भाखहु। झूठ कबहु जिन बोलहु भ्रात॥
नहीं सत्य सम पुन्य जगत में। और असत सम पाप लखात। २०॥
त्यागहु लोभ महा दुख दायी। लोभी जन पावत नहि शान्ति॥
धन पाने की तृष्णा उसको। देती महादुःख अरु भ्रान्ति ॥२१॥
उसके घर तुम कभी न जाओ। जो नहि करता आदर मान॥
होने दो राजा को राजा। भाई दुखदायी अपमान ।२२।
जिसके घर नहि भूजीं भांग। परप्रेम पूर्ण वह करता मान॥
तुम को वहां अवस है जाना। उसकी सूखी रोटी खान ॥२३॥
करो भलाई सब की भाई। धर मन में जग परउपकार॥
जननी पुत्रवती है जिसका। करता बेटा पर उपकार ॥२४॥
धन यौवन का गरब न करना। है यह नर तन अतिहि असार॥
काल नित्य नाचत है सिर पर। याते करहु धर्म आचार ॥२५॥
सब जग छाया अहै दोष गुण। कोई उन से वंचित नाहि॥
दोष त्याग गुनही कंह गहहू। गिने जाहु सत्पुरुषन माहि ॥२६॥
बड़ी भलाई लघुताई मंह। नहीं बड़ाई चाहहु तात॥
देखो दुतिया लघु चन्दा को। सारा जगत नवावत माथ ।२७।

लोचन प्रसाद पाण्डेय रायगढ़—

नई २ खबरें।

हिन्दुस्तान से रेल की एक नई लाइन खुलने वाली है जो सीधे स्वर्ग को जायगी जिस्में केवल वे ही लोग जाने पावेंगे जो अपनी ज़िन्दगी में कई मज़हब बदल चुके हों!

बंगाल की खाड़ी के पश्चिमीय भाग में एक नबी पैदा हुये हैं जो कई तरह की नबूअत कर गये हैं। पहिली नबूअत यह कि विधवा विवाह का प्रचार हो और बाल्य विवाह किसी तरह न रोका जाय। दूसरी नबूअत यह कि कुल विरहमन अपनी बछिया पुजौनी विद्या को छोड़ बैठें और रातो दिन बइबिल या कुरान रटते रहैं। तीसरी नबूअत यह कि गोरे या काले रंग का भेद न मान हिन्दू मात्र कोट बूट धारियों की खुशामद में लगे रहैं। जो कोई इस्के अनुसार चलेगा उस्को हज़रत शैतान की ओर से गन्दी से गन्दी जगह की म्युनिसिपिलिटी की मेंम्बरी मिल जायगी और खिलाफ़ चलने वाले को या तो सहारा जंगल की हवा खिलाई जायगी नहीं तो पागल कुत्ते से वह कटाया जायगा।

लन्दन नगर में दस हज़ार फीट दायरा का एक बेलून बड़े बारीक कागज़ का मिस्टर फूल्स्केप ने तैयार किया है इस्में दो लाख पचपन हज़ार साढ़े बाइस लड़कों के बैठने की जगह है–यह बेलून लंडन से उड़ कर सीधा हिन्दुस्तान को आवेगा और लड़के कलकत्ते में उतरतेही पार्सल में बन्द कर जुदे २ स्टेशनों में डिसप्याच कर दिये जांयगे–जिन्में ज़ियादहतर पुलीस के सुपरिंटेंडेन्ट होंगे–कुछ इण्डियन एज्युकेशनल सरविस में भेज दिये जांयगे और जो बच जांयगे उन के लिये सरकार एक नया कमिशन बैठाय उन को जगह देने की तरकीब सोंचैगी–

उजड्डनगर परगनह बसन्तपुर ज़िला अहमकाबाद।

समय धुन्धला है यहां के सेठ सोढ़रदास की बन्ध्या स्त्री से एक कन्या जन्मी जिस्की गुड़िया के ब्याह में सेठ ने बड़ा उत्सव मनाया–इस महोत्सव में देश देशान्तर के घोंघा पण्डित बुलाये गये जो चार दिन तक तीतर बटेर सा खूब लड़े–पश्चात् सेठ साहब ने उन पण्डितों को एक २ पसेरी सुंघनी और एक २ डलिया भांग दे खूब सत्कार किया–एक संबाद दाता–

———

साहाय्य ।

पं० जगन्नाथ राजवैद्य ने हमारे पत्र के लेख पर प्रसन्न हो ५) हमें इस के सहायार्थ दिये हैं जिसे हम धन्यबाद पूर्वक स्वीकार करते हैं- हमे विशेष हर्ष इस बात का है कि उक्त पण्डित जी ने हमारे क्षुद्र लेख का इतना आदर किया- हमारी निर्जीव समाज में थोड़े लोग भी पण्डित जी के समान रसज्ञ होते तो हमे हतोत्साह होने का कभी अवसरही न मिलता—

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक-विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २७ } प्रयाग { सितम्बर
सं० ९ } { सन् १९०५ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार

पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०•०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज ३)

——:००:——

हिन्दीप्रदीप

जि० २७ सं० ६ — प्रयाग — सितम्बर, सन् १९०५ ई०

दुर्लभः कार्य कर्ता ।

यूरोप के सभ्य देश और हिन्दुस्तान से इस एक बात में बड़ा अन्तर है कि यहां ऐसा कार्य कर्ता दुर्लभ है जो सब लोगों का विश्वास पात्र हो। यहां सौ आदमियों में एक भी ऐसा न मिलैगा और देशों में सौ में ५० ऐसे निकल आवेंगे जिन पर अनेक मनुष्यों का वरन कुल कमेटी या ऐसोशियेशन का दृढ़ विश्वास हो और लोगों को निश्चय हो कि ऐसे मनुष्य से कभी धोखा न होगा। यह इसी का परिणाम है कि अमरिका और यूरोप के सुसंपन्न देशों में न जानिये कितनी ऐसी जमात हैं जिन्मे लाखों और करोड़ों का काम केवल एक

आदमी के विश्वास और इन्तिज़ाम से चल रहा है। एक आदमी से दस आदमी की ताकत बहुत अधिक होती है जिस बोझ को १० मनुष्य मिलउठावेंगे वह बहुत ही हल्का हो जायगा। न केवल १० आदमी की ताक़त ही एक रहैगी बरन १० मन और १० मस्तिष्क जिस्में मिड़ जायंगे उस्का सम्हलना और दिन प्रति दिन उस्से तरक्की का होना कौन सी बड़ी बात है। हमारे यहां १० मन एक होना जानते ही नहीं यही कारण है कि यहां "पणबन्ध" कम्पनी का काम नहीं चलता Self interest खुद गरज़ी का यहां तक ज़ोर है कि एक आदमी चाहो कैसा ही दुरूह और कठिन से कठिन काम हो उस्का कुल बोझ अपने ऊपर उठाय उस काम का पूरा अंजाम कर डालेगा। दस आदमियों का एक होना दूर रहे आपस में एक दूसरे की स्पर्द्धा न होती तौभी बड़ा काम होता धनियों में एक दूसरे की स्पर्द्धा देश का बड़ा सत्यानाश कर रही है। अफ़सोस जहां के इतिहासों में समुद्र मथन तथा चण्डी पाठ में समस्त देवताओं की शक्ति का एक हो जाना आदि कितने ऐसे रूपक गढ़े गये हैं वहां अब दो दिल के एक होने के लिये भी हम लालायित हो रहे हैं हमारे बिगड़ जाने की पराकाष्ठा है। नहीं तो इस दीन दशा पर भी धन की कमती नहीं न बुद्धि या व्यवसाय में हम अन्य देशियों से किसी बात में हेठे हैं पर आपस की सहानुभूति और मिल कर के कुछ काम करना नहीं जानते इस्से सब बिगड़ा है और यह सब इसी लिये है कि यहां ईमानदार काम करने वालों का अभाव है जिनका पैदा हो जाना तभी सुलभ होगा जब आत्म त्याग Self Sacrifice की विशुद्ध बुद्धि हमारे में आवे॥

त्राहि!! त्राहि!! शिव!!!

हाय! आज यह देश बिकल हो दुख से पीड़ित।
टेरत है हे नाथ-त्रिलोचन! आन दयाचित॥१॥

डूबे हम सब हाय! महा दुख सागर माहीं।
त्राहि त्राहि, शिव! त्राहि तोहि बिन दूसर माही ॥२॥
हे शिव काशीनाथ! हरो दुख हम दीनन के।
सुख संपति नित बढ़े, सुबिद्या बुध भारत के ॥३॥
नावत हैं हम माथ, अहो गौरी पति तुम को।
दुख से देहु उबार, बचाओ इस भारत को ॥४॥

१

रूप विराट ललाट सुसुन्दर तापर भाल त्रिपुंड बिराजै।
गौर शरीर लसै उपवीत रमाय वभूत मनोहर छाजै।
कंठ सुशोभित नील अहा! अरु तापर सर्प अनेकन भ्राजै।
शीश मनोहर श्याम जटा पर गंग मनोहर ही छबि साजै।

२

हाथ लसै तिरसूल, घने डमरू उमके सुनि पातक भागे।
डाकिन शाकिन, भूत पिशाचन बीर अनेकन नाचत आगे।
लोचन काल महा बिकराल निहारत ही दुख दारिद भागे।
पादुका शब्द त्रिलोचन के सुनि लोचन भारत मोद में पागे।

३

आर्त अहा हमरी बिनती सुन संकर देव महा बरदानी।
निश्चय ईश कृपालु महान अहैं करुणा कर नाथ भवानी।
आकुल भारत की बिनती सुनि रंच बिलम्ब अहो! नहि आनी।
शंभु! उबारु दयालु उमापति!! टेरत भारत आरत बानी।

४

प्लेग नसै कुमती जरि के दुख दारिद भी जरि के हट जावे।
भाग अकाल पताल चले सुख संपति भारत में चहुं धावे।
नाथ! अनाथ सनाथ करो, कर जोरि के भारत माथ नवावे।
हे "तिर लोचन "लोचन" को "जनि लोचन ओट करो" शिर नावे।

पाण्डेय लोचन प्रसाद
बालपुर।

विचित्र चित्र।

रात को सोते २ अकस्मात् एक घड़घड़ाहट का शब्द सुन नींद उचट गई देखा तो काले रंग के बादल इधर उधर दौड़ रहे हैं-उन्हीं बादलों में दुर्जनों की संपत्ति सी कभी २ दामिनी दमकती हुई इस पार से उस पार को दौड़ जाती है और बादल इतने ज़ोर से घड़ २ करते हैं मानो दशो दिशा के दिग्गज एक साथ स्थान से खुल के अपने २ चिग्घार की बानगी दे रहे हैं। इतना तो सब है किन्तु पानी का कहीं नाम भी नहीं। यह सब दृश्य देख हम को अपने देश की दीन दशा पर ध्यान गया जहां के लोग इस सावन का सूखा जान सन्नहटे में आ रहे हैं इतने में फिर गडगडाहट हुई मानो हिन्दुस्तान की सब प्रजा जल जल एक स्वर से चिल्ला रही है। ऐसे ही ऐसे विचार सागर की लहरों में बूड़ता उतराता मुझे अपने सामयिक प्रभु वर की शासन प्रणाली पर ध्यान गया मन में आई कि इस समय के ये मेघ गण कदाचित् लार्ड कर्ज़न महोदय का अनुकरण तो नहीं कर रहे हैं। जैसा ये बादल आकाश के ऊंचे शिखर पर हैं वैसाही लार्ड कर्ज़न महोदय भी भारत श्री के अत्यन्त ऊंचे शिखर पर विराज मान सर्वमान्य हो रहे हैं। इन बादलों का घड़घड़ाना और श्रीमान् का मेघ गंभीर गिरा की स्पीचों में गरजना भी एक सा है और उन दोनों का फल भी समान है। पहले पहल जब श्रीमान् यहां पधारे थे तो प्रजागण को ऐसा आश्वासन दिया कि जितने पढ़े लिखे लोग थे सब यही निश्चय कर चुके थे कि अब हमारा बहुत कुछ हित होगा। जैसा मेघ की गरज सुन मोर ऊंचे स्वर से नाद करना और नाचना आरम्भ कर देते हैं ऐसा ही यहां की आर्त प्रजा का मन मयूर प्रफुल्लित हो कूदने लगा था किन्तु बहुधा बादल जो गरजते हैं बरसते नहीं वही फल लार्ड कर्ज़न की बक्तृता का भी देखने में आया उनकी स्पीचों को पढ़ कितनी खुशी हुई थी किन्तु परिणाम क्या हुआ सो छिपा नहीं है। जैसा बादल की घड़घड़ाहट सुन लोग त्राहि २ कर

अगस्त्य मुनि को पुकारते हैं वैसाही कानबोकेशन की स्पीच सुन सेक्रे-टरी अफ स्टेट की शरण लेना पड़ा। जैसा पपीहा मेघ का नाद सुन प्रसन्न होता है किन्तु जल न गिरने से मन मार कर बैठ जाता है वही दशा हम लोगों की हुई स्पीचों को सुन प्रमोद तो बहुत हुआ पर कुछ अपना हित और भला न होते देख सब लोग ठंढे पड़ गये।

वर्षा के मुख्य कारण सूर्य देव हैं यहां भारत के शासन कर्त्ता कर्म-चारियों में मुख्य और सर्वोपरि हमारे "वाइस राय" बड़े लाट हैं। सूर्य देव अपनी किरणों से पृथ्वी का जल खींचते हैं पीछे उसी को बरसते हैं हमारे शासन कर्ता भी टैक्सों के द्वारा रुपया खींचते हैं किन्तु वह रुपया विविध द्वार से विलाइत जाय फिर नहीं लौटता और लौटा भी तो पाला की भांत लोहा लक्कड़ के रूप में। पाला जैसा गिर कर खेती को नष्ट कर देता है वैसाही विलाइत की बनी चीज़ें देशी कारीगरी का विघात किये देती हैं। वर्षाऋतु का जैसा क्रम है कि आषाढ़ लगते ही बड़े बिकराल बादल उठते हैं पर बरसते नहीं फिर सावन भादों में घटाटोप अंधियारी खूब छाई रहैगी बादलों की घड़घड़ाहट बहुत पर बरसात बरायनाम। कुवांर में कभी वर्षा कभी घाम। यही क्रम प्रभु वर लार्ड कर्ज़न महोदय का देखने में आया। आरम्भ में यहां की पृथ्वी पर पांव रखते ही श्रीमान् ने धड़ाके की स्पीचें देना शुरू कर दिया भरपूर पांव जम जाने पर सावन की घटा के समान और अधिक लम्बी स्पीचें पढ़ने में आईं जो उस समय हम लोगों के लिये बड़ी हितकारी जंची किन्तु उन बक्तृताओं से जो हमारा हित हुआ सो किसी से छिपा नहीं है। बर्षा कभी निष्प्रयोजन नहीं होती खेतिहरों को नये बिरवाओं की बाढ़ देख बड़ी आशा बंधती है किन्तु पीछे अति वृष्टि आदि के कारण कभी को रुपये में केवल चार आने पैदावार होती है। यहां बिल्कुल खाली। जो आशा हमे दी गई उसमें एक भी फलोन्मुख न हुई। पानी बरसते ही सब ठौर हरियाली छा जाती है

फल फूल के इतने वृक्ष उग आते हैं कि कदाचित इतने किसी ऋतु में नहीं उगते। दिल्ली दरवार में लार्ड कर्जन नव वारिद के सन्नद्ध होते ही भारत में छोटे बड़े समस्त सामन्त एक छोर से दूसरे छोर तक के उन के स्वागत के लिये घटा से उमड़ आये दश पांच दिन के लिये दिल्ली प्रान्त में मानो हरियाली सी छा गई किन्तु परिणाम टांय २ फिस-राजा महाराजाओं का लाखों बिलट गया पर अन्त को फल कुछ न मिला। लिटन महोदय ने खिताब और सलामियोंही से लोगों का मनो-रंजन कर दिया था इस दरवार में सो भी न हुआ। इस नव वारिद की वर्षा को हम इस श्लोक के अनुसार कहेंगे जैसा।

त्वयि वर्षति भो मेघ सर्वे पल्लविता द्रुमाः।
अस्माकमर्कवृक्षाणां पूर्वं पत्रेपि संशयः॥

कई प्रकार के अधिकार जो पहले प्राप्त थे सोभी अब न रहे। जज़िया आदि दुःसह कर जो मुसल्मान बादशाह हम से लेते थे वह वृष्टि के उस जल के समान था जो अबखरों के आकार मे ऊपर को खिंच वर्षा के जल के समान फ़िर बरस कर यहां की पृथ्वी को उर्वरा करता था किन्तु कर जो हमारे ब्रिटिश शासक हम से लेते हैं वह उस पानी के समान है जो पर्वत और चट्टानों पर अथवा ऊसर धरती पर बरसता है जिस से कोई फल नहीं निकलता। हम लोगों को ऐसा भान होता है कि हमारे सामयिक शासनकर्ता और सूखे मेघों की विचार शैली और कार्य प्रणाली कुछ एक सी हैं किन्तु फिर भी जैसा वर्षा के अन्त में धनुष का उदय आकाश में देख लोगों के मन में कुछ औरही खयाल उठने लगते हैं वैसेही बड़े लाट महोदय की स्पीचों से हमे अत्यन्त निरुत्साहित न होना चाहिये। ईसा की धर्म पुस्तक बइबिल में लिखा है कि सृष्टि पैदा होने के थोड़े दिन उपरान्त जब मनुष्यों में पाप और अन्याय बढ़ गया उस समय इतनी बाढ़ Delage आई कि सिवा नूह की किश्ती के और कोई पदार्थ न बच रहा। थोड़े ही दिन बाद एक

धनुष आकाश में निकला जिस्से इसाई धर्म के अनुसार ईश्वर ने प्रतिज्ञा किया कि अब बाढ़ कभी न आवेगी इसी से धनुष उन के मत में शान्ति का चिन्ह समझा जाता है। यह कहां तक सच है हम नहीं जानते पर इतना तो अवश्य कहेंगे कि जब धनुष निकला है तो बादलों की तड़क भड़क कदाचित् अब न रहे। R. A.

प्राचीन ग्रन्थकार।

भट्टोद्भट।

राज तरङ्गिणी' के चौथे तरङ्ग में 'भट्टोऽभूदुद्भटस्तस्य भूमिभर्तुः सभापतिः' ऐसा लिखा मिलता है जिस से जान पड़ता है कि ये महाशय कश्मीर के राजा जयापीड़ के सभासद थे। महाराज जयापीड़ का राज्यकाल सन् ७७९ ई० से ले के ८१२ ईस्वी तक था। अतः भट्ट उद्भट का समय इन्हीं कश्मीर के राजा जयापीड़ के समयानुसार ख्रीष्टीय आठवीं शताब्दी का आरम्भ मान लिया जा सक्ता है। इनके रचित ग्रन्थ का नाम अलङ्कार सार संग्रह है जिसकी टीका प्रतीहारेन्दुराज ने रची। इनका रचित कुमार सम्भव नाम कोई काव्य भी होगा जिस में का श्लोक नीचे लिखा जाता है।

या शैशिरी श्रीस्तपसा मासेनैकेन विश्रुता।
तपसा तां सुदीर्घेणादूर्णवद्धतीमधः॥

जिसमें एक स्थान में तपस शब्द का अर्थ माघ मास और दूसरे में शरीर को क्लेश देने हारी तपस्या है। उक्त श्लोक से इन की कवित्व शक्ति झलक जाती है। इन के सम सामयिक कुट्टिनी मत के रचयिता दामोदर गुप्त और वामन आदिक हैं। ये महाशय कश्मीरी थे। व्याकरण अलङ्कार और काव्य में ये निपुण जान पड़ते हैं।

काव्य प्रकाश के टीका कारों ने कहीं २ पर इन्हें उद्भट कहीं पर उद्भट भट्ट और किसी २ स्थान में उद्भटाचार्य भी लिखा है। अलङ्कार सार संग्रह और कुमार संभव काव्य को छोड़ इनके बनाये और कोई ग्रन्थ हैं वा नहीं इस का कुछ पक्का पता तहीं मिलता है पर पाण्डित्य और सभा चातुरी की निपुणता इनकी छिपी नहीं है।

भट्टोत्पल।

ये महाशय एक प्रसिद्ध ज्योतिषी हैं जिस ने वराह मिहिर के लगभग सबी ग्रन्थों की टीका लिखी है वराह कृत पञ्च-सिद्धान्तिका की टीका इनकी रचित नहीं मिलती संभव है कदाचित् उस्की टीका न भी बनाया हो। प्राचीन ज्योतिषियों ने इन्हें भट्टोत्पल लिखा है पर निज ग्रन्थ में ये अपने को केवल उत्पल लिखते हैं। वृहज्जातक की टीका में इनने अपना समय शाके ८८८ अर्थात् सन् ९६६ ईस्वी लिखा अतएव इनको खीष्टीय १० वीं शताब्दी का मान लेना पड़ेगा।

भट्ट कल्लट।

ये मसाशय भी कश्मीरी पण्डित हैं। इन के गुरु का नाम वसु-गुप्त है। वसु गुप्त के रचित ग्रन्थ का नाम स्पन्दकारिका है और स्पन्द कारिका पर स्पन्द सर्वस्व नाम की टीका भट्ट कल्लट की लिखी हुई है। ये कश्मीर के राजा अवन्तिवर्मा के समकालीन हैं। अवन्तिवर्मा का समय राज तरङ्गिणी के निर्देशानुसार सन् ८५५ ई० से ८८४ ई० तक विदित होता है। निदान भट्ट कल्लट खीष्टीय नवीं सदी के पिछले भाग में वर्त्तमान माने जा सकते हैं। इनके पुत्र का नाम मुकुल था जो प्रसिद्ध आलंकारिक थे। इन का मत शैव था। कुछ लोगों ने इनका समय सन ८५० ई० से ले के सन् ८७८ ई० तक अनुमान किया है॥

संसार और समय के परिवर्तन का परिणाम।

अनित्य और परिवर्त्तन शील इस संसार और समय दोनों का कुछ ऐसा अभिन्न सम्बन्ध है कि बड़े २ बुद्धिमान् मनीषी और दार्श-निकों ने भी इन दोनों की टटोल में बहुत कुछ दिमाग लड़ाया पर दोनों की अनन्त शक्ति का पार न पा सके। इन दोनों की कुछ अद्भुत लीला देखने में आती है जिनकी लोकोत्तर करतूत का एक दो नहीं सैकड़ों और हज़ारों उदाहरण ऐसे पाये जाते हैं जिन पर खयाल दौड़ाने से आदमी की अकिल हैरत में आ जाती है। वह मनुष्य जो आज मखमल के गद्दों से सुशोभित पयः फेन निभा सैया पर सोता है वही कल काठ की चिता पर अपने आत्मीय वर्ग बन्धु वान्धवों से सुलाया जाता है। जिन्हों ने कभी पृथ्वी पर पांव न रक्खा होगा वेही इन दोनों की परिवर्त्तन शीलता के चक्कर में पड़ ऊंचे नीचे पहाड़ और बनस्थली को नांघते डाकते पग २ में कण्टकाबिद्ध हो थोड़ा चले और थक कर फिर बैठ जाते हैं। पांच सौ और हज़ार जिनके एक दिन के दस्तर-खान का खर्च था उन्हें तीन दिन की तिवासी सूखी रोटी भी दुर्लभ हो जाती है इत्यादि। संसार और समय इन दोनों के परिवर्त्तन का इससे बढ़ कर दूसरा उदाहरण और क्या हो सक्ता है कि जपान जो ३६ वर्ष पहले यूरोप के देशों में एशिया का एक असभ्य देश समझा जाता था जिसकी सभ्यता का कहीं नाम मात्र को भी प्रकाश न था वही अब रूस ऐसे पराक्रमी से भयंकर संग्राम कर रहा है और ऋक्ष राज रूस को नीचा दिखला रहा है। तो निश्चय हुआ कि इन दोनों की परिवर्तन शीलता में क्या नहीं संभव है। महा कवि भवभूति ने भी इसी बात को पुष्ट किया है "कालोह्ययं निरवधि विर्पुलाच पृथ्वी" संसार और समय दोनों ऐसे परिवर्तन शील हैं तो क्या संभव नहीं कि कभी भारत भूमि के भी भाग जगैं और इसके वे दिन फिर लौट आवें। यद्यपि कहावत है "गया रोज़ फिर हाथ आता नहीं"

यथापि यह प्रसिद्ध है कि सदा सब के दिन एक से नहीं बीतते जैसा "चक्रनेमिक्रमेण" सुखके बाद दुःख दुःखके बाद सुख का सिलसिला लगा रहता है वैसे ही मनुष्य जाति को कभी दूसरों पर साम्राज्य और कभी दूसरों की चाकरी करनी पड़ती है । यदि भिन्न २ समय तथा जाति के इतिहास ठीक हैं और संसार के नियमों में कुछ अन्तर नहीं पड़ गया तो फिर भी भारत सन्तान कभी एक दिन चेतैंगे और चाकरी छोड़ बराबरी का दावा करैंगे । यदि भारत के भाग्य में ऐसे परिवर्त्तन की आशा की जा सक्ती है तो प्रश्न यह उठता है कि किस बिधि ऐसे सोने के दिन आ सक्ते हैं ॥

आज हमें यह हौसिला चर्राया है कि अपने पढ़ने वालों को इसका उत्तर अपनी क्षुद्र बुद्धि अनुसार दें । इस में सन्देह नहीं भारत का भाग्य इस समय ऐसा फूटा है और ऐसे २ रोग उसे ग्रसे हुये हैं कि जिस्से वह विद्या विमुख साहस तथा उद्यम हीन और बल पराक्रम क्षीण हो चारो ओर से दैवी तथा मानुषी विपत्तियें की आंधी से घिरा हुआ अपने को पाता है और पिंजड़े में वन्द पखेरू सा फड़फंडा रहा है कि किस भांत इस तमः पुंज आंधी के पार हो फिर सूर्य की किरनों की झलक हम पर पड़े । यदि जाति भय छोड़ बन्धु बान्धवों का स्नेह तोड़ जरमनी जपान आदि देशों में जाय कुछ Industry शिल्प या विज्ञान सम्बन्धी कोई बात सीख आते हैं तो Foreign competition विदेशियों की प्रतिस्पर्द्धा के कारण सफलता प्राप्त करना अति कठिन होता है । यदि चाहें कि इङ्गलैंड जाकर C.S. पास कर आवें तो रंग गोरा न होने से किसी बिरले ही का भाग्योदय होता है । जो चाहें कि जन्म भूमि से सम्बन्ध तोड़ किसी दूसरी भूमि को जाके अपनावें तो कलोनियल गवर्नमेंट स्वीकार न करेगी तथा उस देशके नियम अनुसार दुःखही उठाना पड़ेगा । इन सब बातों का विचार करने से निश्चय होता है कि देश तथा जाति की उन्नति अपनी ही जाति तथा देश में रहने से हो सक्ती है ।

अमरिका जो इस समय संसारमे सब प्रताप शालिनी शक्तियों में प्रधान समझा जाता है जब तक इंगलैण्ड पर भरोसा किये था अपनी तरक्की न कर सका किन्तु जिस दिन उसके बीर पुत्रोंने निश्चय कर लिया कि अपने देश की उन्नति अपने ही किये होगी उसी दिन से उस की तरक्की के तारे चमकने लगे। तात्पर्य यह कि जब तक हिन्दुस्तान के लोग अपनी तरक्की के लिये विदेशियों का मुह जोहते रहेंगे तब तक कुछ न कर सकेंगे। जो हमे अपने देश का सच्चा प्रेम है तो अपनी मातृ भूमि के कल्याण के लिये दृढ़ चित हो खड़े हो जांय और दूसरों का आसरा परखना छोड़ दें। यहांके बड़ेसे बड़े धनी संपत्ति वाले क्षुद्रसे क्षुद्र विदेशी को जो हम से इतनी दूर सात समुद्र के पार वसते हैं अपना पूज्य न मानते होते उन से इतना न दबते होते और आपस में सहमत होते तो कभी संभव था कि गवर्नमेंट इन की सम्मति या राय की कदर न करती। माननीय महाराज सप्तम एडवर्ड जिन्हें हम अपना राजा माने बैठे है वे भी पार्लियामेंट महासभा के विचार के आधीन हैं वरन वास्तव में महाराज को कोई अधिकार नहीं है नाम मात्र के लिये राजा थाप दिये गये हैं। तो पार्लियामेंट को हम अपना राजा कहें सो भी नहीं कह सक्ते क्योंकि उस के दो दल हैं एक लिबरल दूसरा कनसरवेटिव दोनों बहुधा एक दूसरे की बात काटा करते हैं और जिस दल की वोट अधिक आई उसी के हाथ में राजकी डोरी थमा दीजाती है उन्में भी एक कौंसिल रहती है भारत का भाग्य एक प्रकार इसी कौंसिल के हाथ में रहता है जिसे इंडिया कौंसिल कहते हैं। जैसा और सब कौंसिल और सभाओं का क्रम होता है कि नाम तो सभा का किन्तु काम सब सेक्रेटरी करता है वैसाही यहां भी है। इन सेक्रेटरी महोदय को सेक्रेटरी अफ स्टेट फार इंडिया कहते हैं। ये जो चाहें सो कर सक्ते हैं और भारत से हज़ारों कोस पर बैठे रहते हैं। इन का काम भारत में वाइसराय साहब जैसा चाहते हैं वैसा करते हैं। आज कल्ह वइसराय के

पद पर लार्डकर्ज़न महोदय हैं जिन्होंने यह प्रत्यक्ष कर दिखा दिया कि ज़बरदस्त का ठेंगा सिर पर। आप की इच्छा हुई बंगाल प्रान्त के दो टुकड़े कर डालें। यह उनकी इच्छा जब बंगाल के निवासियोंको प्रकट हुई तो उन लोगों ने बड़ा आन्दोलन मचाया किन्तु लार्ड कर्ज़न महोदय ने कहा कि बंगाली जाति मात्र अपनी भलाई नहीं समझने यदि कोई समझता है तो गवर्नमेंट के कर्मचारी इस्से बंगालके दो टुकड़े करने की आज्ञा सेक्रटरी अफ़ स्टेट से मंगा लिया और संभव है बहुत जल्द इसे कर डालते लाचारी कि अब उनको इस्तीफा देना पड़ा। बंगाली मात्र इसपर बड़ा आन्दोलन मचा रहे हैं बड़े २ राजा महाराजा ज़िमीदार इस विचार के विरुद्ध अपनी संमति बड़ी २ सभाओं के द्वारा प्रकाश कर रहे हैं किन्तु नक्कार खाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है। भाइयो नेक विचारो तो यदि ऐसा नाशकारी प्रस्ताव इंगलैंड में प्रइम मिनिष्टर या किसी दूसरे ने किया होता तो क्या फल होता। इंगलैंड की तो बात ही निराली है गये बीते अयरलैंड या किसी दूसरी ब्रिटिशकालोनी में ऐसा प्रस्ताव किया जाता तो संभव नहीं था कि वहां की प्रजा इसे मान लेती और बिना प्रजा के सहमत हुये ऐसा प्रस्ताव कभी न प्रवर्तित किया जाता किन्तु हिन्दुस्तान की बात ही दूसरी है जैसा हांथी के दांत दिखाने के और खाने के और होते हैं यहां वालों से कहा कुछ जाता है और किया कुछ और ही। ब्रिटिश जाति की न्याय परता और सच्चाई पर ध्यान देने से आशा होती कि जल्द यह अन्याय उठा दिया जाय किन्तु जब तक हम लोग स्वयं इस्का यत्न न करैंगे तब तक ऐसा कभी होना नहीं है। इसी से हम कहते हैं कि हे देश के सच्चे प्रेमियो अपनी मातृ भूमि के उद्धार के लिये दृढ चित्त हो खड़े हो जाओ विदेशियों का मुह ताकना छोड़ दो। इस्का तात्पर्य यह नहीं है कि हम गवर्नमेंट के प्रतिपक्षी हो जांय किन्तु अपने कामों के देखने भालने में बुद्धि के खरच करने की कादरता को छोड़ दें यदि आवश्यक हो तो अपने हक्क के

हासिल करने में सर्कार से भी लड़ें किन्तु याद रहे यह लड़ाई बुद्धि से लड़ी जाती है। इस बुद्धि की लड़ाई में विद्या की अधिक आवश्यकता है तो हम सबों को उचित है कि सब के पहिले अपना ध्यान और समय विद्या के बढ़ाने और बुद्धि के सुधारने में देवें तो निश्चय है जैसा हम ऊपर कह आये हैं कि समय परिवर्त्तन शील है जिस समय ने हमें उन्नति के शिखर से उतार इस गिरी दशा में गेर दिया वही समय परिवर्तित हो फिर हमें पहिली दशा में पहुंचा सक्ता है।

M. S.

मलिका ज़मानी।

पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी लिखित।

मलिका ज़मानी लखनऊ के बादशाह नसीरुद्दीन हैदर की बेगम थी। उस्का चरित अति ही विलक्षण है। यह एक कुरमी की लड़की थी जो पहिले रोटियों को भी मुहताज थी पर पीछे उस्की किस्मत ने ऐसा पलटा खाया कि वह बादशाह की बेगम हो गई। इस्से यह भी स्पष्ट है कि यहां के बादशाह और वज़ीर वगैरह जात पांत की कुछ परवाह न करते थे रूप पर मोहित हो वे जिस्को चाहते थे अपने महलों में रख लेते थे कुल के ऊंच नीच होने का उन्हें तनिक भी खयाल न था। खैराबाद के पास किसी गांवमें एक कुरमी रहता था जो बहुत गरीब था उसने अपने पड़ोसी फतेहमुराद नामक एक मुसल्मान से ६० रुपये उधार लिये कुछ दिन बाद वह मरगया अपनी विधवा स्त्री और दुलारी नाम की एक लड़की छोड़ गया। दुलारी की उमर उस समय ५ वर्ष की थी। फतेहमुराद ने उन दोनों को पकड़ अपने घर में बन्द कर दिया और कहा कि जब तक मेरे रुपये न मिलेंगे मैं न छोड़ूंगा। जब रुपये का कोई प्रबन्ध न हो सका तब दुलारी की मा दुलारी को ज़मानत के तौर पर फतेहमुराद

के यहां रखने पर राज़ी हुई। इसपर फतेहमुराद ने दुलारी की मा को छोड़ दिया। दुलारी बहुत होनहार लड़की थी इस्से फतेहमुराद की बहिन करीमुन्निसा ने उसे गोद ले लिया और अपनी निज की लड़की की भांत उसे पाला पोखा। फतेहमुराद ने दो शादियां की थी उस्की दूसरी स्त्री पुनर्भू थी जिस को पहिले पति से एक लड़का था नाम उस्का रुस्तम था और वह भी फतेहमुराद के यहां रहता था। जब दुलारी जवान हुई तो उस्से और रुस्तम से मैत्री हो गई यह देख करीमुन्निसा ने उन दोनों की शादी करदी। कुछ दिन बाद फतेहमुराद मर गया तब फतेहमुराद की पहिलि स्त्री ने उस्की दूसरी स्त्री को निकाल दिया साथ ही रुस्तम और दुलारी को भी निकाल दिया। फतेहमुराद से उस दूसरी स्त्री के भी दो लड़के थे फतेहअली और वारिसअली उन को भी फतेहमुराद की पहली स्त्री ने घर से निकाल दिया। ये सब लोग लखनऊ के पास रुस्तम नगर आये वहां फतेह मुराद की चाची रहती थी वह खूब पढ़ी लिखी थी और नौवाब मुहब्वत खां के यहां उस्की लड़कियों को कुरान पढ़ाती थी उसी के घर में ये लोग जा टिके। फतेहमुराद की चाची ने देखा कि दुलारी का प्रेम अपने पति रुस्तम पर कम है उस्के चाल चलन पर उसे सन्देह हुआ इस लिये उस ने दुलारी को नौवाब के यहां आने से रोक दिया पर उस्के और रुस्तम के खाने कपड़े का सब प्रबन्ध कर दिया। रुस्तम कुछ दिन बाद अब्बास कुलीवेग नामक एक सवार के घोड़े की साईसी करने पर नौकर हो गया दुलारी के पहले एक लड़का हुआ फिर एक लड़की। रुस्तम नगर में उस्से एक लुहार और एक फीलवान से दोस्ती हो गई थी इस लिये यह नहीं कहा जा सक्ता कि दुलारी का लड़का महम्मद अली और लड़की जीनतुन्निसा की सूरत शकल रुस्तम से अधिक मिलती थी या उस फीलवान से या उस लुहार से। हां एक बात निःसन्देह थी कि दुलारी का चाल चलन अच्छा न था।

इसी समय शाहज़ादा नसीरुद्दीन हैदर के मुन्नाजान नामक एक लड़का हुआ उस्के लिये एक धाय की ज़रूरत हुई। इस कामके लिये कुछ शाही आदमी फतेहमुराद के चाची के पास आये और उस से कहा कि वह किसी अच्छी धाय का पता बतलावै। फतेहमुराद की चाची की बड़ी इज़्ज़त थी। वह एक विदुषी स्त्री थी। उस ने उन लोगों से दुलारी की सिफारिश की। दुलारी को लड़की हुये उस समय डेढ़ वर्ष हुए थे। धाय की जगह के लिये और भी कई एक स्त्रियां शाही महल भेजी गईं। पर दुलारी का रूप रंग बादशाह बेगम को बहुत पसन्द आया। हकीमों ने उस के दूध की परीक्षा की और उसे बहुत अच्छा बतलाया। अतएव दुलारी मुन्नाजान को दूध पिलाने पर नौकर होगई।

उस समय तक मुन्नाजान के पिता नसीरुद्दीन हैदर को लखनऊ का सिंहासन नहीं मिला था। उनका पिता जीवित था एक दिन नसीरुद्दीन हैदर ने दुलारी को देखा। देखते ही वह उसके कटाक्ष जाल में फंस गया। दुलारी बहुत सादी पोशाक में रहती थी और लोग उसे विशेष रूपवती भी न समझते थे। पर नसीरुद्दीन हैदर उसे देखते ही मोहित होगये। यह देखकर बादशाह और बेगम को आश्चर्य हुआ। नसीरुद्दीन हैदर की बेकली यहां तक बढ़ी कि जब तक उसने पिता से दुलारी के साथ शादी करने की आज्ञा न ले ली तब तक उस ने खाना पीना प्रायः छोड़ ही दिया। १८२६ ईसवी में दुलारी नसीरुद्दीन हैदर की बेगम बनी और थोड़े ही दिनों में उस ने नसीरुद्दीन हैदर को अपने वश में कर लिया। अब उसने चाहा कि कुछ ऐसे आदमियों को अपने पास रक्खें जिन पर वह विश्वास कर सके इस लिये उस ने फतेहमुराद की चाची, उस की बेटी जमालुन्निसा, और उस के बेटे कासिम बेग को महलों में बुलाकर अच्छी अच्छी जगहैं दिलाईं। फतेहमुराद की दूसरी स्त्री के दो बेटे फतेह अली और वारिस अली को भी उस ने बुलाया और बादशाह को सुझाया कि ये लोग बहुत बड़े खान्दान के हैं। वि-

पत्ति के कारण ये छोटे २ काम करने को विवश हुए हैं। बादशाह ने इस बात को सच मान लिया और उन दोनों को फौरन ही नौव्वाव बना दिया। उन को बड़े २ अधिकार दिये गये और एक दिन में वे फकीर से अमीर हो गये। फतेहमुराद की बहन करामुन्निसा को भी दुलारी ने अपने पास बुला लिया। पर जब दुलारी का पहला पति बेचारा रुस्तम कोई अच्छी जगह पाने की कोशिश करने लगा तब वह पकड़ कर कैद कर लिया गया। जब तक नसीरुद्दीन हैदर की मृत्यु नहीं हुई तब तक वह कैद रहा।

२८ आक्तोबर १८२७ को गाज़िउद्दीन हैदर की मृत्यु हुई और नसीरुद्दीन को लखनऊ की बादशाहत या विज़ारत का आसन मिला। फिर क्या था, फिर तो दुलारी ने और भी अपनी प्रभुता बढ़ाई। उस ने अपने बेटे महम्मद अली की शादी नसीरुद्दीन के चचा रुक्नुद्दौला की बेटी के साथ करदी और अपनी बेटी जीनतुन्निसा की शादी उस ने शाही घराने के एक प्रसिद्ध पुरुष मुमताजुद्दौला से कर दी। इन शादियों में कोई ३० लाख रुपये खर्च हुए, तब से दुलारी नसीरुद्दीन की सब से बड़ी बेगम हुई। उस का नाम हुआ "मलिका ज़मानी" उस के लिये ६ लाख रुपये साल की मालगुज़ारी का एक तअल्लुका अलग कर दिया गया। कुरमी की लड़की दुलरिया को इतने में भी सन्तोष नहीं हुआ। उस ने बादशाह से कहा कि तुम मेरे बेटे महम्मद अली को अपना बेटा और सब से बड़ा मान लो। और गवर्नमेंट को भी इस की इत्तिला कर दो जिस में तुम्हारे बाद इसी को तख्त मिले। महम्मद अली किस का बेटा था इस का ज़िक्र ऊपर हो चुका है इस हुकुम को सर आंखों से माना और कई मौकों पर रेज़िडेण्ट साहब को विश्वास दिलाया कि महम्मद अली मेरा ही औरस पुत्र है यदि ऐसा न होता तो रुक्नुद्दौला उसे अपनी बेटी क्यों देते और मैं उस की शादी क्यों करता। रेज़िडेण्ट ने कहा लोगों का ख़याल है कि आप

भूलते हैं। मुन्नाजान आप ही का पुत्र है और वही सब से बड़ा है। इस लिये वही गद्दी का मालिक है। यह सुन कर नसीरुद्दीन हैदर ने फरमाया कि मुन्नाजान के पैदा होने के दो वर्ष पहलेही से मैंने मुन्नाजान की मा, बादशाह बेगम से मिलना छोड़ दिया था। कुछ दिन बाद नसीरुद्दीन ने अपने हाथ से एक पत्र गवर्नर जनरल को लिखा कि मुन्नाजान मेरा बेटा नहीं। मेरा बेटा महम्मद अली है। वही तख्त का वारिस है। इतनाही नहीं किन्तु १८२७ ईसवी में जब गवर्नर जेनरल लखनऊ आये तब पेशवाई के लिये महम्मद अली ही कानपुर भेजा गया।

जब नसीरुद्दीन हैदर की मृत्यु हुई तब तख्त के लिये बड़ा फसाद हुआ। पादशाह बेगम ने अपने बेटे मुन्नाजान को तख्त पर बैठाया पर नसीरुद्दीन की बात पर विश्वास कर के अंगरेज़ों ने महम्मद अली का पक्ष लिया। बहुत खून खराबा होने के बाद मुन्नाजान और उस की मा चुनार में कैद किये गये और महम्मद अली को गद्दी मिली। एक तुच्छ कुरमी की दुःशीला लड़की दुलारी की सब इच्छाएं पूरी हो गईं। बरन खुद बादशाह की सब से बड़ी बेगम हो गई। अपने बेटे को उस ने बादशाह बना दिया और अपने कुटुम्बियों को अच्छे अच्छे ओहदों पर पहुंचा दिया। दुलारी के चरित्र से यह भी सिद्ध हुआ कि लखनऊ के बादशाह कितने स्त्रैण थे। बेगमों के दबाब में पड़ वे क्या २ कर डालते थे और सत्य का वे कहां तक प्यार करते थे। स्त्री के कहने से अपने बेटे को दूसरे का बताना और दूसरे के बेटे को अपना कहना स्त्रीजित हो जाने की पराकाष्ठा है। हिन्दुस्तान में इस तरह के जोरू के गुलाम न जानिये कितने पड़े हैं बरन घर २ ऐसे दो एक पाये जाते हैं।

व्यापारान्तरमुत्सृज्य वीक्षमाणो वधूमुखम्।
यो गृहेष्वेव निद्राति दरिद्राति स दुर्मतिः॥

इन्हीं सब कारणों से लखनऊ की इतनी बड़ी रियासत खाक में मिल गई और उन को उदाहरण में रख कितने और घराने उन्हीं के समान नष्ट हो गये। इसमें सन्देह नहीं मुसल्मान शासनकर्ताओं का बड़ा असर हमारी हिन्दू जाति पर पड़ा मुसल्मानों के यावत् दुर्गुण इनमें आ गये। अपनी पहले की ज़र्रारी तर्रारी सब भूल भोग बिलासी हो गये और मुसल्मानों की सी ज़ाहिरदारी सीख किसी काम ही के न रहे।

संपादकीय ऊहा पोह।

लार्ड कर्ज़न महोदय ने अपने काम से इस्तीफा दे दिया। सुनते हैं इन की जगह लार्डमिन्टो बड़े लाट होंगे। कर्ज़न साहब ने जो इस्तीफा दिया उसका भीतरी कारण जो कुछ हो पर हम लोगों की मोटी अकिल में आता है कि इस इस्तीफे का कारण लार्ड किचनर से इन का विरोध है। यदि ऐसा है तो यह आपस की फूट ब्रिटिश शासन के लिये हानिकारक है। हिन्दुस्तान के सत्यानाश का मूल कारण यह आपस की फूट ही तो हुई है अब वही फूट ने बिलाइत में भी पग पसारना आरम्भ किया सच है।"काजल की कोठरी में कैसेहू सयाना जाय एक दाग काजर का लागिहै पर लागिहै" यहांके जलवायु ने पहले हिन्दुओं ही को लूला लंगड़ा कर डाला उपरान्त मुसल्मानों को अपना साथी बनाया अब ब्रिटिश जाति पर उसने दांत लगाया है ईश्वरही कुशल करे॥

पहेली।

(१) अपना पूछत हूं मैं नाम। सो कहिये हे मीत सुजान॥
कहता हूं मैं अपना हाल। हैं सीता का मैं रखवार॥

(२) दुनिया में मैं चलती हूं। अन्न उदर में भरती हूं॥
पै कछु नाहीं जानौ स्वाद। लट्ठा गड़ा हमारे माथ॥

R A.

कवि पञ्चक ।

संस्कृत के सुप्रसिद्ध ५ कवि कालिदास, भवभूति, बाण, दण्डी, और सुबन्धु इन पांचो कवियों का जीवन चरित्र और उनके काव्यों पर समालोचना CRITICISM बड़े अच्छे ढंग पर इस में की गई है-पुस्तक यह मराठी से अनुबाद की गई है-भाषा इसकी अत्यन्त क्लिष्ट न होकर कुछ सहज सर्व साधारण के समझने योग्य होती तो क्याही अच्छा होता। जयपुर निवासी हिन्दी के एक मात्र हितैषी और प्रेमी मिस्टर जैन वैद्य ने यह पुस्तक हमे समर्पण किया जिसका उन्हें अनेक धन्यबाद है मूल्य ।।।) है-

---

THE THREE DIFFERENT ASPECT OF KRISHN.

कृष्ण भगवांन को ३ जुदे २ आकार में ग्रहण ।

पूर्ण पुरुषोत्तम सच्चिदानन्द परमात्मा भगवान् कृष्णचन्द्र के यद्यपि अनेक नाम रूप गिनाये गये हैं "अनेक रूप रूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे" किन्तु ३ मुख्य आकार उन के इस समय ग्रहण किये जाते हैं महाविलासी, महानीतिज्ञ, और महा योगीश्वर। कृष्ण भगवान् की अद्भुत महिमा का पार न पाने वाले अपनी बुद्धि की गुरुता के घमण्ड में फूले हुये चट कह बैठते हैं यह क्यों कर संभव है कि सम्पूर्ण वेदान्त फिलासोफी और यावत् उपनिषदों का सार भूत गीता के ज्ञान का उपदेशक जो मांना जाय उसके बालकपन और जवानी के चरित्र इतने कलुषित मलिन और घिनौने हों। अचरज होता है कि उसे हम "चौरजार शिखामणि" कहते ज़रा भी न शर्मांय वल्कि उस्की योगीश्वरता का महत्व इसे मानैं।

सच है—पहिले इस्के कि हम आगे बढ़ैं और इस विषय पर कुछ कहने की हिम्मत करैं इतना सूचित कर देना अति आवश्यक होगा कि इस्का भेद यदि हम खोल सक्ते और अगम अपार उस्के लीला ताण्डव की उलझी गांठ को सुरझा लेते तो वह अगम्य अगोचर सर्वातीत क्यों कहलाता। उस्के चरित्र में इसी तरह की न जानिये कितनी

टेढ़ी मेढ़ी बातों ही से तो उस्की ईश्वरता और सर्व शक्तिमत्ता सिद्ध होती है। गीता में श्री मुख वाक्य है "ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्"। जो मुझ को जिस भावना से समझता है मै उस्को उसी भावना के आकार में हो उस्को ग्रहण करता हूं। हमारे यहां इस बात की बड़ी फिकिर की गई है कि प्रजा नास्तिक न होने पावे जो जिस झुकावट की ओर जैसी चित्तवृत्ति का होता था उस्के लिये वैसीही कल्पना कर दी जाती थी जिस्में उस्के विश्वास और श्रद्धा में कहीं पर से हेटापन न आने पावे। पूर्ण ज्ञानी निर्दोष चरित्र वाले तो संसार में बहुत थोड़े हैं तो क्या उन्ही थोड़ों की सद्गति और मुक्ति होगी बाकी और सब लोग नरक की आग में पड़े झुलसा करेंगे? कभी हो नहीं सक्ता कि एक मनुष्य जो सर्वथा अकुटिल भाव सरल चित्त और ईश्वर में निष्ठा रखने वाला है पर वेदान्त के ज्ञान से वहिमूर्ख है वह सद्गति न पावे। कृष्ण भगवान् की वाल पौगण्ड कैशोर तथा तारुण्य लीला का स्मरण मनन ध्यान और अभिनय इसलिये है कि प्रेमी जन बिना रूखे वेदान्त के उसे पा जांय। इन भक्तों की कोटि में तो ऐसे भी हो गये हैं जिन्हों ने मुक्ति को ठोकरों मार अलग किया और अपने प्रभु के प्रेम और अनुराग में सदा मग्न रहे। शृङ्गार और प्रेम के तो महा प्रभु कृष्ण भगवान् रूप थे। वे ऐसी २ लीलायें न कर गये होते तो शृङ्गार वात्सल्य और प्रेम इन सबों को सहारा कहां मिलता। हमारे प्राचीनों का खयाल कि प्रजा नास्तिक न होने पावे बहुत ही प्रशंशनीय था। इस समय अंगरेज़ी शिक्षा बिना किसी धर्म के सहारे फैलाई गई उस्का क्या परिणाम हुआ कि सुपठितों की संख्या इस समय देश में करोड़ों की होगी पर उस से क्या भलाई हो रही है। इसलिये कि उन्में ईश्वर का भय या उस्की दया आदि भाव तो हई नहीं तब क्यों वे कोई ऐसे काम में लगें जिसका फल कुछ अदृष्ट है। कृष्ण भगवान् की विलासिकता के सम्बन्ध में अभी बहुत कहना है पर स्थानाभाव से आगे के लिये छोड़ रखते हैं॥

अचिन्तितानि दुःखानि यथैवायान्ति देहिनाम् ।
सुखान्यपि तथा मन्ये दैव मत्रातिरिच्यते ॥ ५९ ॥

हितोपदेश—

जिस्का पहिले कभी कुछ खयाल न था ऐसा दुःख अकस्मात् आ पड़ता है वैसा ही सुख भी अकस्मात् आ जाता है तो निश्चय हुआ कि सुख दुख में दैव ही कारण है-

अचिराधिष्ठित राज्यः शत्रुः प्रकृतिष्वरूढमूलत्वात् ।
नव संरोहणशिथिलस्तरुरिवसुकरः समुद्धर्तुम् ॥६०॥

शत्रु जो थोड़े दिनों से देश को अपने अधिकार में लाया है और प्रजा के बीच उस्का इन्तिज़ाम या हेल मेल दृढ़ मूल नहीं हुआ उस्का उखाड़ देना वैसा ही सहज है जैसा नये पौधे को उखाड़ डालना सहज है जो एक स्थान से उखाड़ दूसरे स्थान में लगाया गया है तब कुछ समय तक उस्की जड़ ढीली रहती है-

अचोद्यमानानि यथा पुष्पाणि च फलानि च ।
स्वं कालं नातिवर्त्तन्ते तथा कर्म पुरष्कृतम् ॥६१॥

म-भा—

बिना किसी की प्रेरणा के जैसा फूल या फल वृक्ष में ऋतु आने पर लग जाते हैं वैसा ही पहिले किये हुए कर्म के फल भी आप से आप उपस्थित होते हैं-

अजरामरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत् ।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥ ६२ ॥

हितोपदेश—

न कभी बूढ़ा हूंगा न मरूंगा यह समझ विद्या और धन संचय करे । मृत्यु बालों को पकड़े है पटका चाहती है ऐसा सोच धर्म करे-

अजातमृतमूर्खाणां वरमाद्यौ न चान्तिमः ।
सकृद्दुःखकरावाद्यावन्तिमस्तु पदे पदे ॥ ६३ ॥

नहीं हुआ होके मर गया और मूर्ख इन तीनों में पहिले दो अच्छे इसलिये कि वे दोनों एक बार दुख देते हैं पर मूर्ख पग पग में दुखदायी है-

अजाधूलिरिवत्रस्तैमार्जनीरेणुवज्जनैः ।
दीपखट्वोत्थछायेव त्यज्यते निर्द्धनो जनः ॥ ६४ ॥

जैसा बकरियों के पांव की धूलि को बढ़नी के बटोरने की खाक को; दीप और खटिया की छाया को; मनहूस समझ लोग बरकाते हैं वैसा ही धनहीन को भी—

अजानता भवेत्कश्चिदपराधः कृतो यदि ।
क्षन्तव्यमेव तस्याहुः सुपरीक्ष्यपरीक्षया ॥ ६५ ॥

जिस किसी से कोई अपराध बिना जाने बन पड़ा हो तो भली भांति परीक्षा के उपरान्त उसका वह कुसूर माफ करने लायक है—

अजानतोहठात्कुर्वन्प्राज्ञमानी विनश्यति ।

क-स-सा-

जो अपने को बुद्धिमान् समझ हठ में आय कोई काम कर डालता है उसका विनाश होता है-

अजानन्दाहार्तिं पतति शलभो दीप दहने
समीनो ऽप्यज्ञानाद्बडिशयुतमश्नाति पिशितम् ।
विजानन्तोप्येते वयमिह विपज्जालजटिलान्न
मुञ्चामः कामानहह गहनो मोहमहिमा ॥ ६६ ॥

दीप शिखा में फतींगा (शलभ) बिना जाने अज्ञान से आ गिरता है और मर जाता है; मछली भी अज्ञान से कटिया में लगी हुई मांस के लोभ से जा फंस जाती है और मारी जाती है; हम लोग जो अपने को ज्ञानवान् मानते हैं जान बूझ कर भी संसार के इस जटिल विपुल जाल में फंसे हुये हैं और उससे अपना छुटकारा नहीं चाहते अचरज होता है कि इस गझिन मोह जाल की कैसी अद्भुत महिमा है ॥

अजायुद्धमृषिश्राद्धे प्रभाते मेघडम्बरे ।
दम्पत्योः कलहे चैव बह्वारंभे लघु क्रिया ॥ ६७ ॥

बकरियों की लड़ाई, बालू का पिण्ड दान, सबेरे का मेंघाडम्बर, स्त्री पुरुष की कलह, इन सबों का आरंभ बड़े धूम धाम का होता है पर अन्त में टांय टांय फिस ॥

अजारजः खररजस्तथा संमार्जनीरजः ।
दीपमञ्चकयोच्छाया शक्रस्यापि श्रियंहरेत् ॥

बकरी के झुण्ड की रज गदहे के पांव की धूर बढ़नी के बटोरने की रज दीपक के प्रकाश में खटिया की छाया इन्द्र की भी लक्ष्मी हर लेता है तब मनुष्य का क्या कहना है ।

अजाश्वयोर्मुखं मेध्यं गावो मेध्यास्तु पृष्ठतः ।
ब्राह्मणाः पादतो मेध्याः स्त्रियो मेध्याश्च सर्वतः ॥६८॥

बकरी और घोड़े का मुख पवित्र है गऊ का पृष्ठ भाग पवित्र है ब्राह्मणों का पांव पवित्र है स्त्रियां सब ठौर पवित्र हैं ।

अजितो मनसि विधेयस्ततो नयः स्याज्जयश्च सखे।
आज्ञायितत्व मिहचेद्भवतो दितमेव बुद्धिसौभाग्यम् ६९

यह एक कूट है वैयाकरणियों के लिये बहुत अच्छा चुहल है ।

अजीर्णं तपसः क्रोधो ज्ञानाजीर्णमहंकृतिः ।
परनिन्दा क्रियाजीर्णमन्नाजीर्णं विसूचिका ॥ ७० ॥

तपस्या का अजीर्ण क्रोध है ज्ञान का अजीर्ण अहंकार है काम का अजीरन चारो ओर निन्दा होना है अन्न का अजीरन विसूचिका (हैज़ा) है ।

अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम् ।
भोजने चामृतं वारि भोजनान्ते विषापहम् ॥७१॥

अजीर्ण में जल एक दवा है अन्न के पच जाने पर बल को बढ़ाता है भोजन के बीच बार २ जल पान अमृत का गुण पैदा करता है भोजन के अन्त में जल पान विष को नाश करता है ।

अजीर्णे पथ्यमप्यन्नं व्याधये मरणाय वा ।

अजीरन में पथ्य भोजन भी रोग पैदा करता है या रोग का कारण है ।

अजीर्णे भोजनं विषम् ।

अजीरन में भोजन विष है ।

अज्ञं कृतघ्नमकृतव्रतदान यज्ञं
सत्संगशीलनविहीनमतीव दीनम् ।
त्वन्नामकाममनसं त्वदनन्यवृत्तिं
चेन्मां जहासि रघुनायक हा हतोस्मि॥७२॥

गुमानी कवि ।

मूर्ख और किये उपकार को भूल जाने वाला हूं न कभी कोई व्रत किया, न दान दिया, न यज्ञ किया, न सत्संग का सुख कभी उठाया, अति दीन हूं, केवल आप का नाम जपने की कामना मन में रहती है तुम्हें छोड़ दूसरे किसी को जानता भी नहीं इस दशा में हे रघुनाथ यदि आप मुझे छोड़ते हैं तो हाय मैं सब ओर से गया ।

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक-विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २७ } प्रयाग { अक्टूबर
सं० १० } { सन् १९०५ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज ३)

—:००:—

हिन्दीप्रदीप

जि० २७ | प्रयाग | अक्तूबर,
सं० १० | | सन् १९०५ ई०

BOY COTTING AGITATION.

विदेशी वस्तुओं के त्यागने का आन्दोलन।

चाहो कोई कितना ही लार्ड कर्ज़न साहब की निन्दा करे पर हम तो उन्हे हिन्दुस्तान का बड़ा उपकारी कहेंगे। कर्ज़न साहब जो इतना न खुल पड़ते और पल्ले दरजे की आज़ादी काम मे लाय बंगाल को दो टुकड़े मे विभाग करने की scheme युक्ति न सोचते तो काहे को वंग देशियों में इतना आन्दोलन मचता। अस्तु शत्रु मुख मित्र होना इसी को कहेंगे कर्ज़न साहब हमारी बुराई चाहते भी बड़ी भलाई कर गये।

बात यह बहुत अच्छी है बंगालियों में यदि यही जोश कायम रहा तो विलाइत की बनी चीज़ों का बर्ताव हम लोगों में बहुत कम हो जायगा और हिन्दुस्तान के इतिहास में इस घटना के कारण कर्ज़न महोदय का नाम चिरस्थायी रहेगा। हमारे पण्डित लोग अपनी पोथियों में विदेशी वस्तुओं का बर्तना पाप लिख देते और कथक्कड़ व्यास कथाओं में स्त्रियों को यह सुनाया करते तो बड़ा उपकार होता। सहस्त्र बार के आन्दोलन में भी उतना फल न फलेगा जितना सरल चित्त वाली हमारी ललना जन के चित्त में यह बैठ जाने से कि विलायत की बनी चीज़ों को वर्तने में बड़ा पाप होता है। तात्पर्य यह कि देशी चीज़ों का वर्तना धर्म का एक अंग मान लिया जाय और सीधी सादी स्त्रियों को सुझा दिया जाय कि विलाइत के बने कपड़े पहिनोगी तो नरक में जाओगी जो जितना ही विदेशी वस्तु कम काम में लावेगी उसके लिये उतनाही स्वर्ग में जाना सुलभ होगा ऐसा होने से देशी वस्तुओं का चलन सहज में हो सक्ता है सच पूछो तो देश में दरिद्र फैलने का विदेशी वस्तु का वर्ताव मख्य कारण है देश के धन में मानो घुन सा लग गया है। एक अन्न मात्र जो पेट मे जाता है देश का है नहीं तो उठते बैठते चलते फिरते सोते जागते कहां तक कहें स्वांस लेने तक में विदेशी वस्तुओं के विना एक क्षण भी नहीं चलता। लाचारी है कि यहां की मिट्टी ढोकर विलाइत नहीं ले जा सक्के न विलाइत का जल वायु यहां ला सा कर सक्के हैं नहीं तो अन्न भी हमें विलाइत ही की उपज का खाने को मिलता। घरों में चाहो गऊ बंधी हो पर हमारे नये सभ्यों की चाय स्विस मिल्क और वीट शुगर की चीनों से ही तैयार की जाती है। परदे के भीतर जहां सूर्य और चन्द्रमा की भी सामर्थ्य नहीं कि अपना प्रकाश पहुंचा सकें। वहां भी विलाइत का शिल्प अपना प्रकाश फैलाये हुये है और फैशन की छिलावट का प्रभाव प्रगट हो रहा है। परम पवित्र स्थान देवमन्दिर

तथा धर्म कर्म एक भी न बच रहे जहां केवल स्वदेशी वस्तु का वर्ताव हो बरन विलाइत के महा म्लेच्छों के स्पर्श से दूषित वस्तुओं से वह स्थान दगीला न किया गया हो। विदेशी वस्तु के परतंत्र हो जाने की परा काष्ठा है कि ब्राह्मण लोगों का यज्ञोपवीत जो पवित्रता का ओर छोर है वह भी अब विलाइती सूत का बनाया जाता है हिन्दू के हाथ का काता सूत अब कहीं मयस्सर नहीं है पद्धुतियों में जिसका बनाना केवल ब्राह्मणी के हाथ के काते सूत का लिखा है।

तैमूर नादिर चंगेज़ महमूद गज़नवी आदि हमला करने वाले समय २ देश को आक्रमण कर इस कदर नहीं लूटा था जैसा विलाइत की बनी चीज़ों से हमारा धन लुटा जाता है। ये नादिर आदि लुटेरे आये एक बार लूट पाट चले गये दो चार वर्ष उन के लूट का असर रहा थोड़े ही दिन बाद देश फिर अपनी पहिले की सी संपन्न दशा में आ गया। फेशन परस्ती के जाल में फंस हम सबों को विलाइत की नफासत और चटकीला पन ने ऐसा मोहित कर रक्खा है कि हमारा क्या और क्यों सत्यानाश हो गया कभी एक बार भी हम लोगों ने न सोचा बंग विभाग की शुभ घड़ी न आती तो काहे को कभी चेतते।

"दो चण्डड़ों की बात चीत"।

किच्चू चौबे-(लंबी २ मूछों पर ताव देकर) मुन्शी! जी जैदाऊ जी की यमुना मइया सदा जै रक्खें, कहो आज उदास कैसे बैठे हो?

मुंशी कमला प्रसाद-कुछ नहीं आओ चौबे जी, कहो आज कहां चले, आज तो बड़े खुश दिखाई पड़ते हो कहीं न्योंते में जाते हो क्या?

कि०-हम तो तुम्हारेई घर नेवते जेमने की आशा में आये हैं। हमने आज घाट पर यह खबर उड़ती भई सुनी कि थोड़े दिन बींते तुम्हारी नानी मरगई। सो या बात कूं ठीक करवेके ताईं आये हैं,

सो तुम्हारी चेष्टा और मूछ मुड़ी देख कें निश्चय होगयो कि वो बात ठीक है।

क०—नहीं नहीं यह बात बिलकुल ग़लत है। हमारे दुश्मनों ने यह खबर उड़ाई होगी। इधर कई दिन से कुछ तबियत ढीली थी मकान से हवा खाने तक के वास्ते नहीं निकला। इसी सबब से चेहरा कुछ उतरा हुआ है। और कुछ नहीं।

कि०-(मुसकरा कर) क्यों उस्ताद, "गुरुन से गुरुआई" हम से अब क्यों छिपाते हो, तुम जानते होगे कि हमें कछु ख़बर नहीं मिली, तुम तो हमारे जिजमान सूं हमारी बड़ी बड़ी बुराई कीनी और उलटी सीधी समझाय के अपनी बात बनानी चाही। पर याद रक्खो "जो काऊ के तांई कूआ खोदे है वाके लिये खांई पहले बनजाय है" क्यों है पते की कि नांय।

क०—(शरमा कर) चोबे जी! आज बूटी ज्याद: छनगई हो तो कुछ देर आराम कर लो जब जी सावधान हो जाय तब बातें करना।

कि०-हमारो जी तो श्री दाऊ जी की कृपा सूं हमेसा सावधान रहे है पर तुम्हे जो छै सात वर्ष से अक्कल को अजीर्ण हू रह्यो है सो याको कछू यत्न करौ नाय तो अब ज़ान जायवे को डर है।

क०—यह आप क्या बक रहे हैं; उजड्डई से आप बाज़ नहीं आते।

कि०—बाज तुम और तुम्हारे घर के, हम तौ आदमी हैं. सीधे से बोलनो होय तो बोलो हम तुम से कछु कम नाय हैं, जैसी इज्ज़त तुम्हारी वैसी हमारी, धन दौलत तुम ने अपनी लुगाई की बदोलत पायो, हमारो बाप छोड़ गयो। तुम्हारी और हमारी दोनों की जीविका एकई घर सूं चले हैं, फिर तुम जबानी जमा खर्च से झूठी सांची कह के अपने मालिक कूं खुश करते हौ, हम अपनी जान हथेरी पर धरे जहां वाको पसीना गिरे वहां अपनो खून गिरायवे कूं तइ-

यार हैं तुम कहो कछु और करो कछु, हम मर्द की जबान एक समझे हैं तुम अपनी ऐंठ में आय जिसकूं जो चाहें सो भला बुरा कह डालते हौ, सच्चे से सच्चे आदमियों कूं अपनी अकल के घमंड में झूठो दगाबाज़ फरेबी साबित कर डालो हौ और अपने ऐब कूं नेक भी नांय देखो हो; हमें उन बिचारेन पे दया आवे है तुम अपनी कलम दवात के ज़ोर में चूर हौ हम अपनी कूंडी सोटा पै पूरे बीर हैं। हां एक बात में हम तुम सूं जरूर कम हैं तुमारी लुगाई की बड़ाई देस देसान्तर में फैली है हमें लुगाइन सूं ऐसी घिन है कि व्याह तांई नाय कियो।

कि०-चौबे जी आज आप बड़ी बुजुर्गाना बातें करते हैं आप का हौसिला बहुत बढ़ा दिखाई पड़ता है, आज तक आप ने कभी मेरे साथ इस तरीके की बात चीत नहीं की थी, आप की बातों से तो कुछ और ही ज़ाहिर होता है।

कि०-सुनो मुन्सी। जब से तुम कूं हमारे भोले भाले जिजमान ने अपने इलाके को मुख़्त्यार कियो तब सूं तुम ने सिवाय खर्चा बढ़ायवे के कोन सो अच्छो काम कियो? तुमारे इन्तज़ाम सूं जमीदारन ने टाट उलट कर सब छोड़ छांड़ दियो। खेती करने वाले भूखे मरने लगे पटवारी अपने अलग सिर पटके डारे हैं पर तुम, जब कैफियत लिखवे बैठे हो तो झूठ मूठ यही लिखते हो कि हमारे गांव की प्रजा बड़े आनन्द सूं हैं और जो काऊ ने गलती निकासी तो वाय काऊ हेर फेर सूं जहन्नुम मिलवाय दियो। सब छोटे बड़े तुमारे मारे दुःखी हैं। फिर दुधार गाय की द्वै लातऊ सही जाय हैं सो तुम ने सबन कूं इतनो फजीहत कियो उनसूं मनमानतो रुपया भी लियो और ताऊ पर भी उनको पीठ पीछे गाली दिया। जो कभी वे बेचारे अपने रिस्तेदार या कुटुम्बी की शिफारस करवे गये तो उन्हें फाटक बाहर सूं फटकार बताई और अपनी

बिरादरी के लोगन कूं दीवान, मुसद्दी, भंडारी, मुंशी, बनाय दियो। धन्य हो? लोगन को जैसे तुमने सुख दियो और आत्मा ठंडी कीनो वेतोई दाऊ बाबा तुमारी करै।

क०--खैर लोगों के साथ हमने जैसा किया उस से आप को क्या ग़रज़ ज़मीदार वगैरः भूखे मरे इसमें हमारा क्या नुकसान या मालिक को क्या घाटा, इसकी हम कुछ परवाह नहीं करते भलाई बुराई जो हमारी तक़दीर में थी मिली। बहुत सी तदबीरें जो हमने लोगों की बेहतरी के लिये की उलटी पड़ीं या उनसे लोगों को नुकसान हुआ तो हम क्या करैं उन्हीं की बद नसीबी। एक बड़ा जलसा कर डाला या यों कहिये कि वग़ैर दूलह के बरात निकाली जिसमें लाखों रुपये की आतश बाज़ी फूंक दी अपने इलाक़े के एक कोने से दूसरे कोने तक के सब बड़े आदमियों को बुलाया और बड़ी धूम धाम की तो इस में हमारा या हमारे मालिक का नुकसान ही क्या हुआ। बेवकूफ़ बने वही जो करज़ा कर के तमाशे में शामिल हुये। आप खूब जानिये कि इसमें भी मैंने बहुत बड़ी चाल खेली थी और जो जो मैं जानना चाहता था जान गया। ऐसी बातें आप की ऐसी मोटी अक़ल के आदमियों की समझ में इसकी वारीकियां नहीं आसकतीं। और मैं इन सब बातों का ज़िक्र करना भी उसूल के खिलाफ़ समझताहूं। खैर जाने दो। मगर यह बतलाओ कि तुम अपनेही हो कर क्यों बिगड़ गये।

कि०--याही पै कि तुमने अपनी अक़्ल के जोम में आके मेरी बातन की और को तौर झूठो सांचो मतलब समझ लियो और वाय अपनेई तक नांय मालिक तांईं भेज दियो। पर याद राखो हम भी तुमारे गुरु। चौबे जी - ठहरे। हमने भी एक दांव आजई के लियें बचाय राखो हो जासूं तुमैं चारो खाने चित्त पछाड़ दियो।

क०- हां में ख़ूब जानता हूं कि आपने वाला वाला कारवाई मेरे ख़िलाफ़ खास मालिक से की थी। मगर आप खूब समझिये कि मैंने आप की बातों से वही मतलब निकाला जो आप की मंशा थी अब आप किसी के बहकाये में आगये हो यह दूसरी बात है। खैर जब मेरी बात का कुछ ख़्याल नहीं हुआ तो मैं भी ऐसी नोकरी में दो लात मार कर अपने वतन को चल देता हूं मैंने जो मालिक के वास्ते भलाइयां की वह उनका जी जानता होगा। मगर मेरी बात का कुछ ख़्याल न हुआ इस से मुझे ऐसा रंज है जैसा कि उस शख़्श को होता है जिसके सब घर के प्लेग के सुपुर्द हो जायें। मेरा दिल हरदम घबड़ाया करता है खाना पीना सोना नाचना गाना यहां तक कि बीबी से बोलना तक हराम मालूम होता है। क्या करूं अब मैं सोचता हूं कि मैंने नाहक ऐसी भारी नौकरी ज़रा सी बात पर छोड़ दी। हाय! मैं तो इस इलाक़े का सोलह आने मालिक था। सच है "खुद कर्दरा चे "इलाज"।

कि०-(हंस कर) "सदा न काहू की रही सदा न बाज़ी बंब," मुन्सी जी! "अब पछताये का होयगो जब चिड़िया चुग गई खेत" हमने झूठीं साची काररवाई कछू नांय कीनी मालिक तो तुम सूं या बात पै खफा भयो कि एक तो तुमने वाके गाम के कई हिस्सा कर डारे जा सूं विशेष फायदा नाय दीखे है दूसरे तुमने हमारी बात का खयाल न कियो। हमकूं जो न्योतो देदेते तो सब बात ठीक होय जाती। तुम जानो नाय के "अग्रे अग्रे विप्राणाम्"।

क०—अजी क्या कहैं अब तो जो होना था सो हो चुका आप हमारे ज़ख्मी को हरा न कीजिये हमने जो कुछ किया बुरा किया। अब हम पर मेहरवानी कर आप अपने डेरे पर तशरीफ़ लेजायें हमारे सर में दर्द होने लगा बुखार सा आया चाहता है।

कि० बढ़ती होय; दिन दूनो रात चोगुनो होय ले अब हम जाते हैं।

फ०-- बहुत अच्छा ! आखिरी सलाम.

— कूल —

नाम में नई कल्पना।

गाज़ीदीन, मथुरियादीन, गंगादीन, दुर्गादीन, सीतलादीन, मातादीन, भगवानदीन आदि दीन वाले नामों की हीन दशा पर हमें भी एक नई कल्पना सूझती है अकिल अजीरन|दीन। नाम कैसे होने चाहिये सो पहिले कहीं पर हम लिख चुके हैं आज इस विषय को प्रसंग प्राप्त देख पिष्ट पेषण की भांत फिर इसपर कुछ कहा चाहते हैं। नाम करण भी देश या जाति के तरक्की की कसौटी है जिस जाति में तरक्की रहती है उस जाति में नाम भी उतनाही शिष्ट संप्रदाय के रक्खे जाते हैं। हम लोग जैसा और बातों में पीछे हटे हैं वैसाही नाम धराने में भी। नाम के सुनते ही किसी घराने या जाति के बुद्धि वैभव की पूरी परख हो जाती है। वंग देशी भारत के और २ प्रान्त वालों की अपेक्षा कहां तक आगे बढ़े हैं और कितना अधिक बुद्धि का विस्तार इनमे है यह उन के करण रसायन कोमल पदावली संपुटित नामों ही से सूचित होता है। वही हम लोग कहां तक बुद्धि विस्तार में दरिद्र हो रहे हैं यह हम लोगों के छुन्ना मुन्ना कल्लू गुदड़ू चिथरू आदि नामों से प्रगट है वरन इसी बुद्धि की दरिद्रता ने हम लोगों में एक खयाल पैदा कर रक्खा है कि घिनौना नाम रखने से बालक चिरजीवी होता है। इसी बुनियाद पर ननकू, मनकू, नरकू, घसिटू; मुनमुन, चुल-बुल, फटल्लू, सटल्लू, भोंपत, भोंदू, सोंदू, तिनकौड़ी, दमड़ी; छदमी आदि अनर्गल करणकटु घिनौने नाम रख दिये जाते हैं। किससे कहैं अकिल का अजीरन और समझदारी का जौहर तो है। इसी जौहर ने

नाम ही की क्या हमारी न जानिये कितनी बातों को अपनी मूठी में कर रक्खा है। जैसा स्त्रियां पढ़ाने लिखाने से फूलती फलती नहीं। मकान तंग और वायु संचार वंचित हो तो उसमें रहने वाले सदा आसूदा और प्रसन्न रह फूलते फलते हैं। ऐसी ही समझ ने प्लेग को देश में टिक जाने के लिये सहायता दी है। गन्दे और तंग मकान में कबूतरों की ढाबली की भांति सिकुड़ सिकुड़ाय के रहेंगे पीले आम से ज़र्द पड़ गये बला से फूलते फलते तो जांयगे। किस से कहैं इन गर्दखोरों के फूलने फलने से क्या फाइदा। माड़वारी और दिल्ली आगरा के खत्रियों के नाम में बहुधा मल लगा रहता है जिनके नाम में मल है तो उनके काम में कहां तक मल न होगा। संपूर्ण अभिधानावली बड़ी २ लग़त और डिक्शनरियों को छान डालो गट्टूमल मिट्ठूमल कहीं न पाओगे। कोई २ जिन्में तरहदारी की बू आगई है अपने लड़कों का नाम क़ाफियाबन्दी के साथ रखते हैं जैसा छुन्नू मुन्नू साधो माधो सोहन मोहन रतन जतन सद्दू मद्दू सोंधू भोंधू और लड़कियों का रम्मो सम्मो छुन्नो मुन्नो दुल्लो मुल्लो इत्यादि। पुराने ढर्रे को छोड़ कोई बात निकालना हम ने सीखा ही नहीं तब नाम करण में नया ढर्रा कहां से लावें। चरनदास रामदास गनेस दास आदि बहुधा एकही नाम के एक मुहल्ले में बीसों पाये जाते हैं। न जानिये क्यों हमको इन नामों पर औकल्लाई आती है। उसमें भी कुछ फर्क़ नहीं नीच जाति तेली भुंजवा जो नाम रक्खेंगे वही ऊंच जाति वाले ब्राह्मण क्षत्री भी। पुरुषों के नाम में महादेव नारायण राम और स्त्रियों में गंगा यमुना पार्वती लछमी तुलसा छोटे से छोटे शहर में एक २ नाम के हज़ारों पाये जाते हैं। वही बंग देशियों में स्त्रियों के नाम कैसे सरस और मनोज्ञ रक्खे जाते हैं जैसा कामिनी, निस्तारिणी विश्वविमोहनी, कादम्बिनी, मृड़ालिनी, सरोजनी, कुमुदनी, नलिनी क्षीरोदवासिनी, सुकेशी उर्वशी शशिमुखी स्वर्णमयी इत्यादि—हम लोगों में जुग्गो

पग्गो, भग्गो, बतस्सो इत्यादि। फिर गृहिस्थिन कुलवन्ती और वेश्याओं के नाम में कोई अन्तर नहीं रहता बनारस में जानकी सरस्वती लक्ष्मी कमला आदि नाम वेश्याओं के हैं। मुसल्मानों को हम अपने से हेठा समझते हैं पर नाम धराने वे हम से कितना अच्छे हैं। फातिमा आहिशा जैनब मरियम आदि देवियों के नाम वेश्याओं के न पाओगे। बंग देशियों की भांत चन्द्रभागा,; विलासिनी, कामिनी, मोहनी उन्मादिनी, स्वर्णलता, मालती, कामधुरा, वसन्तसेना, पिकबैनी, मेनका, तिलोत्तमा आदि रक्खे जांय तो कौन सी हानि पर गृहस्थ और भले मानुषों को जब इसका ख़याल नहीं तो वेश्याओं को क्यों हो। कितने मुखन्नस नाम न जानिये किस उसूल पर रक्खे जाते हैं न नर न मादा जैसा राधाकृष्ण, सीताराम, गौरीशंकर इत्यादि। इस तरह के नाम वालों को क्या समझें स्त्री या पुरुष दोनों एक साथ हो नहीं सक्ते। कितने अपने नाम से आधे हिन्दू हैं आधे मुसल्मान जैसा राम गुलाम रामबक़स कुंवरबहादुर कितने जन्मे तो हिन्दू के घर पर नाम से मुसलमान ही रहे। जैसा राय बहादुर अमीर बहादुर नवाब बहारदु बख़्त बहादुर हमारे कायस्थ महाशयों में इस तरह के यवन सम्पर्क दूषित नाम बहुत मिलते हैं। भक्ति की भावना ने भी हम लोगों के नामों की खूबही ख़ाक उड़ाई अपने इष्ट देव के नाम के अन्त में दीन या दास का पद लगा दिया जाता है न जानिये किस जून कैसी सरस्वती मुख से निकल पड़ती है कहते २ अन्त में दीन और दास हो ही तो गये। काम में दास तो नाम में क्यों न हों। महेन्द्र, उपेन्द्र, सुरेन्द्र, ब्रजेन्द्र, नरेन्द्र, आदि प्रभुता शाली नाम क्यों रखाये जांय दासत्व तो नस २ में समाना है। मनु ने दासान्त नाम शूद्र और हीन जाति के लिये कहा है चारुदत्त, विष्णु मित्र, भूरिश्रवा, यज्ञदत्त, सुमति, सत्यसेन, कामपाल, नाम तो अब सपने के ख़याल हो गये अब तो "धोबी के घर धरमदास हैं बाम्हन पूत मदारी"। हमारी पुरानी भली बात सबी लुप्त हो गई तब नाम ही की क्या। बहुधा ये दास और दीन नाम वाले नाक फुलाय २ कहीं नख से सिख तक भर में

जिस्में हिन्दुस्तानी होनें की बासना भी न पाई जाय इंगलीसाइज़्ड हो सभ्यता के सिर मौर बनते हैं पर उनके नाम से प्रगट हो जाता है कि जिस कुल को उन्हों ने अपने जन्म ग्रहण से कदर्य कर डाला उस घराने में सभ्यता का कहां तक प्रकाश था सच है "मूर्खपुत्रस्तु पण्डितः तृणवन्मन्यते जगत्" इत्यादि नाम के सम्बन्ध में बड़े से बड़ा आल्हा गाने पर भी न चुकेगा।

कविता

भवभूति और कालिदास।

"श्री राघवेन्द्र" की १२ वीं संख्या में "कवि मुकुटमणि–कालिदास" शीर्षक एक लेख छपा है। उसको देख कर मन को कई जगह चक्कर लगाना पड़ा। उसमें भवभूति, दण्डी और कालिदास की कवित्व शक्ति का एक२ नमूना देकर दण्डी को महा कवि का आसन प्रदान किया गया है और लेख का विषय है। कवि मुकुटमणि–कालिदास, इस से लेख का उद्देश्य कहां तक सिद्ध हुआ है मेरी मोटी समझ में नहीं आया। यह यदि सिद्ध न हुआ तो न सही पर यह बात तो स्वतः सिद्ध हो रही है कि ये तीनों कवि समकालीन अर्थात् एक ही समय में हुए हैं। जो हो, मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि दण्डी में कवि प्रतिभा कुछ नहीं थी। दण्डी अपने ढंग के एक अच्छे कवि होगये हैं। "दण्डिनः पदलालित्यं" जग प्रसिद्ध है। भवभूति भी कुछ कम आदरणीय नहीं हैं इनके विषय में किसी ने कहा है।

"सुकवि द्वितयं मन्ये निखिलेऽपि महीतले।
भवभूति शुकश्चाथं बाल्मीकिस्तु तृतीयकः॥

करुणा रस का रूप खड़ा करने में यही एक समर्थ थे। फिर, कालिदास के विषय में कहते हैं।

"पुरा कवीनां गणना प्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासाः। अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनानामिका सार्थवती बभूव"॥

अब कहिये, किस को छोटा कहैं और किस को बड़ा तात्पर्य यह कि सभी अपने २ ढंग में श्रेष्ठ हैं। हां प्रसंगानुरोध से यदि हम किसी को उत्कृष्टतर कह दें तो वह दूसरी बात है नहीं तो जो कवि हैं उनकी मौलिक विशेषता एक ही स्रोत से आवहमान होती है। नैसर्गिक प्रतिभा की कारीगरी और भाव वैचित्र्य के अंकन करने मे सब एक समान हैं। प्राचुर्य Luxury के पीछे आतिशय्य वा अत्युक्ति का झड़ बांधना विशद कल्पना का कारण नहीं कहा जायगा। सम्भव हो सक्ता है कि जो कालिदास की साकूत रस और प्रसाद गुणवाली कविता का रसिक है उसे मिसरी की डली के समान भारवि की गूढ़ कविता न भावै। इसी प्रकार जो दण्डी की ललित पदावली और अनुपम कविता चातुरी पर मोहित है उसे भवभूति की सरस्वती में क्षोभ पैदा करने वाली वा फीकी बात कोई दृष्टिगोचर हो तो आश्चर्य नहीं है? रुचि विभिन्नता से जो कविता सब के कंठ देश में बिराजने के योग्य है वह घृणित हो अलग फेंक दी जा सक्ती और जो सर्वथा फेंकने के लायक है वह सर्वोपरि कह कर सब से समादरणीय हो सक्ती है। परन्तु जो कविता रुचि विभिन्नता को अतिक्रमण कर उच्च देश में भ्रमण करती है वही सब पर अपना प्रभाव डाल सक्ती है और वही लोकोत्तर कविता कही जाती है। हम कह सक्ते हैं कि ऐसी अलौकिकता सब के काव्य में है पर किसी में थोड़ी और किसी में अधिक। जिस काव्य में इसका परिमाण अल्प है वह न सदोष हो सक्ता है और न वह अधिक